जैन साहित्य संशोधक ग्रन्थमाला ७.

श्रीजिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण-विरचितं

जीतकल्प-सूत्रम्

(विषमपद्व्याख्यालंकृत–सिद्धसेनगणिसन्दृब्ध

बृहच्चूर्णिसमन्वितम्)

संपादक

मुनि जिन विजय

प्रकाशक

जैन साहित्य संशोधक समिति

अ म दा बा द

वीराब्द २४५३] [विक्रमाब्द १९८३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्गत मोदी श्रीयुत प्रेमचंद दोलतराम स्मारक–ग्रन्थांक १

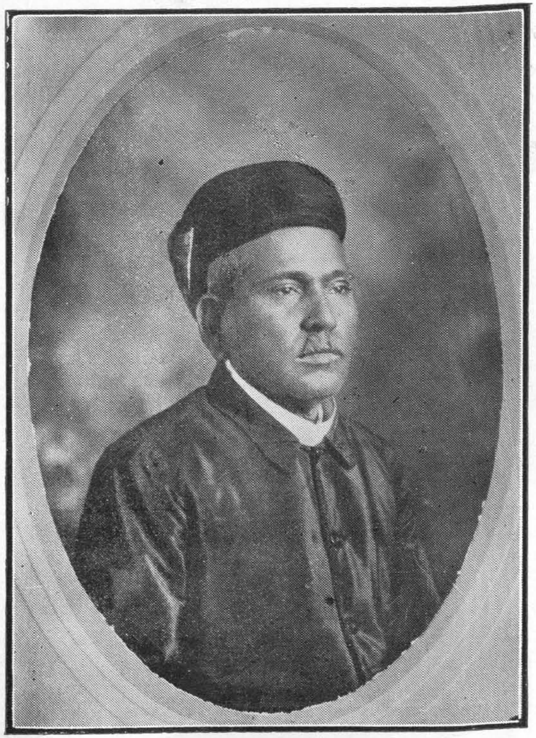

अमदाबाद निवासी सद्गत श्रावक श्रीयुत प्रेमचंद दोलतराम मोदीना पुण्यस्मरणार्थ, तेमना स्नेही रा. ब. श्रीगिरधरलाल उत्तमराम पारेख, बी. ए., एल्एल्. बी., (पब्लिकप्रोसीक्युटर–अमदाबाद) एमणे अर्पण करेला द्रव्यमांथी आ ग्रन्थ प्रकाशित करवामां आव्यो छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य
संशोधक ग्रन्थमाला

जीतकल्प-सूत्र

संपादक—
मुनि जिन विजय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्य जीतकल्पसूत्रस्य प्रथमप्रकाशनकर्तृभ्यः

जर्मनि-विषयवास्तव्य-अध्यापक

श्री अर्न्स्त लॉयमान्

(Ernst Leumann)

नामधेय-पण्डितप्रवरेभ्यः

समर्पितमिदं ग्रन्थरत्नम्

सम्पादकेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य संशोधक ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क ७.

श्रीजिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण-विरचितं

जीतकल्प-सूत्रम्

[श्रीचन्द्रसूरिसन्दब्ध-विषमपदव्याख्याविभूषित-
श्री सिद्धसेनगणिकृत-
बृहच्चूर्णिसमन्वितम्]

संशोधक तथा संपादक

मुनि जिन विजय

[आचार्य-गूजरात पुरातत्त्व मन्दिर-अमदाबाद]

प्रकाशक

जैन साहित्य संशोधक समिति

(अमदाबाद)

ख्रि० स० १९२६] [वि० सं० १९८२

[मूल्यं रूप्यक-त्रयम्]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press,
26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by—
Muni Jina Vijayaji,
(Jaina Sāhitya Sams'odhaka Samiti)
AHMEDABAD.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकीय प्रस्तावना

आधारभूत प्रतिओनो परिचय

जीतकल्पसूत्रनी प्रस्तुत आवृत्ति नीचे जणावेली हस्तलिखित प्रतिओना आधारे तैयार करवामां आवी छेः—

[१] जीतकल्पसूत्र मूलपाठ.

(A) ताडपत्र ऊपर लखेली बृहच्चूर्णिसाथेनी, पूनाना भांडारकर ओरिएन्टलरीसर्च इन्स्टीट्युटमांना राजकीय ग्रन्थ संग्रहनी ।

(B) कागळ ऊपर लखेली केवळ मूलमात्रनी ३ पानानी, गूजरातपुरातत्त्वमन्दिरमां (अमदाबाद) ना संग्रहनी ।

(C) तिलकाचार्यकृत वृत्तिसमेतनी श्रीयुत के. प्रे. मोदी मारफत आवेली ।

(D) जर्मन विद्वान् डॉ. अर्नेस्त लॉयमान संपादित अने Sitzungsberichte der Koniglich Preussischen Akademie der Wissenschaften, Berlin, 1892. मां रोमनाक्षरमां मुद्रित ।

[२] सिद्धसेनसूरिकृत बृहच्चूर्णि.

(A) पूनाना भांडारकर ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टीट्युटमांना संग्रहमांनी ताडपत्रनी नं. २३; १८८०–८१ वाळी प्रति । ए प्रतिने आ आवृत्तिमां पाठान्तर सूचववा माटे A संज्ञा आपवामां आवी छे । ए प्रतिमां लेखनकाल आपेलो नथी पण लीपिनी आकृति ऊपरथी ते विक्रमना १२ मां सैकामां लखाएली होय तेम लागे छे। प्रति बहु शुद्ध नथी। एमां मूळ सूत्र-पाठ पूर्ण आपेलो छे ।

(B) उक्त संग्रहमांनी ताडपत्रनी नं. २४ ; १८८०–८१ वाळी बीजी प्रति । ए प्रतिना पाठान्तर सूचववा माटे, एने अहिं B संज्ञा आपी छे । ए, प्रमाणमां कांईक वधारे शुद्ध छे। हांसियाओमां घणी जग्याए टूंकां टिप्पणो पण आपेलां छे। पण एनां अन्तनां केटलांक पांनां नष्ट थई गयां छे तेथी एनो पण लेखनकाल ज्ञात थई शक्यो नथी। वर्णाकृति ऊपरथी अनुमाने ए १३ मा सैकामां लखाएली होय तेम जणाय छे ।

[३] श्रीचंद्रसूरिरचित चूर्णिविषमपदव्याख्या.

(A) श्रीयुत के. प्रे. मोदी मारफत मळेली मुनिवर्य्य श्रीहंसविजयजीना शास्त्रसंग्रहमांनी कागळ ऊपर लखेली नवीन प्रति ।

(B) आचार्य श्रीविजयनेमी सूरिना संग्रहमांनी ए ज जातनी बीजी प्रति ।

आ बन्ने प्रतिओ कोई एक ज मूल प्रति ऊपरथी लखाएली नवीन नकलो छे । प्रतिओ सामान्यरीते बहु ज अशुद्धतावाळी छे । जूनी प्रतिनी लीपिना वळणने बराबर नहीं सम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जनार एवा कोई सीखाउ लहियाओना हाथे आ नकलो थई छे तेथी एमां, ए लहिया-ओए, एक अक्षरना बदले बीजो अक्षर लखी नांखी, ग्रन्थनी अशुद्धिमां घणो वधारो करी दीधो छे। उदाहरण तरीके–'ए' अक्षरनी जग्याए 'प'; 'थ' नी जग्याए 'घ'; 'द्र' ना बदले 'इ'; 'स्त' ना बदले 'सू'; 'भ' ना माटे 'त'; अने 'घ' ना माटे 'ब'; एम पंक्तिए पंक्तिए अनेक वर्णोनो विपर्यय करी दीधेलो नजरे पडे छे। आम, जूनी अने शुद्ध प्रतिनी प्राप्तिना अभावे ए व्याख्याना संशोधनमां घणी कठिनता अनुभववी पडी छे अने तेथी क्वचित्स्थळे तो अशुद्ध पाठने ज स्थानस्थित राखवो पड्यो छे।

जिनभद्रगणि–क्षमाश्रमण

आ जीतकल्पसूत्रना कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण छे, एम चूर्णिकारनो स्पष्ट उल्लेख छे; अने अन्यान्य टीकाकारोए तथा अन्य ग्रंथकारोए पण ए बाबतनो घणा ठेकाणे निर्देश करेलो छे।

आवश्यक सूत्रना सामायिकाध्ययन ऊपरनुं लगभग पांच हजार ग्रन्थप्रमाण प्राकृतगाथाबद्ध भाष्य के जे विशेषावश्यक भाष्यना नामे सुप्रसिद्ध छे तेना कर्ता पण आ ज जिनभद्र गणी छे। आ भाष्यग्रन्थ जैन प्रवचनमां एक मुकुटमणि समान लेखाय छे अने तेथी भाष्यकार जिनभद्र-गणी जैनशास्त्रकारोमां अग्रणी मनाय छे। जैन दर्शन प्रतिपादित ज्ञानविषयक विचारने केवळ श्रद्धागम्य–विषयनी कोटिमांथी बुद्धिगम्य–विषयनी कोटिमां उतारवानो सुसंगत प्रयत्न, सौथी प्रथम एमणे ज ए महाभाष्यमां कर्यो होय, एम जैन साहित्यना विकासक्रमनुं सिंहावलोकन करतां जणाई आवे छे। जैन आगमोना संप्रदायगत रहस्य अने अर्थना, पोताना समयमां अद्वितीय ज्ञाता तरीके, ए आचार्य सर्वसम्मत गणाता हता; अने तेथी एमने 'युगप्रधान' एवुं महत्त्वख्यापक उपपद मळेलुं हतुं। जीतकल्पचूर्णिना कर्ताए, प्रारंभमां, ५ थी ११ मा सुधीना पद्यमां आ आचार्यनी जे गंभीरार्थक स्तुति करेली छे ते ऊपरथी एमनी ज्ञानगंभीरता अने सांप्रदायिक प्रतिष्ठिततानुं कांईक सूचन थाय छे। आ पद्योनो भावार्थ आ प्रमाणे छेः—

५. अनुयोग एटले आगमोना अर्थ ज्ञानना धारक, युग-प्रधान, प्रधानज्ञानियोने बहुमत, सर्व श्रुति अने शास्त्रमां कुशल, अने दर्शन–ज्ञान उपयोगना मार्गस्थ एटले मार्गरक्षक।

६. कमलना सुवासने अधीन थएला भ्रमरो जेम कमलनी उपासना करे छे तेम ज्ञानरूप मकरन्दना पिपासु मुनियो जेमना मुखरूप निर्झरमांथी नीकळेला ज्ञानरूप अमृतनुं सदा सेवन करे छे।

७. स्व–समय अने पर–समयना आगम, लीपि, गणित, छन्द अने शब्दशास्त्रो ऊपर करेलां व्याख्यानोथी निर्मित थएलो जेमनो अनुपम यशःपटह दशे दिशाओमां भमी रहेलो छे।

८. जेमणे पोतानी अनुपम मतिना प्रभावे ज्ञान, ज्ञानी, हेतु, प्रमाण, अने गणधरपृच्छानुं सविशेष विवेचन विशेषावश्यकमां ग्रन्थनिबद्ध कर्युं छे।

९. जेमणे छेद सूत्रोना अर्थाधारे, पुरुष विशेषना पृथक्करण प्रमाणे, प्रायश्चित्तना विधिनुं विधान करनार जीतकल्पसूत्रनी रचना करी छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. एवा, परसमयना सिद्धान्तोमां निपुण, संयमशील श्रमणोना मार्गना अनुगामी, अने क्षमाश्रमणोमां निधानभूत जिनभद्र गणी क्षमाश्रमणने नमस्कार।

आमांना ५ मा पद्यना तात्पर्यार्थ ऊपरथी ए जणाय छे के—जिनभद्र गणी आगमोना अद्वितीय व्याख्याता हता; युगप्रधान पदना धारक हता; तत्कालीन प्रधान प्रधान श्रुतधरो पण एमने बहु मानता हता; श्रुति अने अन्य शास्त्रोना पण ए कुशल विद्वान् हता; अने जैन सिद्धांतोमां जे ज्ञान–दर्शनरूप उपयोगनो विचार करवामां आव्यो छे तेना ए समर्थक हता। ६ ठ्ठा पद्यना तात्पर्यथी ए जणाय छे के एमनी सेवामां घणा मुनियो ज्ञानाभ्यास करवा माटे सदा उपस्थित रहेता हता। ७ मा पद्यमां, जुदा जुदा दर्शनोनां शास्त्रो; तथा, लीपि विद्या, गणित शास्त्र, छन्द शास्त्र, अने शब्द (व्याकरण) शास्त्र आदिमां एमनुं अनुपम पांडित्य सूचित कर्युं छे। ८ मा पद्यमां विशेषावश्यकभाष्य; अने ९ मामां, जीतकल्पसूत्र विषयक एमनुं कर्तृत्व प्रकट कर्युं छे। १० मा पद्यमां, एमनी परसमयना आगम विषेनी निपुणता, स्वाचारपालननी प्रवणता, अने सर्व जैन श्रमणोमां रहेली मुख्यतानुं सूचन कर्युं छे।

आटला संक्षिप्त परिचय सिवाय अन्यत्र क्यांए पण ए महान् आचार्यनो कशो पण विशेष उल्लेख दृष्टिगोचर थतो नथी।

हरिभद्रसूरि, शीलांकाचार्य, जिनेश्वरसूरि, अभयदेवसूरि, हेमचंद्रसूरि, वादीदेवसूरि, मलयगिरि अने देवेन्द्रसूरि विगेरे पाछळना प्रसिद्ध ग्रन्थकारो अने टीकाकारोए एमनो नामनिर्देश पोतानी कृतिओमां अनेकशः करेलो छे। "**भाष्यसुधाम्भोधि; भाष्यपीयूषपाथोधि; भगवान् भाष्यकार; दुष्षमान्धकारनिमग्नजिनवचनप्रदीपप्रतिम; दलितकुवादिप्रवाद; प्रशस्तभाष्यसस्यकाश्यपीकल्प; त्रिभुवनजनप्रथितप्रवचनोपनिषद्वेदी; सन्देहसन्दोहशैलशृंगभंगदम्भोलि;**" इत्यादि प्रकारनां विशिष्ट विशेषणोपूर्वक एमनुं नामस्मरण करवामां आव्युं छे; अने ए रीते एमनी आप्ततानो गौरवपूर्वक स्वीकार करवामां आव्यो छे।

दरेक संप्रदायमां विद्वानोना बे प्रकार नजरे पडे छेः एक तो आगमप्रधान; अने बीजो तर्कप्रधान। आगमप्रधान पंडितो हमेशां पोताना परंपरागत आगमोने–सिद्धान्तोने शब्दशः पुष्टरीते पकडी रहेवाना स्वभाववाळा होय छे; त्यारे तर्कप्रधान विद्वानो आगमगत पदार्थव्यवस्थाने तर्कसंगत अने रहस्यानुकूल मानवानी वृत्तिवाळा होय छे। आथी केटलीक वखते आगमप्रधान अने तर्कप्रधान विचारकोनी संप्रदायगत तत्त्वविवेचननी पद्धतिमां विचारभेद पडे छे। ए विचारभेद जो उग्र प्रकारनो होय छे तो कालक्रमे संप्रदाय-भेदना अवतारमां अवसान पामे छे; अने सौम्य प्रकारनो होय छे तो ते मात्र मतभेदना रूपमां ज विरमी जाय छे। जैन संप्रदायना इतिहासनुं अवलोकन करतां तेमां आवा अनेक विचारभेदो, मतभेदो अने संप्रदायभेदो अने तेनां मूलभूत उक्त प्रकारनां कारणो बुद्धि आगळ स्पष्ट तरी आवे छे। ए विचारना एक उदाहरणभूत जिनभद्र गणी क्षमाश्रमण पण छे; अने तेथी जैन प्रवचनना इतिहासमां एमने घणी प्रसिद्धि प्राप्त थई छे। जिनभद्रगणी आगम-प्रधान आचार्य छे। जैन आगमाम्नाय जे परंपराथी चाल्यो आवतो हतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेने शब्दशः अनुसरी ते ऊपर संगतवार भाष्य रचवानुं प्रधान कार्य एमणे कर्युं हतुं। ए भाष्यमां आम्नायथी विरुद्ध जनारा दरेक पक्ष ऊपर एमणे यथेष्ट आक्षेप-प्रतिक्षेप कर्या छे अने स्वसंप्रदायनुं समर्थन कर्युं छे। ए पोताना समर्थनमां तर्कनो उपयोग करे छे पण ते तर्क आम्नायानुकूल होय तो ज तेने महत्त्व आपे छे। आम्नायथी आगळ जनार तर्कने ए उपेक्षणीय गणे छे।

उदाहरण तरीके एक प्रसंग लईए—सिद्धसेन दिवाकर जिनभद्रना पुरोगामी आचार्य छे। जैनवाङ्मयमां अने इतिहासमां तेमनुं स्थान घणुं ऊंचुं छे। जैनधर्मना जे महान् समर्थक अने प्रभावक आचार्यो थई गया छे तेमां सिद्धसेनसूरि घणा आगळ पडता छे। सम्मतितर्क, न्यायावतार, महावीरस्तुति विगेरे मौलिक–सिद्धान्त–प्रतिपादक अने प्रौढविचार–पूर्ण एमना ग्रन्थो छे। जैन तर्कशास्त्रना ए व्यवस्थापक अने विवेचक छे। एथी ए तर्कप्रधान आचार्य मनाय छे। जैनदर्शनना ए एक अनन्य आधारभूत आप्त पुरुष छे। एमना पाछळना सर्व समर्थ आचार्यो ए एमने आप्तरूपे स्वीकार्या छे। ए आचार्ये पोताना सम्मतितर्क नामना तात्त्विकग्रन्थमां, केवलज्ञान अने केवलदर्शनना स्वरूपनो विचार करतां, ए सिद्धांत प्रतिपादित कर्यो छे के केवलज्ञानीने ज्ञान अने दर्शन बन्ने युगपत् ज होई शके छे; अने तेथी यथार्थमां बन्ने एक स्वरूप ज छे। आगमोमां जे **"जुगवं दो णत्थि उवओगा"** ए विचार प्रतिपादेलो छे तेनाथी सिद्धसेननो सिद्धान्त जराक विरुद्ध देखाय छे। एटले आगमवादी जिनभद्र गणी क्षमाश्रमणे पोताना भाष्यमां सिद्धसेनना विचारनो विगतवार प्रतिक्षेप कर्यो छे अने तात्पर्यमां जणाव्युं छे के तर्कथी गमे ते विचार सिद्ध थतो होय पण आगमथी बहार जता तर्कनो स्वीकार न करी शकाय। आगममां क्यांए पण युगपदुपयोगनुं सूचन नथी अने तेथी ए विचार अग्राह्य छे। आ विषयनो उपसंहार करतां जिनभद्र गणी क्षमाश्रमण जणावे छे के—

कस्स व नाणुमयमिणं जिणस्स जइ हुज्ज दोवि उवओगा।
नूणं न हुंति जुवगं जओ निसिद्धा सुए बहुसो॥
न वि अभिनिवेसबुद्धी अम्हं एगंतरोवओगम्मि।
तह वि भणिमो न तीरइ जं जिणमयमन्नहा काउं॥

(विशेषावश्यकभाष्य, पृष्ठ १२१३)

अर्थात्–जो जिनने–केवलीने युगपद् बन्ने उपयोग होत तो ते कोईने अनभिमत न थात। पण ते छे ज नहीं; कारण के सूत्रमां तेनो घणी जग्याए निषेध करवामां आवेलो छे। तेम ज क्रमोपयोगमां–एक पछी एक थनार ज्ञानमां—अमारी कांई अभिनिवेशबुद्धी नथी। पण तथापि कहीए छीए के जिनना मतने अर्थात् आगमनी परंपराने अन्यथा न ज करी शकाय।

आम जिनभद्रगणी आगमपरंपराना महान् संरक्षक हता अने तेथी तेओ आगमवादी के सिद्धान्तवादी ना बिरुदथी जैन वाङ्मयमां ओळखाय छे।

जिनभद्रगणीनी ग्रन्थकृतिओ

जिनभद्रगणीना बनावेला ग्रन्थोनी चोक्कस माहिती कांई मळती नथी। सामान्य रीते नीचे जणावेला पांच ग्रन्थो तेमनी कृति तरीके सुप्रसिद्ध छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. **विशेषावश्यक भाष्य मूळ अने टीका.** आ भाष्य बहु प्रसिद्ध अने प्रकाशित छे। आना ऊपर ग्रन्थकारे पोते ज एक संस्कृत टीका लखी हती पण ते अत्यारे दुर्लभ छे।

बीजी टीका शीलांकाचार्य जेमनुं बीजुं नाम कोट्याचार्य पण प्रसिद्ध छे तेमणे लखी छे। ए टीकानी ताडपत्र ऊपर लखेली एक अतिजीर्ण प्रति पूनाना राजकीय ग्रन्थसंग्रहमां सुरक्षित छे।

त्रीजी टीका मलधारी हेमचंद्रसूरिनी बनावेली छे अने ते प्रकट थई गई छे।

२. **बृहत्संग्रहणी.** आ लगभग ४०० थी ५०० गाथानो ग्रन्थ छे। एना ऊपर मलयगिरि सूरिए संस्कृत टीका लखी छे। ग्रन्थ सटीक प्रसिद्ध थई चुक्यो छे।

३. **बृहत्क्षेत्रसमास.** आ पण प्राकृत गाथाबद्ध ग्रन्थ छे। आना ऊपर पण मलयगिरि विगेरे आचार्योए टीकाओ लखी छे। ग्रन्थ प्रसिद्ध छे।

४. **विशेषणवती.** लगभग ४०० गाथाओनो बनेलो आ एक प्रकरण ग्रन्थ छे, अने अद्यापि अप्रकाशित छे।

५. **जीतकल्पसूत्र.** प्रस्तुत ग्रन्थ। आ सिवाय **ध्यानशतक** नामनो एक ग्रन्थ जे हरिभद्रसूरिनी आवश्यक टीकामां समुद्धृत छे तेना कर्ता पण जिनभद्रगणी कहेवाय छे पण ते सन्दिग्ध छे।

जिनभद्रगणीनी भाष्यकार तरीकेनी बहु ख्याति छे। तेमां मुख्यतया तो विशेषावश्यक भाष्य ने लईने ज ए प्रसिद्धि प्राप्त थई होय तेम जणाय छे। कारण के ज्यां ज्यां भाष्यकारना नामे एमनो उल्लेख आवे छे त्यां त्यां घणा भागे विशेषावश्यकना अवतरणो टांकवामां आव्यां होय छे। पण, ए भाष्य सिवाय बीजां पण कोई भाष्यो एमणे रच्यां होय तो ते संभवित छे। एनुं कांईक अस्पष्ट सूचन, कोट्याचार्यनी विशेषावश्यकभाष्यटीकामांना एक उल्लेखथी थाय छेः **'पोग्गल-मोयगदन्ते'** ए पदथी शुरुथती विशेषावश्यकभाष्यनी २३४* मी गाथामां जे दृष्टान्तो सूचव्या छे तेमनुं विवरण आ भाष्यमां करवामां आव्युं नथी। पण निशीथसूत्रना भाष्यनी पीठिकामां आ गाथा अने एमां सूचवेलां दृष्टान्तोनुं विवरण विगतपूर्वक आपेलुं छे। एटलामाटे कोट्याचार्य पोतानी टीकामां आ दृष्टांत-सूचक गाथानी व्याख्या करतां विवरणमाटे लखे छे के—**'निशीथे वक्ष्यामः'**—निशीथमां आ विवरण करीशुं।' आ वाक्य कोट्याचार्यनुं होय एम तो संभवे ज नहीं। कारण के निशीथभाष्य कोट्याचार्यकृत छे एवी प्रसिद्धि के परंपरा बिल्कुल संभळाती नथी। तेथी आ वाक्य जिनभद्रगणीनी स्वोपज्ञटीकामांनुं होवुं जोइए। अने जो तेम होय तो ग्रन्थकारे आ गाथानुं विवरण निशीथ भाष्यमां कर्युं होय एटले विशेषावश्यकभाष्यमां पुनः ते करवानी आवश्यकता नहीं रहेवाथी अहिं मात्र तेनुं सूचन ज करी दीधुं होय। विशेषावश्यकटीकाकार हेमचंद्रसूरि पण आ गाथानी व्याख्यामां अंते एम लखे छे के—**'एतान्युदाहरणानि विशेषतो निशीथादवसेयानि।'** मारी पासे केटलांक प्रकीर्ण पानाओनो एक संग्रह छे तेमां भाष्यो अने चूर्णिओमांनी केटलीक नोंधो कोई विद्वाने करेली छे।

* काशीथी प्रकट थएल आवृत्तिमां आ गाथानो क्रमांक २३५ छे, पण पूनानी कोट्याचार्यवाळी टीकानी प्रतिमां ए अंक २३४ छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए संग्रह आसरे ३०० करतां वधारे वर्षनो जूनो लखेलो छे। एमां एक ठेकाणे निशीथभाष्यनी ३ गाथा लखेली छे, अने ते पछी "इति जिनभद्रक्षमाश्रमणकृतनिशीथभाष्यस्याष्टमोद्देशके" आवी स्पष्ट नोंध करी छे। अभ्यासिओए आ बाबतमां विशेष शोध करवानी आवश्यकता छे।*

जिनभद्रगणीनो समय

जिनभद्र गणीना गण–गच्छादिनो के गुरु–शिष्यादिनो कोई उल्लेख जोवामां आवतो नथी। सोळमा सैका पछी लखाएली पट्टावलिओमां तेमना समयनो निर्देश थएलो जोवामां आवे छे अने ते प्रमाणे महावीर निर्वाण पछी सं० १११५ मां तेमनो स्वर्गवास थयो मानवामां आवे छे। वीरनिर्वाण १११५ ते विक्रम संवत् ६४५ बराबर थाय छे। पट्टावलिओमां उल्लेखेलो आ समय केटलो असन्दिग्ध छे ते जाणवानां विशेष प्रमाणो अद्यापि दृष्टिगोचर थयां नथी। तपागच्छ, अंचलगच्छ, उपकेशगच्छ, लघुपोशालिक, बृहत्पोशालिक, आदि गच्छोनी जे आधुनिक पट्टावलिओ उपलब्ध छे तेमनी मुख्य परंपरामां तो जिनभद्रनो कोई निर्देश नथी। पण खरतर गच्छीय पट्टावलिओमां कोक ठेकाणे मूल पट्टपरंपरामां जिनभद्रने दाखल करी दीधेला जोवामां आवे छे खरा। पण तेमां परस्पर घणो ज विरोध नजरे पडे छे। उदाहरण तरीके, मारी पासे जे केटलांक आवां पट्टावलिनां पानाओ छे तेमांथी एकमां जिनभद्रने महावीरथी ३५ मी पाटे लख्या छे; बीजा पानामां ३८ मी पाटे लख्या छे; त्यारे वळी त्रीजा पानामां २७ मी पाटे लख्या छे। केटलांक पानाओमां जिनभद्रनी पाटे हरिभद्रने बेसार्या छे, तो केटलांकमां जिनभद्रनी पाटे शीलांकाचार्यने बेसार्या छे। एक पट्टावलिमां हरिभद्रने महावीर निर्वाण पछी ५८५ वर्षे अने जिनभद्रने ९८० वर्षे थएला जणाव्या छे। आम पट्टावलिओनी विगतो बहु ज असंबद्ध होवाथी तेमांना कोई पण कथनने अन्यान्य पुरावाओना आधारे निर्णीत कर्या सिवाय सत्य मानी शकाय तेम नथी ए स्पष्ट ज छे।

धर्मसागर गणीकृत तपागच्छ पट्टावलि के जे केटलाक ऐतिहासिक ऊहापोह पछी लखवामां आवी छे अने जेनुं संशोधन पण केटलाक विद्वानोनी बनेली खास समितिए कर्युं छे, तेना उल्लेख प्रमाणे जिनभद्र गणी, हरिभद्र पछी ६०–६५ वर्षे थया हता। पण आ उल्लेख पण एटलो ज भूलभरेलो छे। कारण के प्रथम तो हरिभद्रनो स्वर्ग समय जे ए पट्टावलिमां वीरसंवत् १०५५, विक्रम संवत् ५८५ आप्यो छे ते ज बराबर नथी, ए में हरिभद्रना समय निर्णयमां विस्तृत चर्चा करी सिद्ध कर्युं छे; अने बीजुं, हरिभद्र सूरिए पोतानी आवश्यक टीकामां अनेक ठेकाणे जिनभद्रनुं स्मरण कर्युं छे अने विशेषावश्यकनो स्पष्ट उल्लेख पण कर्यो छे। एटले हरिभद्र पछी जिनभद्र कोई पण रीते होई शके नहीं ए निश्चित छे। धर्मसागरकृत पट्टावलिनो उल्लेख आ प्रमाणे छेः—

श्री वीरात् १०५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसूनुः श्रीहरिभद्रसूरिः स्वर्गभाक्। निशीथ–बृहत्कल्प-भाष्यावश्यकादिचूर्णिकाराः श्रीजिनदासगणिमहत्तरादयः पूर्वगत-

---

* पट्टावलिओनां केटलांक पानाओमां तो एमने "सर्व भाष्यकर्ता" पण लखेला छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रुतधर-श्रीप्रद्युम्नक्षमाश्रमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरितः प्राचीना एव यथाकालभाविनो बोध्याः । १११५ श्रीजिनभद्रगणिर्युगप्रधानः । अयं च जिनभद्रीयध्यानशतककरणान् भिन्नः संभाव्यते ।

—इण्डियन एण्टीकेरी, पु. ११, पृ. २५३.

खरतर गच्छनी पट्टावलिओ—जेमां छेल्ला सैकामां थई गयेला क्षमाकल्याणमुनिनी बनावेली मुख्य कही शकाय अने जेनो सार डॉ. क्लाटे इण्डियन एण्टिकेरीना पु० ११, पृ० २४३–४९ मां आप्यो छे—ते अनुसारे जिनभद्रनो समय वीरनिर्वाणनो दशमो सैको छे। ए पट्टावलिमां लख्या प्रमाणे वीर सं० ९८० मां देवर्द्धिगणी थया। ते ज समयमां चतुर्थीनी संवत्सरी स्थापन करनार कालकाचार्य थया (वी. सं. ९९३); ते ज अरसामां विशेषावश्यक भाष्यादिना कर्ता [बीजी प्रतिप्रमाणे सर्व भाष्यकर्ता] जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण (वी. स. ९८०), तथा आचारांगादि सूत्रोनी टीका करनार तेमना शिष्य शीलांकाचार्य थया; अने ते ज जमानामां १४४४ ग्रन्थोना रचनार हरिभद्रसूरि थया। आ प्रमाणे आ पट्टावलिलेखकना हिसाबे देवर्धिगणी, कालकाचार्य, जिनभद्र, शीलांकाचार्य अने हरिभद्रसूरिः ए बधा समकालीन छे। आ बधामां हरिभद्रसूरि सिवाय बाकीना आचार्योनो समय हजी प्रमाण-पुरस्सर निर्णीत थयो नथी। पण, सांप्रदायिक इतिहासनुं एकंदर वळण जोतां ए बधा समकालीन होय तेम संभवतुं नथी। हरिभद्रनो समय, लगभग विक्रमना आठमा सैकानो छेल्लो भाग निश्चित थयो छे। देवर्धिगणी अने कालकाचार्य छठ्ठा सैकानी शुरुआतमां थएला मनाय छे। एटले एमनी वच्चे ओछामां ओछुं २५० वर्ष जेटलुं अंतर पडे छे। एमांथी हरिभद्रने बाद करी देवामां आवे—कारण के तेमनो समय निर्णीत छे—अने बाकीना बधाने समकालीन मानी लेवामां आवे तो ते सप्रमाण होई शके के केम; ए प्रश्न विचारणीय रहे छे खरो। पण, आ स्थळे देवर्धिगणी अने कालकाचार्यना समयना विचारने पुरतो अवकाश नथी, तेथी हुं ए बाबतने वगर चर्चे ज मुंकी देवा मांगु छुं।

जिनभद्रगणी अने शीलांकाचार्यनी समकालीनता अने गुरु-शिष्य-सम्बन्ध माटे कांईक विचार अवश्य कर्तव्य छे। कमनशीबे, शीलांकाचार्य संबंधी जे संवत्नो उल्लेख मळे छे ते पण परस्पर विरोधी छे। आचारांगसूत्रनी टीकानी केटलीक प्रतिओमां टीका बनाव्याना समयनो निर्देश बे रीते मळे छेः एक निर्देश गद्यमां छे, अने बीजो पद्यमां छे। तेमांए वळी दरेकमां बब्बे पाठभेद छे।

(१) A पहेलो गद्य निर्देश आ प्रमाणेः—

"शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु चतुरशीत्यधिकेषु वैशाखपञ्चम्यां आचारटीका दृब्धेति।"

खंभातना शान्तिनाथना भंडारमां सं० १३२७ मां लखाएली ताडपत्रनी प्रति छे तेमां आ पंक्ति छे. जुओ, पीटर्सन रीपोर्ट ३, पृ. ९०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

B. बीजो गद्य निर्देश आ प्रमाणेः—

"शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु अष्टानवत्यधिकेषु वैशाखशुद्धपञ्चम्यां आचारटीका कृतेति ।"—इण्डियन एण्टीकेरी, सन् १८८६, पृ० १८८.

(२) बीजो, जे पद्य निर्देश छे ते आ प्रमाणेः—

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् ।
संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥
शीलाचार्येण कृता गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा ।
सम्यगुपयुज्य शोध्या मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥

—आगमोदयसमिति प्रकाशित आवृत्ति, पृ. ३१७ ।

मारी पासेनी एक नोंधमां, **गुप्तानां** ना बदले **शकानां** आवो पण पाठ छे । तेम ज केटलीक प्रतिओमां आमांनो कोई पण उल्लेख सर्वथाए नथी मळतो ।

आ रीते, आ उल्लेखो, जुदी जुदी ४ सालो बतावे छे । पहेलो, शक संवत् ७८८ नी; बीजो ७९८ नी; त्रीजो, गुप्त संवत् ७७२ नी; अने चोथो शक संवत् ७७२ नी । आमांनी कई साल साची छे ते चोक्कस कही शकाय तेम नथी* । गुप्त संवत्नी जे गणत्री अद्यापि विद्वानो करता

---

* आचारांगटीकाना आ संवत्सरविषयक उल्लेखना संबंधमां डॉ० फ्लीटे इण्डियन एण्टीकेरी, पु. १५, पृ. १८८ मां एक टिप्पणी लखी छे ते जाणवा जेवी होवाथी तेनुं भाषान्तर अहिं आपवामां आवे छे ।

आचार टीकामांथी बे उताराओ.

श्रीयुत के. बी. पाठके जैन हरिवंशमांथी एक महत्त्वनो उतारो १४१ मा पान उपर आप्यो छे । एमां गुप्त राजाओना उल्लेख उपरांत महावीरना निर्वाण पछीना वंशोनो नियमित क्रम आपी ए समयनो संबंध बताववा प्रयत्न कर्यो छे । जो के ए संबंध बराबर नथी ।

हुं अहिं थोडीघणी एने मळती ज साहित्यविषयक ध्यान खेंचे एवी बाबत आपवा इच्छुं छुं । डॉ. भगवानलाल एन्द्रजीए १८८३ नी शुरुआतमां, जैनग्रन्थ आचारांग सूत्र ऊपरनी शीलाचार्यनी आचारटीकानी एक हस्तलिखित प्रति मने बतावी हती । ए लगभग ३०० वर्ष पहेलां लखाएली मनाय छे । एमांथी हुं बे उतारा आपुं छुं । पहेलो पद्यबद्ध उतारो २०७ B अने २०८ A पान ऊपर छे, अने ते आ प्रमाणे छेः—

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् ।
संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥
शीलाचार्येण कृता गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा ।
सम्यगुपयुज्य शोध्या मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥

आ उतारो, शीलाचार्ये टीकानो आ भाग गुप्तसंवत् ७७२ ना भादरवा सुदी पांचमने दिवसे गंभूता (खंभात) मां पूरो कर्यो एम जणावे छे ।

बीजो उतारो पुस्तकना अंते २५६ B पान ऊपर आवेलो छे । अने ते गद्यमां होई आ प्रमाणे छेः—

शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु अष्टानवत्यधिकेषु वैशाखशुद्ध पञ्चम्यामाचारटीका कृतेति ।

२५६ B पान अहिं पुरुं थाय छे अने ए पछीनुं पानुं जेमां आ तिथिनुं आंकडामां पुनरावर्तन अने लेखकना उपसंहारना शब्दो छे ते नष्ट थई गयुं छे ।

आ उतारो संपूर्ण टीकानी समाप्तिनी तिथि तरीके शकसंवत् ७९८ नी वैशाख सुदी पांचमने मुंके छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आव्या छे ते प्रमाणे जो गणीए तो गुप्त संवत् ७७२ एटले ११४१ विक्रम संवत् (१०९१ई.स०) थाय। ए समय तो शेषनवांग टीकाकार अभयदेवसूरिनो छे। प्रथमद्वितीयांगटीकाकर्ता शीलांकाचार्य तो ए अगाऊ घणा वर्षो पूर्वे थई गयाना घणा पुरावाओ उपलब्ध छे। तेथी कां तो गुप्त संवत् ७७२ वाळो उल्लेख भ्रमपूर्ण होवो जोईए, अने कां तो गुप्त संवत्नी जे गणत्री आज पर्यंतना बधा शोधको गणता आव्या छे ते खोटी होवी जोईए। पण, मात्र आ अनिश्चित पाठभेदना आधारे ज गुप्त संवत्नी गांठने आपणे ऊकेली शकीए तेम नथी; तेथी ज्यां सुधी गुप्तसंवत्नी गणना अन्य प्रमाणोथी खोटी न ठरे त्यां सुधी आ प्रस्तुत उल्लेखने आपणे सत्य न मानी शकीए। हवे रह्या शक संवत्सरवाळा उल्लेखो। एमां जो के ७७२, ७८४ अने ७९८ आम त्रण भिन्न भिन्न संवत्सरो छे, पण ते बधानो अन्तर्भाव एक ज पचीसीमां थाय छे तेथी

आ बन्ने उताराओ एम बतावे छे के शीलाचार्ये गुप्त अने शक संवत्ने एक गण्यो छे। एमां स्पष्टरीते एक प्रकारनी भूल तो छे ज। अने आ भूल, गुप्त अथवा शक संवत् जेने विषे एनुं अधुरुं ज्ञान हतुं, तेनो निर्देश, कोईपण रीते दाखल करी पोतानी विद्वत्ता बताववाना हेतुने लईने थई छे।

ज्यां सुधी, गुप्त संवत् ७७२ थी ७९८ (इ. स. १०९१ थी १११७) अथवा शक संवत् ७७२ थी ७९८ (इ. स. ८५० थी ८७६) ए बेमांथी कया अरसामां आचारटीका लखाई ए बताववा माटे पुरती थई पडे एवी शीलाचार्यनो खरो समय प्रदर्शित करती माहिती न मळी आवे त्यां सुधी ए भूल दूर थवानी नथी।

परंतु आ उताराओ एम बताववा माटे महत्त्वना छे के शीलाचार्यना समयसुधी पण ए वातनुं स्मरण हतुं के ए संवत् (गुप्त संवत्) के जे वल्लभीना राजाओना वापरने लीधे जाणीतो हतो अने छेवटे काठियावाडमां वल्लभी संवत् तरीके प्रचलित थयो हतो, एनो मूळ अने खास संबंध गुप्त राजाओ साथे हतो जेमणे काठियावाड अने बीजा पाडोशना भागोमां एनो फेलावो कर्यो हतो।"

आ संवत् अने डॉ. फ्लीटनी टिप्पणी ऊपर प्रो. पीटर्सने, हस्तलिखित पुस्तकोनी शोधवाळा, पोताना त्रीजा रीपोर्टना पृ० ३६-३७ ऊपर जे नोंध करी छे ते पण आ बाबतमां उपयोगी होवाथी अहिं अवतारवामां आवे छेः—

नं. २५५. आचारांगसूत्र ऊपरनी शीलाचार्यनी टीका

शीलाचार्य के शीलांक सुप्रसिद्ध नगर अणहिलवाड पाटणना संस्थापक वनराजना धर्मगुरु तरीके सुविदित छे।

२४७ मां पान ऊपर जे अवतरण आपेलुं छे ते ऊपरथी जणाय छे के शीलांकनी आचारांगवृत्तिमां एनो रचना-समय श. सं. ७७८ छे। वधारेमां जणाय छे के जे श्लोकमां ए मिति छे ते छेवटना पान ऊपर छे एटले बहु भार मूकवा जेवी नथी। १८८६ ना मार्चना इ. ए. मां फ्लीटनी शीलाचार्यना ग्रंथ ऊपर एक टूंकी नोंध छे। एमां भगवानलाल इंद्रजीनी प्रतिना आधारे ए लखे छे के ग्रंथना अंदरना भागमां गुप्त संवत् ७७२ अने अंतना भागमां श. सं. ७९८ आपवामां आव्या छे। हाल तो हुं, अहिं आपेलो गुप्त अने शक संवत् वच्चेनो गोटाळो टाळी शकुं एम नथी; परंतु संवत् १३२७ अर्थात् इ. स. १२७१ मां लखाएली ए ग्रंथनी खंभातवाळी प्रतिमां ए मूळ ग्रंथ लखायानो जे समय आपेलो छे ते विषे मने नहीं जेवी ज शंका छे। ए ग्रंथ श. सं. ७८५—इ. स. ८६३ मां पूरो करवामां आव्यो हतो। बीजा श्लोकमांनो जे शब्द हुं बराबर नहोतो समजी शक्यो ते "गंभूता" छे, एम फ्लीटना अवतरणथी समजाय छे। गंभूता एटले खंभात एम फ्लीटनो अभिप्राय देखाय छे। मारावाळा उतारामां ए श्लोकनो अंक बीजो आप्यो छे परंतु पहेला अंकवाळो श्लोक एमां नथी। एनुं स्थान समयनिर्देशक गद्य पंक्तिए लीधुं छे। शीलाचार्ये पोतानी टीका धीरे धीरे पूरी करी हती एटले एमणे ए बे श्लोक अथवा एना जेवुं कांइक वच्चे वच्चे मूकी दीधुं होय एम लागे छे।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेमनी सत्यता जो पुरवार थाय तो ते काल संभवनीय बनी शके छे। पण, केटलांक अवान्तर प्रमाणोनो विचार करतां आ समय पण शीलांकाचार्य माटे जरा वधारे अर्वाचीन जणाय छे। शकसंवत् ७७२–७९८ एटले विक्रम संवत् ९०७–९३३ जेटला थाय। परंतु एम छेक विक्रमना दशमा सैकामां शीलांकाचार्यनुं अस्तित्व स्वीकारवुं ते कदाचित् भ्रमपूर्ण थशे। प्रमाणो जो के स्पष्ट नथी; छतां शीलांगाचार्य हरिभद्र करतां वधारे अर्वाचीन होय एवुं मानवुं शंकाशील लागे छे। परंपरागत किम्वदन्ती प्रमाणे शीलांकाचार्य अणहिल्लपुर संस्थापक वनराज चावडाना गुरु थता हता। ते जो किम्वदन्ती साची होय—खोटी होवा माटे खास प्रमाण मळतुं नथी—तो शीलांकाचार्यनी हयाती विक्रम संवत् ८०० नी आसपास होई शके। कारण के वनराजे सं० ८०२ मां पाटणनी संस्थापना करी हती। शीलांकाचार्यना एक विद्या-गुरु जिनभट होय एम तेमनी विशेषावश्यकटीकामांना उल्लेखोथी अनुमान थाय छे। जिनभट ज हरिभद्रना पण धर्माचार्य थता हता एम हारिभद्रीय आवश्यक-वृत्तिना प्रान्तोल्लेखथी ज्ञात थाय छे। हरिभद्रनो समय वनराजना समय साथे एकता धरावे छे, ए तो हरिभद्रना समय निर्णयथी सिद्ध ज छे। एटले जिनभटना शिष्य शीलांक अने हरिभद्र बन्ने समकालीन होय एवा आ पुरावाओ जणाय छे। वळी एक विशेष प्रमाण पण ए कथननी पुष्टि करतुं होय एवुं कही शकाय तेम छे। कुवलयमाला कथा जे दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरिए शक संवत् ७०० मां रची छे तेनी प्रशस्तिनी ८ मी ९ मी गाथामां* तत्त्वाचार्य नामना एक आचार्यनुं वर्णन आवे छे। ए तत्त्वाचार्य शीलांक ज होय एम मारी कल्पना थाय छे। कारण के आचारांगटीकानी प्रांते शीलांकाचार्यनुं बीजुं नाम तत्त्वादित्य स्पष्ट पणे लखेलुं मळे छे; अने कुवलमालानी ९ मी गाथामां तत्त्वाचार्यने **सीलंगविउलसालो** एवा श्लेषात्मक विशेषणद्वारा शीलांक उपपदथी सूचित करवामां आवेला छे, एवो मारो अभिप्राय छे। जो ए अभिप्राय यथार्थ होय तो ए ज तत्त्वाचार्य ऊर्फे शीलांकाचार्य कुवलयमालाकर्ता उद्योतन सूरिना दीक्षा-गुरु सिद्ध थाय छे अने तेम थवाथी उद्योतन सूरिना एक विद्या-गुरु हरिभद्रसूरि शीलांकना समकालीन सहजे साबीत थई जाय छे।

आ हकीकत ऊपरथी ए विचार स्पष्ट थतो लागे छे के शीलांक हरिभद्रना समकालीन होई, विक्रमना ८ मा सैकाना छेल्ला भागमां ते थएला होवा जोईए; पण आचारांगटीकाना प्रांतोल्लेख प्रमाणे १० मा सैकाना पूर्व भागमां तो नहीं। परंतु, ऊपर जोई गया तेम केटलीक पट्टावलिओमां जे एमने साक्षात् जिनभद्र क्षमाश्रमणना शिष्य जणाव्या छे तेनी शी स्थिति छे ए विचार तो बाकी ज रहे छे। एटले हवे जरा ए विचार तरफ पण दृष्टि फेरवी जोईए। विशेषावश्यक भाष्यटीकाकार कोट्याचार्य ए ज शीलांकाचार्य होय—ए टीका अने प्रघोष प्रमाणे ते होय पण खरा—तो ए टीकागत उल्लेखोथी तो शीलांकाचार्य जिनभद्रगणीना शिष्य सिद्ध थई

---

* **तस्स य आयारधरो तत्तायरिओ त्ति नाम सारगुणो।**
आसि तवतेयनिज्जियपावतमोहो दिणयरो व्व॥
जो दूसमसलिलपवाहवेगहीरन्तगुणसहस्साण।
सीलंगविउलसालो लग्गणखंभो व्व निक्कंपो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शकता नथी । कमनशीबे, पूनाना ग्रन्थसंग्रहमां ए टीकानी जे प्रति छे तेनां आद्यन्तनां केटलांक पानां खंडित थई गएलां छे, तेथी टीकाकारे मंगलाचरणमां के प्रशस्तिमां पोताना विषे के जिनभद्रगणीविषे कांई विशेष सूचन कर्युं छे के नहीं, ते जाणवानुं कशुं साधन नथी। पण टीकामां वच्चे वच्चे कटलीक जगाए भाष्यकारनी स्वोपज्ञ व्याख्याविषे जे केटलाक उल्लेखो करेला छे ते ऊपरथी कांईक अनुमान थई शके तेम छे। शीलांक ऊर्फे कोट्याचार्य पोतानी टीकामां जिनभटाचार्य अने जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण एम बे आचार्योनो वारंवार मत प्रदर्शित करे छे। दाखला तरीके थोडांक अवतरणो जोईए—

(१) उपयोगस्तु छद्मस्थस्य सर्वत्रान्तर्मौहूर्तिक एव श्रोत्रादिषु प्राय ईहान्वयत्वात् । इति जिनभटाचार्यपूज्यपादाः इति ।

(२) तत्राप्यपूर्वमिवापूर्वमिति जिनभटाचार्यपूज्यपादाः इति ।

(३) जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणपूज्यपादैस्तु नोक्तम् ।

(४) अत एव पूज्यपादैः स्वटीकायां प्रायोग्रहणं कृतम् ।

(५) क्षमाश्रमणटीकात्वियम् । (६) क्षमाश्रमणटीकापीयम् ।

(७) श्रीमत्क्षमाश्रमणपूज्यपादानामभिप्रायो लक्षणीयः ।

आमांनां प्रथमनां बे अवतरणोमां जिनभटाचार्यनो उल्लेख छे। जिनभटाचार्यनी कोई कृति जैन साहित्यमां जाण्यामां नथी; तेम ज आ अवतरणो ऊपरथी एम पण नथी भासतुं के आमां जिनभटना कोई ग्रन्थना आधारे कोट्याचार्य आ अभिप्रायो टांकता होय। आ अभिप्रायो तो एम सूचवता होय तेम लागे छे के, कोट्याचार्ये जिनभटना मुखेथी कांई विचारो सांभळ्या-सीख्या होय अने ते प्रसंगवश आ टीकामां व्याख्यान्तररूपे टांकी देवामां आव्या होय। आथी हुं एम अनुमानुं छुं के जिनभट पासे शीलांकाचार्ये शास्त्राभ्यास कर्यो होवो जोईए, अने तेथी तेओ तेमना एक गुरु थवा जोईए । हवे बीजां अवतरणोमां जोईए तो तेमां जिनभद्रगणी अने तेमनी स्वोपज्ञटीकानो निर्देश स्पष्ट ज करेलो छे। आ निर्देश ऊपरथी, जिनभद्रगणीना शीलांकाचार्य शिष्य थता होय तेवो कशो ध्वनि प्रकट थतो नथी। जो तेओ तेमना साक्षात् शिष्य होत तो केक ठेकाणे ते विषेनो स्पष्ट–अस्पष्ट उल्लेख तेओ अवश्य करत। ए टीकामां एक उल्लेख तो एवो पण नजरे पडे छे, जे, ए बेनो परस्पर कालकृत विशेष भेद सूचवनारो कही शकाय। ए उल्लेख आ प्रमाणे छेः—

"भाष्याननुयायि पाठान्तरमिदं अग्रतः, एवमनेनैव वृद्धिक्रमेणेत्यादेरर्वाक्; न चेदं भूयसीषु प्रतिषु दृश्यते ।" वि० भाष्यनी ६३७ मी गाथानी व्याख्यामां आ उल्लेख आवेलो छे। अहिं, कोई जूनी प्रतिओमां शीलांकाचार्यने पाठभेद नजरे पड्यो छे अने ते पाठभेद भाष्यकारना अभिप्रायथी जूदो पडतो जणायो छे; तेथी ते माटे पोतानी टीकामां एमने उल्लेख करवो पड्यो छे के आ पाठभेद भाष्यने अनुगत नथी; तेम ज घणी प्रतिओमां आ पाठ मळतो पण नथी। आ उल्लेख स्पष्ट सूचवे छे के शीलांकाचार्यना समयमां विशेषावश्यकमां पाठभेदो थई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूक्या हता अने तेनी घणी जूदी जूदी पाठभेदोवाळी प्रतिओ पण थई चूकी हती। आ वस्तुस्थिति त्यारे ज बंध बेसती बनी शके ज्यारे शीलांकाचार्य अने जिनभद्रमणी क्षमाश्रमण वच्चे कालकृत विशेष अन्तर होय। जो ए बन्नेनी वच्चे कांई अन्तर न होय अने पट्टावलि लेखकना कथन प्रमाणे एमनामां गुरु-शिष्यनो ज संबन्ध रहेलो होय तो विशेषावश्यकभाष्यमां आवा पाठभेदो अने प्रत्यन्तरोनी नोंध लेवा जेवी स्थिति शीलांकाचार्यनी सन्मुख उपस्थित ज शी रीते थई शके। माटे ज्यां सुधी बीजां कोई स्पष्ट साधक बाधक प्रमाण न मळी आवे त्यां सुधी शीलांकाचार्यने जिनभद्रगणीना शिष्य पण मानी शकाय तेम नथी, तेम ज ते बन्ने समकालीन हता एम पण कही शकाय तेम नथी।

जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणना समय निर्णय माटे हजी बीजी घणी बाबतो चर्चवा जेवी छे, पण आ स्थळे ते बधीनी चर्चा करवा जेटलो अवकाश न होवाथी हुं ए बाबतनो कोई स्पष्ट निर्णय आपी शकुं तेम नथी। पण, खास कांई विरोधी प्रमाण नजरे न पडे त्यां सुधी पट्टावलियोमां जे वीर संवत् ११९५–विक्रम संवत् ६४५ नी साल एमना माटे लखेली छे तेनो स्वीकार करीए तो तेमां कशी हरकत नथी।

जीतकल्पसूत्र

आ सूत्र, एना नाम प्रमाणे जैन श्रमणोना आचार विषयक छे अने एमां १० प्रकारना प्रायश्चित्तनुं विधान करवामां आव्युं छे। आ प्रायश्चित्त संबन्धी विषय छेद सूत्रो अने बीजा घणा ग्रन्थोमां चर्चवामां आव्यो छे। तेमां, केटलीक जग्याए ते बहु ज संक्षिप्त रीते चर्चेलो छे, तो केटलीक जग्याए घणी ज विस्तृत रीते वर्णवेलो छे। एटला माटे जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणे बहु संक्षिप्त नहीं तेमज बहु विस्तृत नहीं एवी मध्यमरीते ए विषयने समजाववा माटे आ ग्रन्थनी संकलना करी होय तेम संभवे छे।

आ प्रायश्चित्तना विषयमां एक वात नोंधवा जेवी छे; अने ते ए छे, के श्वेतांबर संप्रदायना सर्व आगमोमां अने अन्य ग्रन्थोमां आ जीतकल्पसूत्र प्रमाणे ज १० प्रकारनां प्रायश्चित्त वर्णवेलां मळे छे। पण तत्त्वार्थसूत्रना नवमा अध्यायना २१—२२ सूत्रमां प्रायश्चित्तना प्रकार ९ ज गणाव्या छे, अने तेमां, आ सूत्रमां वर्णवेलां मूल, अनवस्थाप्य अने पारंचिक आ छेल्लां त्रणनां स्थाने, परिहार अने उपस्थापना नामना बे प्रायश्चित्त कह्यां छे। दिगम्बर संप्रदायना साहित्यमां प्रायः सर्वत्र तत्त्वार्थसूत्र प्रमाणे ९ ज प्रायश्चित्त मळी आवे छे। श्वेतांबर साहित्यमां एक तत्त्वार्थसूत्र सिवाय बीजे क्यांए आ प्रकार दृष्टि गोचर नथी थतो। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण जीतकल्पसूत्रनी अंते एम पण कहे छे के तप–अनवस्थाप्य अने तप–पारांचिक आ बन्ने प्रायश्चित्त भद्रबाहुस्वामी पछी व्युच्छेद पाम्यां छे। दिगम्बर साहित्यमां आ विचार क्यांए नथी। तेम ज तत्त्वार्थभाष्यमां पण आ संबंधे कांई सूचन नथी। विद्वान् अभ्यासिओ तत्त्वार्थसूत्रना कर्तृत्वना प्रश्ननो ऊहापोह करे त्यारे आ विषय पण तेमां विचारवा जेवो छे, ए सूचन करवा सारुं अहिं आ नोंध करवी उचित लागी छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीतकल्पसूत्र–व्याख्या-साहित्य

आ सूत्र ऊपर उपलब्ध थता व्याख्या–साहित्यमां जूनामां जूनी कृति ते आ आवृत्तिमां प्रकाशित सिद्धसेनकृत चूर्णि छे। आ चूर्णि रचायां पहेलां पण कोई चूर्णि ए सूत्र ऊपर रचाएली हती एम प्रस्तुत चूर्णिमां, पृष्ठ २३, पंक्ति २३ ऊपर, आवेला उल्लेखथी ज्ञात थाय छे, पण ते उपलब्ध नथी। आ मुद्रित चूर्णिना कर्ता सिद्धसेनगणिना समयादि विषेनो निर्णय करवा माटेनां साधनोविषे विशेष शोध खोळ थई शकी नथी, तेथी आ सिद्धसेन कोण अने क्यारे थया—ए प्रश्नने छेड्या वगर ज हाल तो चलावी लेवुं प्राप्त छे।

आ चूर्णि ऊपर जे टिप्पण आपवामां आव्युं छे तेना कर्ता श्रीचन्द्रसूरिना समयादिनो उल्लेख टिप्पणनी प्रशस्तिमां आपेलो छे; अने ते अनुसारे विक्रम संवत् १२२७ मां अणहिलपुरमां तेमणे आनी रचना करेली छे। आ श्रीचंद्रसूरिए श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति (संवत् १२२२), पंचोपांगवृत्ति (संवत् १२२८), निशीथविंशोद्देशकवृत्ति, विगेरे बीजा पण केटलाक व्याख्याग्रन्थो लख्या छे।

प्रस्तुत चूर्णि सिवाय आ सूत्र ऊपर एक प्राकृत गाथाबद्ध भाष्य पण उपलब्ध थाय छे। ए भाष्यना कर्ता कोण छे ते कांई ज्ञात थई शक्युं नथी। एनो आदि–अंतनो भाग आ प्रमाणे छे—

आदि्—कयपवयणप्पणामो वुच्छं पच्छित्तदाणसंखेवं।
जीयव्ववहारगयं जीवस्स विसोहणं परमं॥
पवयणदुवालसंगं सामाइयमाइबिन्दुसारन्तं।
अह व चउव्विहसंघो जत्थेव पइट्ठियं नाणं॥
अह वा पगयपसत्थं पहाणवयणं व पवयणं तेण।
अह व पवत्तयतीई नाणाई पवयणं तेण॥

अन्त—अप्पग्गन्थमहत्थो इति एसो वण्णिओ समासेणं।
पंचमतो ववहारो नामेणं जीयकप्पो त्ति॥
कप्पव्ववहाराणं उदहिसरिच्छाण तह णिसीहस्स।
सुतरतणबिन्दुणवणीतभूतसारेस णातव्वो॥
कप्पादीए विण्णिवि जो सुत्तत्थेहि णाहिती णितुणं।
णिगदिस्सति सो एयं सीसपसीसाण णहु अण्णो॥

॥ इति श्रीजीतकल्पभाष्यं॥ ३३००॥

सं० १७२० वर्षे मार्ग्गशीर्ष शुदि १ शुक्रवासरे अद्येह श्रीपत्तने लि० श्रीमोढज्ञातिना श्रीकाशीदासात्मजेन अंबादत्तेन। शुभं भवतु। शिवमस्तु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ भाष्य, प्रस्तुत चूर्णि रचाया बाद लखायुं होय तेम जणाय छे, कारण के चूर्णिमां भाष्यनो क्यांए उल्लेख थएलो नथी देखातो। चूर्णि पहेलां जो भाष्यनी रचना थई होत तो चूर्णिकार तेनो अवश्य उल्लेख करत।

चूर्णि अने भाष्य सिवाय, आ सूत्र ऊपर, एक संस्कृत टीका पण स्वतंत्र रीते लखाएली मळे छे। ए टीका, आवश्यकसूत्रनी लघुवृत्ति रचनार श्रीतिलकाचार्ये रची छे। ए टीकानो आदि अने अन्त भाग आ प्रमाणे छे:—

वन्दे वीरं तपोवीरं तपसा दुस्तपेन यः। शुद्धं स्वं विदधे स्वर्णं स्वर्णकार इवाग्निना॥
जिनस्य वचनं नौमि नवं तेजस्विमण्डलम्। यतो ज्योतींषि धावन्ति हर्तुमन्तर्गतं तमः॥
निःप्रत्यूहं प्रणिदधे भवानीतनयानहम्। सर्वानपि गणाध्यक्षानक्षामोदरसङ्गतान्॥
जिनभद्रगणिं स्तौमि क्षमाश्रमणमुत्तमम्। यः श्रुताज्जीतमुद्दध्रे शौरिः सिन्धोः सुधामिव॥
प्रणमाम्यात्मगुरूंस्तान् घनसारशलाकयेव यद्वाचा। अज्ञानतिमिरपूरितमुद्धाटितं ममान्तरं चक्षुः
इति नुतिकृतसुकृतः श्रुतरहस्यकल्पस्य जीतकल्पस्य। विवरणलवं करिष्ये स्वस्मृतिबीजप्रबोधाय॥

श्रीमान् चन्द्रप्रभः सूरिर्युगप्राधान्यभागभूत्। तदासनमलंचक्रुः श्रीधर्मघोषसूरयः॥
तत्पट्टश्रीभुजोऽभूवन् श्रीचक्रेश्वरसूरयः। श्रीशिवप्रभसूरिस्तत्पट्टश्रीहीरनायकः॥
तदीयशिष्यलेशोऽहं सूरिश्रीतिलकाभिधः। अनन्यसमसौरभ्यश्रुताम्भोजमधुव्रतः॥
इमामीदृग्विधां चूर्णेः तस्याश्चोपनिबन्धतः। गुरूणां संप्रदायाच्च विज्ञायार्थं स्वशक्तितः॥
अकार्षं जीतकल्पस्य वृत्तिमत्यल्पधीरपि। सा विशोध्या श्रुतधरैः सर्वैर्मयि कृपापरैः॥
सहस्रमेकं श्लोकानामधिकं सप्तभिः शतैः। प्रत्यक्षरेण संख्याया मानमस्य विनिश्चितम्॥

जीतकल्पसूत्रना अनुकरण–ग्रन्थ

आ सूत्रना अनुकरण रूपे, पाछळना आचार्योए यतिजीतकल्प अने श्राद्धजीतकल्प ए नामना बीजा बे त्रण स्वतंत्र ग्रन्थो पण लख्या छे, अने तेमना ऊपर टीका-टिप्पणी आदि केटलाक व्याख्या ग्रन्थो पण उपलब्ध थाय छे†.

आ ग्रन्थने, आ रूपमां प्रकट करवा माटे, श्रीयुत मोदी केशवलाल प्रेमचन्द भाईना उत्साह अने आग्रह ज मुख्य कारणभूत थया छे अने तेथी आ प्राचीन ग्रन्थरत्नना उद्धारनुं मुख्य श्रेय तेमने ज घटे छे।

गूजरात पुरातत्त्व मन्दिर
अमदावाद
आश्विनमास, संवत् १९८२.

—मुनि जिनविजय

---

† जुओ, जैनग्रन्थावली, पृष्ठ ५६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

शीलांकाचार्य विषे वधारे विगत

पाछळनां पानाओमां शीलांकाचार्य विषे केटलीक चर्चा करी छे अने तेमां में एम अभिप्राय दर्शाव्यो छे के शीलांकाचार्य घणुं करीने हरिभद्र सूरिना समकालीन होवा जोईए। आ प्रस्तावना प्रेसमां गया बाद डॉ. हर्मन याकोबीनी लखेली हरिभद्रकृत समराइच्चकहानी प्रस्तावना मारा जोवामां आवी। ए प्रस्तावनामां प्रसंगवशात् शीलांकाचार्य विषे एक बे ठेकाणे डॉ. याकोबीए उल्लेख करेलो छे अने एमना मते ए आचार्य हरिभद्र करतां एक सैका पछी थया हता तेम लागे छे। प्रमाण जो के कोई नवुं ए नथी आपता पण आचारांग टीकानी प्रांते जे शक संवत् ७९८ नी पंक्ति मळी आवे छे तेने ज प्रमाण मानी ए पोतानो अभिप्राय व्यक्त करे छे। प्रस्तावनाना पृष्ठ १० नी नोटमां ए जणावे छे के—

In the Laghuvṛtti [of Gaṇadhara Sārdha S'ataka] V. 60. According to that source and to the Paṭṭavalī of the Kharataragaccha S'īlāṇk was the successor of Haribhadra; but that is impossible, since the date of his Āchārāngaṭika is said to be S'aka 798=872 A. D., or more than century later than Haribhadra.

ए ज प्रस्तावनाना पृष्ठ १२ ऊपर एक बीजी रीते पण हरिभद्र अने शीलांक वच्चे एक सैकानुं अंतर सूचवतां ए विद्वान् लखे छे के—

For according to Prof. Leumann Haribhadra commented on the text in Sanskṛit, but retained the Kathānakas and certain other parts of the Cūrṇi in the original Prakṛit; while S'īlānk who flourished more than a century later, translates such passages also into Sanskṛit.

आमांना प्रथम अवतरणमां तो आचारांग टीकाना शक संवत् ७९८ वाला उल्लेखने, ज्यां सुधी ते अन्य प्रमाणोथी असिद्ध न ठरे, प्रमाणभूत मानी, खरतरगच्छ पट्टावलीमां जे शीलांकने हरिभद्रना शिष्य लख्या छे तेने डॉ. याकोबी असंभव माने छे; अने हरिभद्रनो जे समय में निर्णीत कर्यो छे तेनो संपूर्ण स्वीकार करी, ते ज समयना हिसाबे, ए बंने आचार्यो वच्चे एक सैका जेटलुं अंतर बतावे छे।

बीजा अवतरणमां प्रो. लॉयमाने पोताना दशवैकालिक सूत्र ऊपरना निबंधमां (Z. D. M. G., vol. 46 p. 581. ff.) जैन आगमो ऊपरना व्याख्या-साहित्यना कालक्रम संबंधे जे अभिप्राय जणाव्यो छे तेने अनुसरीने डॉ. याकोबीए हरिभद्र अने शीलांक वच्चे एक सैका जेटलुं व्यवधान सूचव्युं छे।

आ प्रस्तावनाना वाचकोनी विशेष समजण खातर प्रो. लॉयमाने दोरेला व्याख्या–साहित्यना कालक्रमनुं स्पष्टीकरण करवुं आवश्यक छे। जैन आगमो ऊपर सौथी प्रथम निर्युक्ति नामे प्राकृत गाथाबद्ध टूंकी टिप्पणीओ रचाई; ते पछी प्राकृत गाथामां ज विस्तृत भाष्यो रचायां; ते पछी प्राकृतबहुल अने क्वचित् संस्कृतवाला गद्यमां चूर्णिओ रचाई; ते पछी संस्कृतबहुल अने क्वचित् प्राकृतवाला गद्यमां टीकाओ रचाई; अने ते पछी छेवटे केवल संस्कृतमां ज व्याख्याओनी रचना थई। आ प्रकारना दरेक व्याख्या–निबंधोनो कालक्रम साधारण रीते एक-एक सैका जेटलो समजी लेवानो अभिप्राय ए विद्वानोनो थाय छे। उदाहरण तरीके—आवश्यक अने नंदिसूत्रनी चूर्णिना कर्ता जिनदासगणि महत्तर विक्रमना आठमा सैकाना पूर्वार्धमां थया। तेमना पछी एक सैका बाद संस्कृतबहुल एवी टीकाओ लखवानी शुरुआत करनार हरिभद्र थया। हरिभद्रे पोतानी टीकाओ माटे जो के संस्कृतमां ज लखवानी

---

१ नंदिसूत्रनी चूर्णि शक संवत् ५९८-विक्रमसंवत् ७३३ मां रचाई हती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्धतिनो अंगीकार कीधो हतो पण वच्चे वच्चे प्रमाणरूपे जे कथानको विगेरे आपवानी जरूर पडी ते तेमणे पूर्वेनी चूर्णिओमांथी प्राकृतमां ज तद्वत् तारवी लीधां। ए पछी, एक सैका बाद शीलांकाचार्य थया जेमणे पोतानी व्याख्याओने परिपूर्णरीते संस्कृतमां ज लखवानी शैलीनो स्वीकार कीधो।

प्रो. लॉयमाने दोरेलो आ कालक्रम जो के सामान्यरीते बंध बेसतो जणाय छे अने जैन आगम-साहित्यना विकासक्रमनो इतिहास जोतां ए विचार घणाभागे स्वीकारणीय पण जणाय छे। छतां एमां कोक अपवाद पण दृष्टिगोचर थाय छे। दाखला तरीके इग्यारमा सैकामां शांत्याचार्ये उत्तराध्ययनसूत्र ऊपर जे टीका लखी छे ते हरिभद्रनी पद्धतीए लखी छे। मूळ सूत्र अने निर्युक्तिनी व्याख्या ज्यारे ए आचार्ये संस्कृतमां लखी छे त्यारे एमां आवतां बधां कथानको प्राकृतमां ज पूर्वेनी चूर्णिमांथी तद्वत् उतारी लीधां छे; अने एथी ए टीकानुं बीजुं नाम पाइय (प्राकृत) टीका तरीके वधारे प्रसिद्ध छे। केवल शांत्याचार्ये ज नहि पण तेमना पछीना सैकामां थएला ए ज सूत्रना बीजा टीकाकार देवेंद्रगणिए पण ए पद्धतिनुं अनुसरण करी पोतानी टीकामां लांबी लांबी कथाओ प्राकृतमां ज गुंथी छे।

आ ऊपरथी आपणे जोई शकीए छीए के शीलांकाचार्यना समयमाटे प्रो. लॉयमान-अंकित कालक्रम सर्वथा साधकरूप नथी। तेम ज, आचारांग टीका प्रांते आवेली शक संवत् वाळी पंक्ति पण विविध पाठभेदो धरावती होवाने लीधे, जेम में प्रस्तावना पृष्ठ १४ ऊपर जणाव्युं छे, तेम अभ्रान्त गणी शकाय तेम नथी। पण ए आचारांग टीकावाळी पंक्तिनुं समर्थन करे एवुं जे एक बीजुं प्रमाण हमणा मारी दृष्टिगोचर थयुं छे तेनी नोंध हुं अहिं लउं छुंः जैन साहित्य संशोधकना प्रथम भागना, २ जा अंकमां, बृहट्टिप्पनिका नामनी एक प्राचीन जैन ग्रंथ सूचि में प्रकट करी छे। ए सूचि लगभग ५०० वर्ष जेटली जूनी छे अने बहु गवेषणा पूर्वक तैयार करवामां आवी होय तेवी तेनी संकलना छे। ए सूचिना २८३ क्रमांक ऊपर शीलाचार्य रचित प्राकृत मुख्य महापुरुष चरित्रनी नोंध छे। जेनी १०००० जेटली श्लोकसंख्या, अने ९२५ वर्षे रचना थएली लखी छे। मूलग्रंथ अद्यापि मारा जोवामां आव्यो नथी तेथी एना रचना-समयनो उल्लेख केवा प्रकारनो छे ते कांई कल्पी शकाय तेम नथी; परंतु जो ए चरित्रकर्ता शीलाचार्य अने आचारांग अने सूत्रकृतांग टीकाकर्ता शीलाचार्य बन्ने एक ज होय तो, आचारांग टीकागत शक संवत् ७९८ वालो उल्लेख अवश्य सत्य होई शके छे। कारण के, शक संवत् ७९८ ए विक्रम संवत् ९३३ बराबर थाय छे; अने महापुरुष चरित्रनी रचनानी जे ९२५ नी साल बृहट्टिप्पनिकाकारे आपेली छे ते विक्रम संवत्नी गणत्री वाळी ज होवी जोईए; कारण के, ए सूचिमां प्रायः सर्वत्र एज गणत्रीनो व्यवहार करवामां आव्यो छे।[1] तेथी ए बन्ने साल वच्चे मात्र ८ वर्षनो ज तफावत रहेतो होवाथी आ बन्ने कृतिओ—आचारांग टीका अने महापुरुष चरित्र—समकालीन ज ठरे छे। अने तेथी ए बन्नेना कर्ता शीलाचार्य एकज व्यक्ति हता, एम मानवुं प्राप्त थाय छे।

आ हकीकत ऊपरथी आचारांग टीकाकर्ता शीलाचार्यनो समय निर्णय थई शके छे; पण, विशेषावश्यक भाष्यटीका कर्ता कोट्याचार्य के जेमनुं नाम शीलांक पण कहेवामां आवे छे तेमनो तथा अणहिलपुर संस्थापक वनराजना गुरु तरीके प्रसिद्ध थएला शीलगुण के शीलांक नामना जे आचार्य छे तेमनो निर्णय तो मूल प्रस्तावनामां जणाव्या प्रमाणे अनिश्चित ज रहे छे।

---

१ ए सूचिकारे आचारांग टीकानो रचना समय पण विक्रमसंवत्नी गणत्रीए गणी ९३३ वर्ष नो ज आप्यो छे—जुओ बृहट्टिप्पनिका, क्रमांक १ (३).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|| णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ||

सिरि-जिणभद्द-खमासमण-विरइयं

जीयकप्प-सुत्तं

कय-पवयण-प्पणामो वोच्छं पच्छित्तदाण-संखेवं ।
जीयव्ववहार-गयं जीयस्स विसोहणं परमं ॥ १ ॥
संवर-विणिज्जराओ मोक्खस्स पहो, तवो पहो तासिं ।
तवसो य पहाणंगं पच्छित्तं, जं च नाणस्स ॥ २ ॥
सारो चरणं, तस्स वि नेव्वाणं, चरण-सोहणत्थं च ।
पच्छित्तं, तेण तयं नेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं ॥ ३ ॥
तं दसविहमालोयण १ -पडिक्कमणोभय २-३ -विवेग ४ -वोस्सग्गे ५ ।
तव ६ -छेय ७ -मूल ८ -अणवठ्ठया ९ य पारञ्चिए १० चेव ॥ ४ ॥

१. करणिज्जा जे जोगा तेसुवउत्तस्स निरइयारस्स ।
छउमत्थस्स विसोही जइणो आलोयणा भणिया ॥ ५ ॥
आहाराइ-ग्गहणे तह बहिया निग्गमेसुऽणेगेसु ।
उच्चार-विहारावणि-चेइय-जइ-वन्दणाईसु ॥ ६ ॥
जं चऽन्नं करणिज्जं जइणो हत्थ-सय-बाहिरायरियं ।
अवियडियम्मि असुद्धो, आलोएन्तो तयं सुद्धो ॥ ७ ॥
कारण-विणिग्गयस्स य स-गणाओ पर-गणागयस्स वि य ।
उवसंपया-विहारे आलोयण-निरइयारस्स ॥ ८ ॥

२. गुत्ती-समिइ-पमाए गुरुणो आसायणा विणय-भंगे ।
इच्छाईणमकरणे लहुस मुसाऽदिन्न-मुच्छासु ॥ ९ ॥
अविहीइ कास-जंभिय-खुय-वायासंकिलिट्ठ-कम्मेसु ।
कन्दप्प-हास-विगहा-कसाय-विसयाणुसंगेसु ॥ १० ॥
खलियस्स य सव्वत्थ वि हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स ।
सहसाऽणाभोगेण व मिच्छाकारो पडिक्कमणं ॥ ११ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभोगेण वि तणुएसु नेह-भय-सोग-बाउसाईसु ।
कन्दप्प-हास-विगहाईएसु नेयं पडिक्कमणं ॥ १२ ॥

३. संभम-भयाउरावइ-सहसाऽणाभोगऽणप्प-वसओ वा ।
सव्व-वयाईयारे तदुभयमासंकिए चेव ॥ १३ ॥

दुच्चिन्तिय-दुब्भासिय-दुचेट्ठिय-एवमाइयं बहुसो ।
उवउत्तो वि न जाणइ जं देवसियाइ-अइयारं ॥ १४ ॥

सव्वेसु वि बीय-पए दंसण-नाण-चरणावराहेसु ।
आउत्तस्स तदुभयं सहसक्काराइणा चेव ॥ १५ ॥

४. पिण्डोवहि-सेज्जाई गहियं कडजोगिणोवउत्तेण ।
पच्छा नायमसुद्धं सुद्धो विहिणा विगिञ्चन्तो ॥ १६ ॥

कालऽद्धाणाइच्छिय-अणुग्गयत्थमिय-गहियमसढो उ ।
कारण-गहि-उव्वरियं भत्ताइ-विगिञ्चियं सुद्धो ॥ १७ ॥

५. गमणागमण-विहारे सुयम्मि सावज्ज-सुविणयाईसु ।
नावा-नइ-सन्तारे पायच्छित्तं विउस्सग्गो ॥ १८ ॥

भत्ते पाणे सयणासणे य अरिहन्त-समण-सेज्जासु ।
उच्चारे पासवणे पणवीसं होन्ति ऊसासा ॥ १९ ॥

हत्थ-सय-बाहिराओ गमणाऽऽगमणाइएसु पणवीसं ।
पाणिवहाई-सुविणे सयमट्ठसयं चउत्थम्मि ॥ २० ॥

देसिय-राइय-पक्खिय-चाउम्मास-वरिसेसु परिमाणं ।
सयमद्धं तिन्नि सया पंच-सयऽट्ठुत्तरसहस्सं ॥ २१ ॥

उद्देस-समुद्देसे सत्तावीसं अणुण्णवणियाए ।
अट्ठेव य ऊसासा पट्ठवण-पडिक्कमणमाई ॥ २२ ॥

६. (१) उद्देसऽज्झयण-सुयक्खन्धंगेसु कमसो पमाइस्स ।
कालाइक्कमणाइसु नाणायाराइयारेसु ॥ २३ ॥

निव्विगइय-पुरिमड्ढेगभत्त-आयंबिलं चणागाढे ।
पुरिमाई खमणन्तं आगाढे; एवमत्थे वि ॥ २४ ॥

सामन्नं पुण सुत्ते मयमायामं चउत्थमत्थम्मि ।
अप्पत्ताऽपत्ताऽवत्त-वायणुद्देसणाइसु य ॥ २५ ॥

कालाविसज्जणाइसु मण्डलि-वसुहाऽपमज्जणाइसु य ।
निव्वीइयमकरणे अक्ख-निसेज्जा अभत्तट्ठो ॥ २६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगाढाणागाढम्मि सव्व-भंगे य देस-भंगे य ।
जोगे छट्ठ-चउत्थं चउत्थमायम्बिलं कमसो ॥ २७ ॥

(२) संकाइएसु देसे खमणं मिच्छोववूहणाइसु य ।
पुरिमाई खमणन्तं भिक्खु-प्पभिईण व चउण्हं ॥ २८ ॥

एवं चिय पत्तेयं उववूहाईणमकरणे जइणं ।
आयामन्तं निव्वीइगाइ पासत्थ-सड्ढेसु ॥ २९ ॥

परिवाराइ-निमित्तं ममत्त-परिपालणाइ वच्छल्ले ।
साहम्मिओ त्ति संजम-हेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥ ३० ॥

(३) एगिन्दियाण घट्टणमगाढ-गाढ-परियावणुद्दवणे ।
निव्वीयं पुरिमड्ढं आसणमायामगं कमसो ॥ ३१ ॥

पुरिमाई खमणन्तं अणन्त-विगलिन्दियाण पत्तेयं ।
पञ्चिन्दियम्मि एगासणाइ कल्लाणयमहेगं ॥ ३२ ॥

मोसाइसु मेहुण-वज्जिएसु द्व्वाइ-वत्थु-भिन्नेसु ।
हीणे मज्झुक्कोसे आसणमायाम-खमणाइं ॥ ३३ ॥

लेवाडय-परिवासे अभत्तट्ठो सुक्क-सन्निहीए य ।
इयराए छट्ठ-भत्तं, अट्ठमगं सेस-निसिभत्ते ॥ ३४ ॥

१ उद्देसिय-चरिम-तिगे कम्मे पासण्ड-स-घर-मीसे य ।
बायर-पाहुडियाए सपच्चवायाहडे लोभे ॥ ३५ ॥

अइरं अणन्त-निक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसयाईसु ।
संजोग-स-इंगाले दुविह-निमित्ते य खमणं तु ॥ ३६ ॥

२ कम्मुद्देसिय-मीसे धायाइ-पगासणाइएसुं च ।
पुर-पच्छ-कम्म-कुच्छिय-संसत्तालित्त-कर-मत्ते ॥ ३७ ॥

अइरं परित्त-निक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसयाईसु ।
अइमाण-धूम-कारण विवज्जए विहिय मायामं ॥ ३८ ॥

३ अज्झोयर-कड-पूइय-मायाऽणन्ते परंपरगए य ।
मीसाणन्ताणन्तरगया इए चे गमासणयं ॥ ३९ ॥

४ ओह-विभागुद्देसोवगरण-पूइय-ठविय-पागडिए ।
लोउत्तर-परियट्टिय-पमिच्च-परभावकीए य ॥ ४० ॥

सग्गामाहड-द्दर-जहन्न-मालोहडोज्झरे पढमे ।
सुहुम-तिगिच्छा-सन्थव-तिग-मक्खिय-दायगो वहए ॥ ४१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्तेय-परंपर-ठविय-पिहिय-मीसे अणन्तराईसु ।
पुरिमड्ढं संकाए जं संकइ तं समावज्जे ॥ ४२ ॥
इत्तर-ठविए सुहुमे ससणिद्ध-ससरक्ख-मक्खिए चेव ।
मीस-परंपर-ठवियाइएसु बीएसु याविगई ॥ ४३ ॥
सहसाऽणाभोगेणव जेसु पडिक्कमणमभिहियं तेसु ।
आभोगओत्ति बहुसो-अइप्पमाणे य निव्विगई ॥ ४४ ॥
धावण-डेवण-संघरिस-गमण-किड्डा-कुहावणाईसु ।
उक्कुट्ठि-गीय-छेलिय-जीवरुयाईसु य चउत्थं ॥ ४५ ॥
तिविहोवहिणो विच्चुय-विस्सारियऽपेहियानिवेयणए ।
निव्वीय-पुरिममेगासणाइ, सव्वम्मि चायामं ॥ ४६ ॥
हारिय-धो-उग्गमियानिवेयणादिन्न-भोग-दाणेसु ।
आसण-आयाम-चउत्थगाइ, सव्वम्मि छट्ठं तु ॥ ४७ ॥
मुहणन्तय-रयहरणे फिडिए निव्वीययं चउत्थं च ।
नासिय-हारविए वा जीएण चउत्थ-छट्ठाइं ॥ ४८ ॥
कालऽद्धाणाईए निव्विइयं खमणमेव परिभोगे ।
अविहि-विगिञ्चणियाए भत्ताईणं तु पुरिमड्ढं ॥ ४९ ॥
पाणस्सासंवरणे भूमि-तिगापेहणे य निव्विगई ।
सव्वस्सासंवरणे अगहण-भंगे य पुरिमड्ढं ॥ ५० ॥
एयं चिय सामन्नं तवपडिमाऽभिग्गहाइयाणं पि ।
निव्वीयगाइ पक्खिय-पुरिसाइ-विभागओ नेयं ॥ ५१ ॥
फिडिए सयमुस्सारिय-भग्गे वेगाइ वन्दणुस्सग्गे ।
निव्वीइय-पुरिमेगासणाइ, सव्वेसु चायामं ॥ ५२ ॥
अकएसु य पुरिमासण-आयामं, सव्वसो चउत्थं तु ।
पुव्वमपेहिय-थण्डिल-निसि-वोसिरणे दिया सुवणे ॥ ५३ ॥
कोहे बहुदेवसिए आसव-कक्कोलगाइएसुं च ।
लसुणाइसु पुरिमड्ढं, तन्नाई-बन्ध-मुयणे य ॥ ५४ ॥
अज्झुसिर-तणेसु निव्वीइयं तु, सेस-पणएसु पुरिमड्ढं ।
अप्पडिलेहिय-पणए आसणयं, तस-वहे जं च ॥ ५५ ॥
ठवणमणापुच्छाए निव्विसओ विरिय-गूहणाए य ।
जीएणेक्कासणयं, सेसय-मायासु खमणं तु ॥ ५६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दप्पेणं पञ्चिन्दिय-वोरमणे संकिलिट्ठ-कम्मे य ।
दीहऽद्धाणासेवी गिलाण-कप्पावसाणे य ॥ ५७ ॥
सव्वोवहि-कप्पम्मि य पुरिमत्ता पेहणे य चरिमाए ।
चाउम्मासे वरिसे य सोहणं पञ्च-कल्लाणं ॥ ५८ ॥
छेयाइमसद्दहओ मिउणो परियाय-गव्वियस्स वि य ।
छेयाईए वि तवो जीएण गणाहिवइणो य ॥ ५९ ॥
जं जं न भणियमिहइं तस्सावत्तीएँ दाण-संखेवं ।
भिन्नाइया य वोच्छं छम्मासन्ताय जीएणं ॥ ६० ॥
भिन्नो अविसिट्ठो च्चिय मासो चउरो य छच्च लहु-गुरुया ।
निव्वियगाई अट्ठमभत्तन्तं दाणमेएसिं ॥ ६१ ॥
इय सव्वावत्तीओ तवसो नाउं जह-क्कमं समए ।
जीएण देज्ज निव्वीइगाइ-दाणं जहाभिहियं ॥ ६२ ॥
एयं पुण सव्वं चिय पायं सामन्नओ विणिद्दिट्ठं ।
दाणं विभागओ पुण दव्वाइ-विसेसियं जाण ॥ ६३ ॥
दव्वं १ खेत्तं २ कालं ३ भावं ४ पुरिस ५-पडिसेवणाओ ६ य ।
नाउमियं चिय देज्जा तम्मत्तं हीणमहियं वा ॥ ६४ ॥
(१) आहाराई दव्वं बलियं सुलहं च नाउमहियं पि ।
देज्जा हि; दुब्बलं दुल्लहं च नाऊण हीणं पि ॥ ६५ ॥
(२) लुक्खं सीयल-साहारणं च खेत्तमहियं पि सीयम्मि ।
लुक्खम्मि हीणतरयं. (३) एवं काले वि तिविहम्मि ॥ ६६ ॥
गिम्ह-सिसिर-वासासुं देज्जऽट्ठम-दसम-बारसन्ताई ।
नाउं विहिणा नवविह-सुयववहारोवएसेणं ॥ ६७ ॥
(४) हट्ठ-गिलाणा भावम्मि—देज्ज हट्ठस्स, न उ गिलाणस्स ।
जावइयं वा विसहइ तं देज्ज, सहेज्ज वा कालं ॥ ६८ ॥
(५) पुरिसा गीयाऽगीया सहाऽसहा तह सढाऽसढा केई ।
परिणामाऽपरिणामा अइपरिणामा य वत्थूणं ॥ ६९ ॥
तह धिइ-संघयणोभय-संपन्ना तदुभएण हीणा य ।
आय-परोभय-नोभय-तरगा तह अन्नतरगा य ॥ ७० ॥
कप्पट्ठियादओ वि य चउरो जे सेयरा समक्खाया ।
सावेक्खेयर-भेयादओ वि जे ताण पुरिसाणं ॥ ७१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो जह-सत्तो बहुतर-गुणो व तस्साहियं पि देज्जाहि ।
हीणस्स हीणतरगं, झोसेज्ज व सव्व-हीणस्स ॥ ७२ ॥

एत्थ पुण बहुतरा भिक्खुणो त्ति अकयकरणाणभिगया य ।
जन्तेण जीयमट्ठमभत्तन्तं निव्वियाईयं ॥ ७३ ॥

(६) आउट्टियाइ दप्प-प्पमाय-कप्पेहि वा निसेवेज्जा ।
दव्वं खेत्तं कालं भावं वा सेवओ पुरिसो ॥ ७४ ॥

जं जीय-दाणमुत्तं एयं पायं पमायसहियस्स ।
एत्तो चिय ठाणन्तरमेगं वड्ढेज्ज दप्पवओ ॥ ७५ ॥

आउट्टियाइ ठाणन्तरं च, सट्ठाणमेव वा देज्जा ।
कप्पेण पडिक्कमणं तदुभयमहवा विणिद्दिट्ठं ॥ ७६ ॥

आलोयण-कालम्मि वि संकेस-विसोहि-भावओ नाउं ।
हीणं वा अहियं वा तम्मत्तं वा वि देज्जाहि ॥ ७७ ॥

इति दव्वाइ-बहु-गुणे गुरु-सेवाए य बहुतरं देज्जा ।
हीणतरे हीणतरं, हीणतरे जाव झोस त्ति ॥ ७८ ॥

झोसिज्जइ सुबहुं पि हु जीएणऽन्नं तवारिहं वहओ ।
वेयावच्चकरस्स य दिज्जइ साणुग्गहतरं वा ॥ ७९ ॥

७. तव-गव्विओ तवस्स य असमत्थो तवमसद्दहन्तो य ।
तवसा य जो न दम्मइ अइपरिणाम-प्पसंगी य ॥ ८० ॥

सुबहुत्तर-गुण-भंसी छेयावत्तिसु पसज्जमाणो य ।
पासत्थाई जो वि य जईण पडितप्पिओ बहुसो ॥ ८१ ॥

उक्कोसं तव-भूमिं समईओ सावसेस-चरणो य ।
छेयं पणगाईयं पावइ जा धरइ परियाओ ॥ ८२ ॥

८. आउट्टियाइ पञ्चिन्दिय-घाए, मेहुणे य दप्पेणं ।
सेसेसुक्कोसाभिक्ख-सेवणाईसु तीसुं पि ॥ ८३ ॥

तव-गव्वियाइएसु य मूलुत्तर-दोस-वइयर-गएसु ।
दंसण-चरित्तवन्ते चियत्त-किच्चे य सेहे य ॥ ८४ ॥

अच्चन्तोसन्नेसु य परलिंग-दुगे य मूलकम्मे य ।
भिक्खुम्मि य विहिय-तवे ऽणवट्ठ-पारञ्चियं पत्ते ॥ ८५ ॥

छेएण उ परियाए ऽणवट्ठ-पारञ्चियावसाणे य ।
मूलं मूलावत्तिसु बहुसो य पसज्जओ भणियं ॥ ८६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. उक्कोसं बहुसो वा पउट्ठ-चित्तो वि तेणियं कुणइ ।
पहरइ जो य स-पक्खे निरवेक्खो घोर-परिणामो ॥ ८७ ॥
अहिसेओ सव्वेसु वि बहुसो पारञ्चियावराहेसु ।
अणवट्ठप्पावत्तिसु पसज्जमाणो अणेगासु ॥ ८८ ॥
कीरइ अणवट्ठप्पो, सो लिंग१-क्खेत्त२-कालओ३-तवओ४ ।
(१) लिंगेण दव्व-भावे भणिओ पव्वावणाऽणरिहो ॥ ८९ ॥
अप्पडिविरओ-सन्नो न भाव-लिंगारिहोऽणवट्ठप्पो ।
(२) जो जत्थ जेण दूसइ पडिसिद्धो तत्थ सो खेत्ते ॥ ९० ॥
(३) जत्तियमित्तं कालं. (४) तवसा उ जहन्नएण छम्मासा ।
संवच्छरमुक्कोसं आसायइ जो जिणाईणं ॥ ९१ ॥
वासं बारस वासा पडिसेवी, कारणेण सव्वो वि ।
थोवं थोवतरं वा वहेज्ज, मुञ्चेज्ज वा सव्वं ॥ ९२ ॥
वन्दइ न य वन्दिज्जइ, परिहार-तवं सुदुचरं चरइ ।
संवासो से कप्पइ, नालवणाईणि सेसाणि ॥ ९३ ॥
१०. तित्थयर-पवयण-सुयं आयरियं गणहरं महिड्ढियं ।
आसायन्तो बहुसो आभिणिवेसेण पारञ्ची ॥ ९४ ॥
जो य स-लिंगे दुट्ठो कसाय-विसए हिं राय-वहगो य ।
राय ग्गमहिसि-पडिसेवओ य बहुसो पगासो य ॥ ९५ ॥
थीणद्धि-महादोसो अन्नोऽन्नासेवणापसत्तो य ।
चरिमट्ठाणावत्तिसु बहुसो य पसज्जए जो उ ॥ ९६ ॥
सो कीरइ पारञ्ची लिंगाओ१-खेत्त२-कालओ३-तवओ य ४ ।
(१) संपागड-पडिसेवी लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥ ९७ ॥
(२) वसहि-निवेसण-वाडग-साहि-निओग-पुर-देस-रज्जाओ ।
खेत्ताओ पारञ्ची कुल-गण-संघालयाओ वा ॥ ९८ ॥
जत्थुप्पन्नो दोसो उप्पज्जिस्सइ य जत्थ नाऊणं ।
तत्तो तत्तो कीरइ खेत्ताओ खेत्त-पारञ्ची ॥ ९९ ॥
(३) जत्तिय-मेत्तं कालं. (४) तवसा पारञ्चियस्स उ स एव ।
कालो दु-विगप्पस्स वि अणवट्ठप्पस्स जोऽभिहिओ ॥ १०० ॥
एगागी खेत्त-बहिं कुणइ तवं सु-विउलं महासत्तो ।
अवलोयणमायरिओ पइ-दिणमेगो कुणइ तस्स ॥ १०१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणवट्ठप्पो तवसा तव-पारञ्ची य दो वि वोच्छिन्ना ।
चोद्दस-पुव्वधरम्मी, धरन्ति सेसा उ जा तित्थं ॥ १०२ ॥
इय एस जीयकप्पो समासओ सुविहियाणुकम्पाए ।
कहिओ, देयोऽयं पुण पत्ते सुपरिच्छिय-गुणम्मि* ॥ १०३ ॥

॥ सिरि-जिणभद्द-खमासमण-विरइयं जीयव्ववहार-कप्प-सुत्तं समत्तं ॥

---

*प्रत्यन्तरे सूत्रपाठे १०६ गाथा लिखिता उपलभ्यते । तत्र

वत्तणुवत्तपवत्तो बहुसो आसेविओ महाणेण ।
एसो उ जीयकप्पो पञ्चमओ होइ नायव्वो ॥
–इयं गाथा प्रथमगाथाऽनन्तरम्,
अप्पा मूलगुणेसुं विराहणा अप्प उत्तरगुणेसु ।
अप्पा पासत्थाइसु दाणग्गहसंपओगाहा ॥
–इयं गाथा अष्टमगाथाऽनन्तरम्,
सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणा य दोसाओ ।
दस एसणाए दोसा संजोयणमाइ पंचे व ॥
–इयं गाथा चतुस्त्रिंशत्तमगाथाऽनन्तरं च लिखिता सन्दृश्यते । एतद् गाथात्रितयं ग्रन्थान्तरगतं न तु प्रकृतसूत्रकारकृतं चूर्ण्यादिव्याख्याकृद्भिस्तथैव सूचितत्वात् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

सिद्धसेणसूरिकया

जीयकप्प-चुण्णी

सिद्धत्थ-सिद्ध-सासण सिद्धत्थ-सुयं सुयं च सिद्धत्थस्स ।
वीर-वरं वर-वरयं[1] वर-वरएहि महियं नमह जीव-हियं ॥ १ ॥
एक्कारस वि गणहरे दुद्धर-गुण-धारए धराहिव-सारे ।
जम्बु-प्पभवाईए पणमह सिरसा समत्त-सुत्तत्थ-धरे ॥ २ ॥
दस-नव-पुव्वी अइसेसिणो य अवसेस-नाणिणो य जत्तेणं[2] ।
सव्वे वि सव्व-कालं तिगरण-सुद्धेण नमह जइ-गुण-प्पवरे[3] ॥ ३ ॥
एत्तो नेव्वाणंगं[4] नेव्वाणं गमयतीति निव्वाणंगं ।
पगयं पसत्थ-वयणं पहाण-वयणं च पवयणं नमह सया[5] ॥ ४ ॥
नमह य अणुओग-धरं जुग-प्पहाणं पहाण नाणीण मयं[6] ।
सव्व-सुइ-सत्थ-कुसलं दंसण-नाणोवओग-मग्गम्मि ठियं ॥ ५ ॥
जस्स मुह-निज्झरामय-मय-वस-गन्धाहिवासिया इव भमरा ।
नाण-मयरन्द-तिसिया रत्ति[7] दिया य मुणिवरा सेवन्ति सया ॥ ६ ॥
स-समय-पर-समयागम-लिवि-गणिय-च्छन्द-सद्द-निम्माओ ।
दससु वि दिसासु जस्स य अणुओगो[8] भमइ अणुवमो जस-पडहो ॥ ७ ॥
नाणाणं नाणीण य हेऊण[9] य पमाण-गणहराण य पुच्छा ।
अविसेसओ विसेसा विसेसियाऽऽव स्स य म्मि अणुवम-मइणा ॥ ८ ॥
जेण य छेयसुयत्था आवत्ती-दाण-विरयणा जत्तेणं ।
पुरिस-विसेसेण[10] फुडा निज्जूढा जीयदाणकप्पम्मि विही ॥ ९ ॥
पर-समयागम-निउणं सुसमिय-सु-समण-समाहि-मग्गेण गयं ।
जिणभद्दखमासमणं खमासमणाणं[11] निहाणमिव एक्कं ॥ १० ॥
तं नमिउं मय-महणं माणरिहं लोभ-वज्जियं जिय-रोसं ।
तेण[12] य जीय-विरइय-गाहाणं विवरणं भणिहामि जहत्थं ॥ ११ ॥

को वि सीसो विणीओ आवस्सय-दसकालिय-उत्तरज्झयणा-ऽऽयार-निसीह-सूयगड-दसा-कप्प-ववहार-माइयं अंग-पविट्ठं बाहिरं च सुत्तओ अत्थओ य अहिज्जिऊण गुरुमुवगम्म अणुजाणावेऊण बारसावत्त-कय-किइकम्मो पायवडिओ ठिओ कर-यल-जुयलं मत्थए ठवेउं विन्नवेइ—'भगवं! कप्प-ववहार-कप्पियाकप्पिय-चुल्लकप्प-महाकप्पसुय-निसीहाइएसु छेद-सुत्तेसु अइ-वित्थरेण पच्छित्तं भणियं। पइ दिवसं च तेण असमत्थो विसोहिं काउं। मइ-वामोहो य मे भवइ[13] अन्नन्न[14]-गन्थेसु[15]। नाणाइयारेसु[16] आवत्ती का, कम्मि वा कं दाणं दिज्जइ त्ति।

---

1 B वरदं। 2 B जत्तेण। 3 B पव०। 4 B निव्वा०। 5 B सदा। 6 B बहु-मयं। 7 B रति च। 8 B ०ओगे। 9 B हेऊणं य। 10 B विसेसे य। 11 B ०समणनि०। 12 B तेणे। 13 B भवति। 14 B अन्नोन्न। 15 B ०न्थेसु य। 16 A ०णातियारे०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वियाणिऊण, जहा अपरिमूढो अप्पणो परस्स य अइयार-विसोहिं करेमि, तहा पसायं करेह' त्ति । तओ गुरुणा बहु-स्सुय-चिर-पव्वइय-कप्पियाइएहिं गुणेहिं संजुत्तं अप्पच्चापत्त-वत्त-तिन्तिणिय-चल-चित्तादि-दोस-विरहियं च नाऊण 'जीयववहारस्स एस जोगो'त्ति गुरुणा भण्णए[1] 'सुण भव्व सत्ता ! असुह-कम्म-मल-मइलियस्स परम-विसोहणं जीयववहारं' ति। बहु-विग्घाणि सेयाणि; इमं च सत्थं परम-सेयं । तेण कय-मंगलोवयारेहिं सत्थमारभेयव्वं । तं च आरभमाणो गुरू मंगलत्थं भणइ—'कयपवयण' इच्चाइ[2] । पगय-वयणं ति वा, पहाण-वयणं ति वा, पसत्थ-वयणं ति वा—पवयणं । पवुच्चन्ति तेण जीवादयो पयत्था इति पवयणं । तहिं वा अहिगरण-भूए। पवदतीति पवयणं—चउव्विहो संघो । पइट्ठ-वयणं ति वा—तदुवओगाणण्णत्ताओ संघो त्ति जं भणियं होइ। जेण तं सुयं, तम्मि पइट्ठियं, अणण्णं—तदुवओगाओ त्ति । तं च सामाइयाइ-बिन्दुसार-पवज्जसाणं अंगाणंगपविट्ठं सव्वं सुय-नाणं पवयणं ति । पणमणं पणामो, पूया इति एगट्ठियं[3] । कओ पवयण-प्पणामो जेण सोहं कय-पवयण-प्पमाणो । वोच्छं—भणामि। पावं छिन्दन्तीति पायच्छित्तं[4]। चित्तं वा जीवो भण्णइ। पाएण वा वि चित्तं सोहइ अइयार-मल-मइलियं, तेण पायच्छित्तं। पायए[5] चकारस्स छकारो लक्खणिओ। तस्स पायच्छित्तस्स दाणं। तस्स संखेवं संगहं। जीय[6]-ववहारकयं। जीयस्सेत्ति वत्तणुवत्त-पवत्तो बहुसो आसेविओ महाजणेण[7] जीय-ववहारो भण्णइ। तेण जीय-ववहारेण जं कयं, उवइट्ठं दिण्णं वा। जीय-ववहार-गयं वा, अणुपविट्ठं ति भणियं होइ। जीव पाण-धारणे। जम्हा जीविंसु जीवन्ति जीविस्सन्ति तम्हा जीवेत्ति वत्तव्वं सिया। सव्व-कालमुवओग-लक्खणत्तणओ जीवो। तस्स जीवस्स विसेसेण सोहणं। किं कओ विसेसो?। अन्ने वि मरुयादीया पायच्छित्तं देन्ति थूल-बुद्धिणो जीव-घायम्मि कत्थइ सामन्नेण; ण पुण संघट्टण-परितावणोद्दवण-भेएण सव्वेसिमेगिन्दियाईणं तस-पज्जवसाणाणं दाउं जाणन्ति। उवएसो वा तेसिं समए एरिसो नत्थि। इह पुण सासणे सव्वमत्थि त्ति काउं विसेसेण सोहणं भण्णइ। जहा य पलास-खारोदगाइ वत्थ-मलस्स सोहणं, तहा कम्म-मल-मइलियस्स जीवस्स जीय-ववहार-निद्दिट्ठं पायच्छित्तं। परमं-पहाणयं, पगिट्ठमिति वा। न अण्णत्थ एरिसं ति जं भणियं होइ।

एत्थ सीसो भणइ—'अण्णे वि किमत्थि ववहारा, जेण विसेसिज्जइ—जीयववहार-गयं ति?। विसेसणं च सइ संभवे वभिचारे वा कज्जइ।' गुरू भणइ—'आमं, अण्णेवि चत्तारि ववहारा अत्थि; तं-जहा [१] आगम-[२] सुय-[३] आणा-[४] धारणा; पुव्वाणु-पुव्वीए जीयववहारो एएसिं पञ्चमो।' सीसो भणइ—'आगम-ववहाराईणं जीयववहार-पज्जवसाणाणं को पइ विसेसो?।' गुरू भणइ—

[१] आगम-ववहारिणो छज्जणा; तं-जहा—केवल-मण-ओहिणाणी चोद्दस-दस-नव-पुव्वी एए

[२] सुय-ववहारो पुण अवसेस-पुव्वी एक्कारसंगिणो आकप्प-ववहारा अवसेस-सुए य अहिगय-सुत्तत्था सुय-ववहारिणो त्ति ।

[३] आणा-ववहारो—गीयायरिया आसेविय-सत्थत्था खीणजंघा-बला दो वि जणा पगिट्ठ-देसन्तर-निवासिणो अन्नोन्न-समीवमसमत्था गन्तुं जया, तया मइ धारणा-कुसलं अगीयत्थ-सीसं गूढत्थेहिं अइयार-पयासेवणेहिं पेसेइ[8] त्ति । जहा—

पढमस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं जं तु[9] । पढमे छक्के अब्भन्तरं तु पढमं भवे ठाणं ॥
पढमस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं होज्जा । पढमे छक्के अब्भन्तरं तु सेसेसु वि पएसु ॥

1 A भन्नए। 2 B सञ्ज्ञकपुस्तकेऽत्र समग्रा गाथा लिखिताऽस्ति । एवमग्रेऽपि समग्र-ग्रन्थे ज्ञेयम् । 3 A एगट्ठ । 4 B पवच्छि० । 5 A पाइए । 6 A सर्वत्र 'जीत' इत्येवं उपलभ्यते । 7 B महाणेण । 8 A पेसित्ति । 9 B होज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं होज्जा । बिइए छक्के अब्भन्तरं तु पढमं भवे ठाणं ॥
पढमस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं होज्जा । बिइए छक्के अब्भन्तरं तु सेसेसु वि पएसु ॥
पढमस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं होज्जा । तइए छक्के अब्भन्तरं तु पढमं भवे ठाणं ॥
पढमस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं होज्जा । तइए छक्के अब्भन्तरं तु सेसेसु वि पएसु ॥
एवं पढमममुञ्चन्तेण बिइय–तइयमाइ जा दसमं । पुढविकाइयाईसु पुणो वि उच्चारणियाइं ॥
बिइयस्स य कज्जस्स पढमेण पएण सेवियं होज्जा । पढमे छक्के अब्भन्तरं तु पढमं भवे ठाणं ॥

एवं बिइयस्स वि । पयाए चेव परिवाडीए सव्वाओ गाहाओ भाणियव्वाओ ।

पढमं ठाणं दप्पो दप्पो च्चिय तस्स वी भवे पढमं । पढमं छक्क·व्वयाइं पाणाइवाओ तहिं पढमं ।
एवं तु मुसावाओ अदत्त-मेहुण-परिग्गहो चेव । बिइ-छक्के पुढवाई तइ-छक्के होन्ति कप्पाइं ॥
एवं दप्प-पयम्मी दप्पेणं चारियाइं अट्ठरस । एवमकप्पाईसु वि एक्केक्के होन्ति अट्ठरस ॥
बिइयं कज्जं कप्पो पढमपयं[1] तत्थ दंसणणिमित्तं[2] । पढमे[3] छक्किवयाइं तत्थ उ पढमं तु पाणवहो ॥
दंसणममुयन्तेणं[4] पुव्वकमेणेव चारणिज्जाणि । अट्ठारस ठाणाइं एवं नाणाइ एक्केक्के[5] ॥
चउवीसट्ठारसया एवं एए भवंति[6] कप्पम्मि । दस होन्ती दप्पम्मी सव्वसमासे य मुण संखं ॥

दुविहा पडिसेवणा—दप्पिया, कप्पिया य । दप्पिया दसविहा । तं-जहा—

दप्प अकप्प निरालम्ब चियत्ते अप्पसत्थ वीसत्थे ।
अपरिच्छिय[7]-ऽकडजोगी[8] निरणुतावीय णिस्संको ॥

तत्थ दप्पो—धावणडेवणाई । अकप्पो जं अविहीए[9] सेवइ । निरालम्बो—आलम्बण-रहिओ सेवइ । चियत्ते त्ति[10]—संजमाहिकारियाणि छड्डेऊण सेवइ, स त्यक्तकृत्यः । अप्पसत्थेत्ति[11]-अप्रशस्तेन भावेन सेवइ । वीसत्थो—इहलोग-परलोगस्स न भायइ । अपरिच्छियत्ति—कज्जा-कज्जाइं अपरिक्खिउं सेवइ । अकडजोगी—जोगं अकाऊण[12] सेवइ । निरणुतावी—जो अकिच्चं काऊण नाणुतप्पइ; जहा मए दुट्ठु कयं । णिस्संको[13]—जो निस्संकितो सेवइ । एसा[14] दप्पिया ॥

कप्पिया चउवीसविहा; तं-जहा—

दंसणनाणचरित्ते तवसंजमसमिइगुत्तिहेउं वा । साहम्मियवच्छल्लत्तणेण कुलओ गणस्सेव ॥
संघस्सायरियस्स य असहुस्स गिलाणबालवुड्ढस्स ।
उदयग्गिचोरसावयभय[15]कन्तारावई[16] वसणे ॥

एएहिं कारणेहिं जो पडिसेवेइ सा कप्पिया पडिसेवणा । 'किं पुण पडिसेवियव्वं ? ।' 'इमाइं अट्ठारस पयाइं ।' तं-जहा—

वयछक्क-कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं । पलियंकनिसेज्जा य[17] सिणाणं सोभवज्जणं ॥
सव्वसमासे य मुण[18]सु संखं १८० दप्पिया, कप्पिया ४३२ ॥
सोऊण तस्स पडिसेवणं तु आलोयणं कम्म[19] विहिं च । आगमपुरिसज्जायं परियायबलं[20] च खेत्तं च ॥
अवधारेउं सीसो गंतूण य सो तओ गुरुसगासे । तेसि निवेएइ तहा जहाणुपुव्वी तयं सव्वं ॥
सो ववहारविहिन्नू अणुमज्जित्ता[21] सुओवएसेणं[22] । सीसस्स देइ आणं तस्स इमं देइ पच्छित्तं ॥
पढमस्स य कज्जस्स[23] दसविहमालोयणं निसामेत्ता । नक्खत्ते मे पीला सुक्के मासे[24] तवं कुणह ॥
पढमस्स य कज्जस्स दसविहमालोयणं[25] निसामेत्ता । नक्खत्ते मे पीला चाउम्मासे[26] तवं कुणह ॥

---

1 B पढमं । 2 B निमित्तं । 3 B पढमेक्क । 4 A ॰मसुय॰ । 5 A एकेके । 6 B हव॰ । 7 B ॰पडिच्छि॰ । 8 A अकड॰ । 9 B विहीए । 10 A चित्तयत्त॰ । 11 A ॰सत्थोत्ति । 12 B ॰ऊणं । 13 A नीसंको । 14 A एस । 15 A रुय । 16 B ॰राडवीव॰ । 17 A ॰ज्जाविय । 18 B सुणसु । 19 A ॰यणकम्म । 20 A ॰याग ब॰ । 21 B ॰मजिय तं । 22 A ॰ओसेण । 23 B कज्जस्सा । 24 A ॰ह आ॰ । 25 A मासं । 26 A मासं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमस्स य कज्जस्स दसविहमालोयणं निसामेत्ता। नक्खत्ते मे पीला छम्मासतवं कुणह सुक्के ॥
एवं ता उग्घाए[1] अणुघाए ताणि चेव कण्हम्मि। मास चउमास छ मासियाणि च्छेदं[2] अओ वोच्छं ॥
छिन्दन्तु तयं भाणं गच्छन्तु तवस्स साहुणो मूलं। अव्वावडावगच्छे अधीइया[3] वावि विहरन्तु ॥
छब्भागंगुल[4]पणए[5] दसभाए[6] ति भाग अट्ठपन्नरसे। वीसाए तिभागूणं छब्भागूणं तु पणवीसे[7] ॥
मास चउमास छक्के अंगुल चउरो तहेव छक्कं तु। एए छेयविभागा णायव्वाऽहक्कमेणं तु ॥
बिइयस्स य कज्जस्स तहियं चउवीसयं निसामेत्ता। आउत्त नमोक्कारा हवंतु एवं भणिज्जाहि[8] ॥
एवं नाऊण तहिं जहोवएसेण देइ पच्छित्तं। आणाए एस भणिओ[9] ववहारो धीरपुरिसेहिं ॥

एवं सो आयरिओ दव्वखेत्तकालभावसंघयणधिइ[10]बलाइयं च परिपुच्छिऊण सयं गमणं, सीसं वाऽगीयत्थं पेसेइ; अविज्जमाणे वा तस्सेव पेसवितस्स निगूढमेव अतिचारविसोहिं पेसेइ।

[४] धारणाववहारो—संविग्गेण गीयत्थेणायरिएणं दव्वखेत्तकालभावपुरिस[11]पडिसेवणासु[12] अवलोएऊण जम्मि जं अवराहे दिन्नं पच्छित्तं तं पासिऊण अन्नो वि तेसु चेव दव्वाइएसु तारिसावराहे तं चेव पच्छित्तं देइ; एस धारणाववहारो। अहवा वेयावच्चगरस्स[13] गच्छोवग्गहकारिणो फड्डगपइणो वा संविग्गस्स देसदरिसणसहायस्स वा बहुसो पडितप्पियस्स अवसेससुयाणुओगस्स [14]उचियपायच्छित्तट्ठाणदाणधारणं धारणाववहारो भन्नइ।

[५] पंचमो जीयववहारो—सो पुण दव्वखेत्तकालभावपुरिसपडिसेवणाणुवत्ति सरीरसंघयणधीबलपरिहाणिं वावेक्खिऊण तहा[15] पायच्छित्तदाणं[16] जीयं[17]; जो वा जम्मि गच्छे केणइ कारणेण सुयाइरित्तो पायच्छित्त-विसेसो पवत्तिओ अन्नेहिं य[18] बहूहिं अणुवत्तिओ नय पडिसिद्धो। भणियं च—

वत्तणुवत्तपवत्तो बहुसो आसेविओ महाणेण। एसो उ जीयकप्पो पंचमओ होइ ववहारो॥

जीयं ति वा करणिज्जं ति वा आयरणिज्जं ति वा एगट्ठं। जीवेइ[19] वा तिविहे वि काले तेण जीयं[20]। सुत्ताओ पुण हीणं समं अइरित्तं वा जीयदाणमिति[21]। पंचसु वि पुण ववहारेसु विज्जमाणेसु आगमेण ववहारं ववहरेज्जा, न सेसेहिं। एवं सुएणं, आणाए, धारणाए, जाव जीयववहारेणं। पुव्विल्लेहिं ववहारं ववहरेज्जा न सेसेहिं[22] ति। किं कारणं? आगमववहारी अइसइणो संकिलिस्समाणं विसुज्झमाणं अवट्ठियपरिणामं वा पच्चक्खमुवलभन्ति, तावइयं च से दिन्ति[23] जावइएण विसुज्झइ; सुत्तभणियाओ अहियं ऊणं तम्मत्तं वा; न सुयमणुवत्तए। जे पुण सुयववहारी ते सुयमणुवत्तमाणा इंगिआगार-वत्त-णेत्त-वयण-विगाराइएहिं[24] भावमुवलक्खिऊण[25] तिक्खुत्तो अइयारं आलोयावेऊण; तं-जहा—सुओवएसेण पलिउञ्चियमपलिउञ्चियं वा आलोयणाकाले जं जहा आलोएज्जा तं तहा सुओवएसेण ववहरन्तीति। एस[26] सुयववहारो।[27] सुयाभावे आणाए ववहारं ववहरेज्जा। आणाववहारो वि सुयववहाराणुसरिसो केवलं [28]निगूढाइयारविसेसेण[29] विसेसिओ[30]। धारणाववहारो वि सुयववहाराणुसरिसो, केवलं सुओवएसेण[31] उचियपयाणं वेयावच्चकराईणमणुग्गहत्थो[32] विसेसिओ। सुयववहारेगदेसो[33] धारणाववहारो त्ति। धारणाणन्तरं जीयववहारो। सव्वत्थ य जीयववहारोऽणुवत्तए। दव्वखेत्तकालभावपुरिसपडिसेवणाधिइसंघयणा-

1 B तावुग्घा०। 2 B छेयं। 3 B ०इता। 4 B ०यंगु०। 5 B ०णगे। 6 A ०राते। 7 A पणुवी०। 8 B ०णेज्जा। 9 ०णितो। 10 A ०यणइ०। 11 A ०रिसं। 12 A ०णाय। 13 B ०करस्स। 14 B उचित। 15 ०B तहा तहा। 16 B पच्छित्त०। 17 A जीतं। 18 B 'य'नास्ति। 19 B जीवति। 20 A जीतं। 21 A जीत०। 22 B सेसएहिं। 23 B देइ। 24 B विका०। 25 B लक्खे०। 26 A सुत्त०। 27 A सुत्ता०। 28 A ०ढाविया०। 29 A विसेसण। 30 B ०सितो। 31 A ०णुचिय। 32 A ०कराणुगहत्थ। 33 B ०गएसो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्तिरूवं[1] परूवेऊण पंचविहववहारमज्झे जीयववहारेण पगयं। जेण सो सावेक्खो चिरं 'चाणुवत्तिस्सतीति[3]।

२. 'संवरविणिज्जराओ' इच्चाइ। एईसे गाहाए सम्बन्धो। सीसो भणइ—'सम्मदंसण-नाणचरणसंवरविणिज्जरतवपयत्था पहाणा, ते सव्वे वि मोत्तुं तवेगदेसं पायच्छित्तं वक्खाणेउमुज्जया[4] किमत्थं तुब्भे त्ति?'। आयरिओ[5] भणइ—'पारंपरिएण चरणपयत्थस्स विसोहिकारणं पायच्छित्तं। चरणविसुद्धीए य कसिणकम्मपडलुव्वेल्लणाणन्तरं अव्वाबाहेकंतिग्रचंतिय-परमसमसुहलक्खणो मोक्खो संपाविज्जइ त्ति काउं पायच्छित्तमेव भण्णइ।' संवरणं संवरं ढक्कणं पिहाणं[6] ति एगट्ठा। विसेसेण निज्जरणं विणिज्जरणं। विणिज्जरा सोहणमिति एगट्ठं। संवरणं नवस्स कम्मस्स अणायाणं[7]। णिज्जराए पुव्वोवचियसुहासुहकम्मपोग्गलपरिसाडो[8]। अहवा विसेसियं भण्णइ—मिच्छादंसणाविरइकसायपमायजोगनिरोहो संवरो। कहं?। मिच्छत्तावरोहेणं सम्मत्तपडिवत्तीए मिच्छत्तनिमित्तासवनिमित्तकम्मणो[9] संवरणं कयं भवइ[10]। एवं विरइपडिवत्तीए अविरइपच्चयं कम्मं पच्चक्खायं भवइ। तहा कसायविवज्जणेण तन्निमित्तयं कम्मं वज्जियं होइ। तहा इन्दिय-विगहा[11]-निद्दा-मज्ज-पमायासव-निरोहदारेण तप्पच्चयस्स कम्मणो निरोहो कओ भवइ। धावण-वग्गण-डेवण-लंघण-फोडणाइ-असुह-चेट्ठा-निवित्तीए कायजोगासवलद्धपवेसस्स कम्मुणो निरोहो भवइ। तहा हिंस-फरुसा-लिय-पिसुण-असब्भूय-डंभ-सढ-छलाइ[12]-वायानिरोहेण तप्पच्चयं कम्मं पच्चक्खायं होइ। तहा ईसा-ऽमरिस-भय-सोग-मिच्छाभिसंधाण[13]-राग-दोसाकुसल[14]-संकप्पाइनिरोहेण तन्निमित्तं कम्मं वज्जियं होइ। निज्जरा पुण गुत्ति-समिइ-समणधम्म-भावणा-मूलगुण-उत्तरगुण-परीसहोवसग्गाहियासणरयस्स भवइ। गुत्ती तिविहा मणाइ। समिइ पंचविहा इरियाइ[15]। समणधम्मो दसविहो खमाइ। भावणा दुवालसविहा अणिच्चाइ। मूलगुणा पंचविहा पाणाइवायाइ-निवित्ती[16]। उत्तरगुणा पिंडविसुद्धिमाइया[17]। परीसहा बावीसं छुहाइया[18]। उवसग्गा सोलस। हासा पदोसा वीमंसा पुढोवेमाया दिव्वा एए। हासा पदोसा वीमंसा कुसीलपडिसेवणा एए[19] माणुसा। भया पदोसा आहारहेऊ[20] अवच्चलेण सारक्खणया एए तेरिच्छा। घट्टणया थंभणया लेसणया पवडणया एए आयसंचेयणिया। सो य संवरो दुविहो—देसे सव्वे य। निज्जरा वि दुविहा देसे सव्वे य। जोगनिरोहकाले सेलेसि-पडिवन्नस्स दुचरिमचरिमसमए सव्वसंवरो सव्वनिज्जरा य। सेसकाले देससंवरो देसनिज्जरा य। एवं 'संवरविणिज्जराओ' उभयमवि 'मोक्खस्स पहो' मग्गो हेऊ मोक्खकारणं मोक्खमग्गो[21] त्ति। 'तासिं' पुण संवरविणिज्जराणं 'तवो पहो' हेऊ कारणं ति। तस्स य 'तवस्स पहाणमंगं पच्छित्तं', जेण पच्छित्ते दुवालसविहो वि तवो अणुवत्तइ। तवस्स कारणं पहाणं[22] पच्छित्तं। तवो कारणं संवरविणिज्जराणं। संवरविणिज्जराओ मोक्खस्स कारणमिति। 'जं च नाणस्से'त्ति उत्तरगाहाए सह संबज्झए[23]।

३. 'सारो चरणमिच्चाइ' गाहा। सामाइयाइयस्स बिन्दुसारपज्जवसाणस्स नाणस्स 'सारो चरणं'। चरणस्स पुण णिव्वाणं सारो। निव्वाणस्स अणंतरकारणं चरणं, कारणकारणं नाणं। चरणस्स कारणं नाणमणंतरं। नाणाओ चरणं; चरणाओ निव्वाणं ति। नाणविसुद्धीए चरण-

1 A पडिसेवणावत्ति। 2 A वाणु०। 3 A वत्तइस्सति। 4 B ०ज्जुया। 5 A ०रितो। 6 B पिहणं। 7 A ०दाणं। 8 B कम्ममलपरिसाडो। 9 A ०कंमणो। 10 B हवइ। 11 A विकहा। 12 B छलादि। 13 B संधारण। 14 B०कुल। 15 A इयराइ। 16 A ०त्तीओ। 17 B पिंडसुद्धिमादीया। 18 B छुहातीता। 19 A एते। 20 A हेउं। 21 B ०क्खहेउ। 22 A नास्ति। 23 B०ज्झइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसुद्धी, चरणविसुद्धीए निव्वाणफलावत्ती भवइ[1] । चरणविसुद्धी पुण पच्छित्ताहीणा। अओ निव्वाणचरणऽत्थिणा पच्छित्तं 'नेयं' जाणियव्वं अवस्सं[2] भवइ[3] ।

४. 'तं दस-विह'मिच्चाइ। तमिति अणन्तरगाहानिद्दिट्टं पच्छित्तं सव्वनामसद्देण सम्बज्झइ। 'तं' पच्छित्तं 'दसविहं' दसभेयं दसविकप्पं। तं-जहा—आलोयणारिहं, पडिक्कमणारिहं, तदुभय-विवेगोसग्गारिहं, तवारिहं, छेयारिहं, मूलारिहं, अणवट्ठप्पारिहं, पारंचियारिहं चेति।

तत्थ य आलोयणारिहं—आ मज्जायाए वट्टइ। का सा मज्जाया ?

जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुओ भणइ। तं तह आलोएज्जा माया-मय-विप्पमुक्को उ ॥

एसा मज्जाया। आलोयणं पगासीकरणं समुदायत्थो। गुरुपच्चक्खीकरणं मज्जायाए। जं पावं आलोइयमेत्तेणं चेव सुज्झइ, एयं आलोयणारिहं।१। पडिक्कमणारिहं—जं मिच्छादुक्कडमेत्तेण चेव सुज्झइ न आलोइज्जइ; जहा सहसा अणुवउत्तेणं खेलसिंघाणाइयं परिट्ठवियं नय हिंसाइयं दोसमावन्नो तत्थ मिच्छादुक्कडं भणइ, एयं पडिक्कमणारिहं।२। तदुभयारिहं—जं पडिसेविय गुरुणो आलोइज्जइ, गुरुसंदिट्ठो य पडिक्कमइ त्ति पच्छा मिच्छा[4] दुक्कडं ति भणइ, एयं तदुभयारिहं।३। विवेगारिहं—विगिंचमाणो विहीए तमइयारं सोहेइ जत्थ, एयं विवेगारिहं।४। विउसग्गारिहं—जं कायचेट्ठानिरोहोवओगमेत्तेण चेव सुज्झइ, जहा दुस्सुमणाइयं,[5] एयं विउसग्गारिहं।५। तवारिहं—जम्मि पडिसेविए निव्वीयाइओ छम्मासपज्जवसाणो तवो दिज्जइ, एयं तवारिहं।६। छेयारिहं—जम्मि य[6] पडिसेविए संदूसियपुव्वपरियायदेसावछेयणं[7] कीरइ, नाणाविहवाहिसं[8]दूसियंगोवंगछेयणमिव सेससरीरावयवपरिपालणत्थं, तहेहावि सेसपरियायरक्खणत्थं, एयं छेयारिहं।७। मूलारिहं—जेण पडिसेविएण पुणो महव्वयारोवणं निरवसेसपरियायावणयणाणन्तरं कीरइ, एयं मूलारिहं।८। अणवट्ठप्पारिहं—जम्मि पडिसेविए उवट्ठावणा अजोगो, कंचि कालं न वएसु ठाविज्जइ; जाव पइविसिट्ठतवो न चिण्णो, पच्छा य चिण्णतवो तद्दोसोवरओ, वएसु ठाविज्जइ; एयं अणवट्ठप्पारिहं।९। पारंचियारिहं—अञ्चु गइ-पूयणेसु;[9] पारं अञ्चइ तवाईणं जम्मि पडिसेविए लिंगखेत्तकालविसिट्ठाणं, तं पारंचियारिहं।१०। एस संखेवओ पिण्डत्थो दसण्ह वि पयाणं भणिओ। सट्ठाणे सट्ठाणे वित्थरेण वि भासियव्वो। एएहिं चेव पएहिं विवरिएहिं जीयववहारो समप्पइ। संपयं जहक्कम-निद्दिट्ठाणं दसण्ह वि पयाणं विवरणं[10] भण्णइ कमेण चेव।

५. तत्थ पढमं पयं 'आलोयण'त्ति। तस्स[11] सरूव[12]-निरूवणत्थं गाहा 'करणिज्जा जे जोगा' इच्चाइ। 'करणिज्जा' नाम अवस्स-कायव्वा। 'जे' इति अणिद्दिट्ठणिद्देसो। 'जोगा' इति किरियाओ सुओवइट्ठाओ संजमहेउगाओ कम्मनिज्जरणत्थं। 'तेसु' अणन्तरनिद्दिट्ठेसु 'उवउत्तस्स' पवत्तस्स। अहवा जोगा इति मण-वइ-कायजोगा एएहिंतो किरिया अणण्णा[13] भवती[14] ति तस्सहचरियत्ताओ[15]।

जोगो विरियं थामो उच्छाह परक्कमो तहा चेट्ठा। सत्ती सामत्थं ति[16] य जोगस्स हवन्ति पज्जाया ॥

कायजोगो कहं कायव्वो ?। कुम्मो इव [17]अल्लीणपल्लीणगुत्ते[18] सुप्पणिहियपाणिपाए। अहवा, उड्ढट्टु पायं रीएज्जा, तिरिच्छं[19] वा कट्टु[20] पायं रीएज्जा, साहट्टु पायं रीएज्जा। एवं कायजोगो करणिज्जो[21]। वइजोगो वि एवं करणिज्जो—

जा यऽसच्चा ण वत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा। जा य बुद्धेहिं नाइण्णा न तं भासेज्ज पन्नवं ॥

---

1 B हवति। 2 B नास्ति। 3 B होई। 4 A मिच्छामिदु०। 5 B ०सिमणा०। 6 B नास्ति। 7 B छेदणं। 8 B 'सं'नास्ति। 9 B पूयणासु। 10 B विवरं। 11 A तत्थ। 12 A सरूवं। 13 A अणंता। 14 A भवन्ती। 15 B चरित्ताओ। 16 B चि। 17 B इव ली०। 18 A गत्तो। 19 A वितिरि०। 20 A नास्ति। 21 B० णीयो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणजोगो वि एवं करणिज्जो—अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणा य। निरइयारस्सेव संखेवेण मुहपोत्तियाइ-पडिलेहणपमज्जणाई[1] जा जा संजमसामायारीगया किरिया सा सव्वा करणिज्जजोगसद्दवच्चा होइ। अहोरत्तब्भन्तराणुट्ठेया। 'निरइयारस्स' अदुट्ठभावस्स। 'छउमत्थस्से'त्ति परोक्खनाणिणो। सुओवएसाणुसारेण सेसकिरियाकलावाणुट्ठाणपरायणस्स। 'विसोही' कम्मबन्धनिवित्ती[2] निसल्लया वा। 'जइणो' जयमाणस्स अप्पमत्तस्स। 'आलोयणा भणिया' जिणिन्दगणहरेहिं[3]। सीसो भणइ-'निरइयारो नियमा जई[4] चेव होइ तो किमत्थं जइग्गहणं?।' भण्णइ—'हेउ-हेउमब्भावेणं वक्खाणं कायव्वं। निरइयारलक्खणाओ[5] चेव हेउओ सो जयमाणो जइ त्ति लब्भइ, तेण दोण्हवि गहणं। अह वा जइ त्ति सामन्नाभिहाणं। तं निरइयारत्तणेण विसेसिज्जइ निरइयारो जइ त्ति। पुणो वि सीसो-'ते' य जया[6] उवउत्तो निरइयारो य[7] करेइ। करणिज्जा य ते। तो तत्थ का विसोही[8] आलोइए अणालोइए वा[9]?' गुरू भणइ—'तत्थ जा चेट्ठानिमित्ता सुहुमा आसवकिरिया, सुहुमपमायनिमित्ता[10] वा अणुवलक्खिया ताओ[11] सुज्झन्ति आलोयणा मेत्तेण'। सो पुण गुरु-संदिट्ठो असंदिट्ठो वा पुव्वं वा आलोएज्जा, कज्जसमत्तीए वा आलोएज्जा। अहवा पुव्विं पि पच्छा वि[12] आलोएज्जा।

६. 'आहाराइ गहणे'च्चाइ। अणन्तरगाहाए [13]करणिज्जजोगनिद्देसमेत्तं भणियं, संपयं पुण नामग्गाहं करणिज्जा जोगा भण्णंति[14]। के ते करणिज्जा[15] जोगा?। इमे—आहारो आईए जेसिं गहणाणं ताणि 'आहाराइ-गहणाणि'। एगवयणेण[16] णिद्देसो[17] कओ। आइग्गहणेण सेज्जासंथारवत्थ-पायपुञ्छणपडिग्गहगाइ[18] ओहिय-ओवग्गहिओ[19] य[20] सेसो[21] उवही घेप्पइ। 'तह बहियाणिग्गमेसु णेगेसु' गिलाणआयरियबालदुब्बलसेहखवग[22]असहुपाओग्गो[23]सहगहणनिमित्तं णिग्गमणे। गहणं तु गुरुमापुच्छिऊण—गुरुणाणुन्नाओ, सुओवएसेण उवउत्तो, विहीए गिण्हिऊण; तओ जहाविही गहियमालोएन्तो सुद्धो। सीसो भणइ-'जइ गहणे अविसुद्धी, सुद्धी य आलोइए; एवं गहणमेव मा करेउ'। गुरू भणइ-'जइ गहणं न करेइ तओ आयरिओवज्झायाइ-कुलगणसंघसाहम्मियदंसणनाणचरित्ततवसंजमाईणं ववच्छेओ—भंगो हवइ। तेणावस्सं गहणं विहीए कायव्वं'। अहवा एयं सव्वं आहाराइ-गहणेण गहियं। इमो पुणो बहियाणिग्गमोऽणेगो भण्णइ। गुरुमूलाओ सेज्जाओ वा कुलगणसंघचेइयदुविहमेय[24]तद्दव्वविणासनिवारणाई[25]। अहवा पीढ-[26]फलगसेज्जासंथारपाडिहारियगहियप्पणत्थं[27] वा निग्गमं करेज्जा। अहवा एयाइं निग्गमका[28]-रणाइं। 'उच्चारविहारावणि' त्ति उच्चारभूमि-विहारभूमीओ सण्णा-सज्झायसन्नियाओ[29]। चेइयवंदणणिमित्तं आसन्नं दूरं वा गच्छेज्जा। साहूणं पुण अपुव्वबहुस्सुय[30]संविग्गाणं वन्दण संसयवोच्छेयत्थं वा गच्छेज्जा। आइसद्देणं सड्ढासन्नायगओसन्नविहारीणं वा सद्धावड्ढावणत्थं साहम्मियाण वा संजमउच्छाहणिमित्तं गच्छेज्जा।

७. 'जं चन्नं करणिज्ज'मिच्चाइ। 'जं चन्नं' ति पुव्वगाहाभणियाओ वइरित्तं ति;[31] तं सव्वं च सद्देण समुच्चिज्जइ। तं च खेत्तपडिलेहणथंडिलसेहनिक्खमणायरियसंलेहणाई[32] हत्थसयाओ परेणं जं आयरियं, तमायरित्ता समिइगुत्तिविसुद्धि[33]निमित्तं अवस्सं आलोएयव्वं। जं पुण

1 B ०ज्जणाईई। 2 A निवत्ती। 3 A नास्ति। 4 A जइ। 5 A ०इयारत्तणाओ। 6 A जहा। 7 A व। 8 B का अविसोही। 9 A नास्ति। 10 B णिमि०। 11 B तातो। 12 B व। 13 A ०णेज्ज। 14 A भन्नन्ति। 15 A ०ज्जजो०। 16 B ०यणे णि०। 17 A णिद्दोसो। 18 B ०ग्गहादि। 19 B ०हियअवउग्गहि०। 20 B नास्ति। 21 A सेत्ता। 22 B खमग। 23 A ०वाओगो। 24 A भेद। 25 B ०णादी। 26 A पीढग। 27 A ०प्पिणण०। 28 A ०मणका०। 29 A सज्झास०। 30 A ०सुय। 31 B वतिरित्तए। 32 B ०णादी। 33 A ०तिसुद्धि०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थसयब्भन्तरायरियं तत्थ किञ्चि आलोइज्जइ, किञ्चि नालोइज्जइ। जहा पासवणखेलसिंघाण-जल्ल[1]निविसणुट्ठाणवियम्भणाकुञ्चण[2]पसारणोसासणीसासचेट्ठाइ किञ्चि कज्जं नालोइज्जइ। पासवणं पुण पुव्वमापुच्छिऊण वोसिरइ। 'अवियडियम्मि' अणालोइयम्मि, असुद्धो साइयारो, आलोएन्तो पुण तं कज्जं[3] आयरियस्स सुद्धो निरइयारो त्ति भणियं होइ।

८. 'कारणविणिग्गय'मिच्चाइ। 'कारणविणिग्गयस्स' त्ति। दुविहो निग्गमो गच्छाओ[4]—कारणेण, अकारणेण य[5]। असिवओमरायदुट्ठगिलाणुत्तिमट्ठायरियपेसणाइ कारणिओ। चक्क-थूभ-पडिमा-महिमा-जम्म[6]-निक्खमण-नाण-निव्वाण-भूमि-सन्नायग-वइग-संखडिपेहाइ निक्कारणिओ। कारणविणिग्गयस्स। 'च' सद्दो आलोयणाइपयं[7] समुच्चिणइ। निरइयारस्स गुत्तिसमिइविसुद्धस्स कारणेण विणिग्गयस्स आलोयणमेत्ताओ चेव सुद्धी होइ। सा य आलोयणा—ओहओ विभागओ य। ओहालोयणा अद्धमासब्भन्तरागयस्स हवइ। तं चागयमेत्तो चेव इरियावहिया-पडिक्कन्तो [8]समुद्देसवेलाए आलोएइ। आलोइयमेत्ते चेव सुज्झइ निरइयारो। सा य ओहालोयणा इमा—

अप्पा मूलगुणेसुं विराहणा अप्प[9] उत्तरगुणेसु[10]। अप्पा पासत्थाइसु दाणग्गहसंपओगोहा॥

एवं विहालोयणेण सुद्धो होइ। अन्नम्मि वेलाए विभागेण अद्धमासपरेणागयस्स। विभागालोयणा निरइयारस्स वि। एवं 'सगणाओ' कारणनिग्गयस्स आलोइए सुद्धी; 'परगणागयस्स वि य'त्ति। सगणो एगसंभोइया, परगणो अन्नसंभोइया। ते संविग्गा[11] वा असंविग्गा वा। संविग्गाओ *आगयस्स निरइयारस्स* वि अवस्समेव विभागालोयणा। आलोयणाए[12] य सुद्धो। 'उवसंपय' त्ति। सा य[13] उवसंपया[14] पंचविहा। तं-जहा–सुओवसंपया, सुहदुक्खोवसंपया, खेत्तोवसंपया, मग्गोवसंपया, विणओवसंपया य त्ति। पंचविहाए वि तप्पढमयाए उवसंपज्जमाणेण निरइयारेणावि आलोयणा विभागेण दायव्वा। सो य आलोयणाए चेव सुद्धो। 'विहारे' त्ति एगसंभोइया[15] फड्डुगपई[16] गीयत्थायरिया एगाह-पणग-पक्ख-चउम्मास[17]-संवच्छरिएसु जत्थ वा मिलन्ति तत्थ निरइयारा वि विहारालोयणं देन्ति। अन्नोन्नस्स विहारे वि आलोयणाए सुज्झइ[18]। सव्वत्थ 'निरइयारस्से'त्ति एयं पयं सम्बज्झइ। एवमेयं[19] आलोयणारिहं भणियं॥

९. इयाणिं पडिक्कमणारिहं भण्णइ। जेसु ठाणेसु खलियस्स मिच्छादुक्कडारोवणा होइ तट्ठाणसरूव[20]निरूवणत्थं[21] गाहा भण्णइ। 'गुत्तिसमिइपमाय' इच्चाइ। गुत्ति त्ति तिन्नि गुत्तिओ मण-वइ-कायसन्नाओ। समिईओ इरिया-भासा-एसणा-आयाणनिक्खेवण[22]-उच्चारपासवणाइपरिट्ठवण–नामाओ पंच। एएसु अट्ठसु ठाणेसु पमाओ कओ होज्जा[23]। मणेण दुच्चिन्तियाइं[24]। वईए दुब्भासियाइं, काएण दुच्चेट्ठियाइं। इरियाए कहंकहेन्तो[25] गच्छेज्जा, भासाए ढड्ढरगिहत्थ-भासाई, एसणाए भिक्खा[26]-गहणकाले अणुवउत्तो,[27] न पमज्जइ आयाण-निक्खेवेसु, अप्पडिलेहिय-थंडिले उच्चाराइ परिट्ठवेज्जा[28]। 'गुरुणो[29] आसायण' त्ति। गिणाति[30] सत्थमिति गुरू तस्स आसायणा कया। का? अहिक्खेवो[31] परिभवो वा जच्चाइगुणहीणस्स। आयो[32] नाणाइतियं तस्स साडणा अवणयणं विणासो आसायणा भण्णइ। आयरियाहिक्खेव-दारेणाहिक्खे

1 A निवस॰। 2 B ॰गुंचण। 3 A कयं। 4 A गच्छायो। 5 B नास्ति। 6 A जम्मणणिक्ख॰। 7 ॰यणापयं। 8 ॰क्कंतो जइसमु॰। 9 A अप्पा। 10 B ॰णेसुं। 11 A ॰विग्गा अ॰। 12 B आलोएइ य। 13 B नास्ति। 14 B उवंसं॰। 15 B ॰इगा। 16 A ॰पई य; B ॰वती। 17 A ॰मास। 18 B विसु॰। 19 B ॰मेतं। 20 A ॰स्सरू॰। 21 A ॰णत्था। 22 A निक्खमण। 23 B होई। 24 A ॰याए। 25 B कहंतो। 26 A ॰क्खग॰। 27 A उवउत्तो। 28 A रिट्ठा॰। 29 B ॰रुआसा॰। 30 B णाइ स॰। 31 B अवि॰। 32 A आओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घन्तो आयं अप्पणो साडेइ[1] तुसिणीय-हुंकार-जाइ-क-म्माइहिं। अहवा तिविहा आसायणा—मणेण पओसाइ, वायाए अन्तरभासाइ, काएण जमलिय[2]-पुरोगमण-संघट्टणाइ। 'विणय-भंगे'[3] त्ति। विणओ अब्भुट्ठाणासणदाणञ्जलिपग्गहवन्दणाईओ। तस्स य[4] भंगे। 'इच्छाईणम-करणे' त्ति। इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवस्सिया य निसीहिया आपुच्छणा य पडिपुच्छा छन्दणा य निमन्तणा उवसंपयाओ[5] य गिज्झन्ति। एयासिमकरणे। लहुसगं वा मुसावायं वएज्जा। जहा—

पयला ओल्ले मरुए पच्चक्खाणे य गमणपरियाए। समुदेससंखडीओ खुड्डग[6]परिहारिय मुहीओ॥
अवसगमणे दिसासुं[7] एगकुले चेव एक्क-दव्वे वा[8]। एए सव्वे वि पया लहुसमुसाभासणे होन्ति॥

लहुसाऽदिण्णं पुण सुहुमं जत्थ जत्थ पणगाविर्त्ती[9]। तं-जहा—तण-डगल[10]-छार-मल्लग-लेव-इत्तिरि-उग्गहण[11]-चिट्ठणासु[12] लेव-इत्तिरि-उग्गहणट्ठाणेसु सुत्तापसेण मासलहुं। तहावि इह लहुस-गादिण्णं चेव भण्णइ। लहुसमुच्छा पुण ईसीसि[13] ममत्तं जत्थ सुहुमं, जहा—कागाइ-साण-गोण कप्पट्ठग[14]-सारक्खण-ममत्ताईसु दव्वे लहुसमुच्छा। खेत्ते ओवास[15]-संथार-कुल-वसहि-गाम-नग-रज्जाईसु। काले पुण मासकप्पोवरि निवासाइ। भावेण[16] राग-दोसाइ। एत्थ जे मासलहु-यट्ठाणा ते सव्वे घेप्पन्ति[17]।

१०. 'अविहीइ-कास-जंभिय' इच्चाइ। अविहीए हत्थमदाऊण कासइ मुहपोत्तियं[18] वा। एवं जंभाइय-छीईएसु वि। 'वाय'[19] त्ति एयं कम्म-सद्देण सम्बज्झइ। तं दुविहं–उड्डं उड्डोयाई,[20] अहो कुच्छिय-सद्दो। उड्डोए हत्थो दायव्वो मुहपोत्तिया वा[21]। कुच्छिय-सद्द-निग्गमे पुण[22] पुयावकड्डण[23]–लम्बणेण। एस विही, एयव्वइरित्तो[24] अविही। 'असंकिलिट्ठकम्मं' पुण[25] छेयण-भेयण-संघंसण-पीलण-अभिघाय-सिंचण-कायखाराइ-असुसिर-सुसिराणन्तर-परंपरभेयभिन्नं। 'कन्दप्पो' वाइओ काइओ वा। 'हासं' पसिद्धमेव। 'विगहा'[26] इत्थि-भत्त-चोर-जणवयाइया। 'कसाया' कोहाई। 'विसयाणुसंगो' सद्द-फरिस-रस-रूव-गन्धासेवणमिति।

११. 'खलियस्स य' इच्चाइ। 'खलियस्स' अइयारावन्नस्स। सो य अइयारो सहसक्कारकओ[27] अणाभोगकओ[28] य। 'च' सद्दो पडिक्कमणारोवणं समुच्चिणइ। 'सव्वत्थ वि' त्ति सव्वपएसु। दंसण-नाणचरित्ततवसमिइगुत्तिन्दियाइसु खलियस्स। 'हिंसमणावज्जओ'[29] त्ति अकरेन्तस्स जयणा-जुत्तस्स[30]। सहसक्काराणाभोगलक्खणं चेयं—

पुव्वं अपासिऊणं छूढे पाए[31] कुलिंगजं पासे। न य तरइ नियत्तेउं जोगं सहसाकरणमेयं॥
अन्नयर-पमाएणं असंपउत्तस्स णोवजुत्तस्स। इरियाइसु भूयत्थेसु वट्टओ हो अणाभोगो॥

एवं सहसक्काराणाभोगेहिं[32] हिंसमणावज्जमाणो जयणोवउत्तो अइयारमावन्नो वि मिच्छादुक्कड-परिणओ सुद्धो।

१२. 'आभोगेण वि'च्चाइ। 'आभोगेणे' त्ति परिफुडबुद्धीए वि। 'तणुएसु' थोवेसु, 'नेहा-इसु' त्ति सम्बन्धो। नेहो कप्पट्ठग-सन्नि-सन्नायगाइसु। भयं इहलोग-परलोग-आयाण-अकम्हा-आजीव-असिलोग-मरण-सन्नियं। सोगो सच्चित्ताचित्तमीसदव्वाण संजोगेण विओगेण य कओ होज्जा। 'बाउसत्तं' सरीरसुस्सूसापरायणत्तं हत्थपायाइधोवणदारेण। 'आइ' सद्देण कुसील-

1 B साडेति। 2 A जाम०। 3 B भंगो। 4 B वा। 5 A ०न्तणोवसं०। 6 A सं-खडी खुड्डएय। 7 A ०सासु। 8 A एगदव्वे य। 9 B ०वत्ती। 10 A ०डगलग०। 11 A ०उग्गहचि०। 12 B चिट्ठाणाले०। 13 B इसिसि। 14 B कप्पट्ठर०। 15 A ०वासं। 16 A भवे०। 17 B घिप्पं०। 18 B मुहवोत्ति०। 19 B वायन्ति। 20 B उड्डुयाई। 21 B उड्डोए हत्थो मुहपोत्तियं वा दिज्जइ। 22 नास्ति। 23 B पुयतावकड्डणं। 24 B एतव्वतिरित्तो। 25 A छेयणपीलणभेयणघंसण। 26 B विकहा। 27 B सहस्स०। 28 B० भोगओ। 29 A हिंसप्पमाणा०। 30 A उत्तस्स। 31 A णए। 32 B०सावकरणा०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासत्थो-सन्न-संसत्ता घेप्पन्ति। 'कन्दप्पहासविगहा' पुव्ववक्खाणिया । 'आइ' सद्देण कसायविसयाणुसंगा गहिया। सव्वेसु वि एएसु तणुएसु 'णेयव्वं' जाणियव्वं । 'पडिक्कमणं' पायच्छित्तं ति भणियं होइ। एयं[1] पडिक्कमणारिहं भणियं ॥ २॥

१३. इयाणिं तदुभयारिहं । 'संभमभय'-इच्चाइ। 'संभमो' हत्थी-उदग-अगणिमाइओ[2]। 'भयं' दस्सु-मिलक्खु-वोहिय-मालवाइ-सगासाओ। 'आउरो' दिगिंछा-पिवासाईहिं। 'आवई' चउव्विहा–दव्वखेत्तकालभावावई। दव्वावई दव्वं दुलहं। खेत्तावई वोच्छिन्नमडम्बाई[3]। कालावई ओमाई[4]। भावावई गुरुगिलाणाई। 'सहसाणाभोगा' पुव्वुत्ता । एएसु हिंसाइदोसमावन्नओ वि जयन्तस्स 'अणप्पवसओ' सव्वेहिं[5] कारणेहिं, 'सव्ववयाइयारं' करेज्जा। पलायमाणो पुढविजलजलणपवणाइवणस्सइदुरूहणं वा करेज्जा। बि-तिय-चउ-पञ्चिन्दियं वा विराहेज्जा। मुसावायादिन्नादाणमेहुणपरिग्गहराइभोयणअद्धाणकप्पलेवाडाइयं[6] वा आवज्जेज्जा। एवं उत्तरगुणेसु वि। एवमाइ अइयारावन्नस्सावि। 'तदुभयं' आलोयणा गुरूणं। पच्छा गुरुसंदिट्ठो मिच्छादुक्कडं ति भणमाणो सुद्धो। 'आसंकिए चेव' त्ति कयमकयं वा जत्थ परिच्छेयं काउं न तरइ तमासंकियं। तत्थ य सव्वएएसु वि तदुभयपायच्छित्तकारी सुज्झइ।

१४. 'दुच्चिन्तिय' इच्चाइ। 'दु'सद्दो कुच्छाभिहाणे। संजमविराहणाजायं कुच्छियं चिन्तियं दुच्चिन्तियं। एवं 'दुब्भासियं दुच्चिट्ठियं'। 'आइ' गहणेण दुप्पडिलेहिय-दुपमज्जियगहणं। 'बहुसो' अणेगसो 'उवउत्तो वि न याणइ' त्ति सम्बज्झइ। उवओगरूवपरिणओ[7] वि साहू न संभरइ पुव्वकालकयमइयारट्ठाणं। आलोयणाकाले 'देवसियाइ अइयारं'[8]; आइग्गहणेण राइय-पक्खिय-चाउम्मासिय-संवच्छरियाइयारा घेप्पन्ति।

१५. 'सव्वेसु य' इच्चाइ। 'सव्व'ग्गहणेणं सव्वाववायट्ठाणा सूइया। पढमं उस्सग्गपयं[9] विइयं अववायपयं। अवराहेसु अइयारेसु 'दंसणणाणचरणावराहेसु'। 'आउत्तस्से'त्ति कारणे जयणाए गीयत्थो आसेवओ आउत्तो भण्णइ। तस्सेवमसेसाववाय[10]-कालाणुट्ठाणपरस्स आउत्तस्स 'तदुभय' पायच्छित्तं[11] होइ। तर्हि चेवाववायकाले 'सहसक्कारेण' जं कयं, तं आइसद्दसंगहियाणाभोगेण य तदुभयमिति। एयं च[12] तदुभयारिहं ॥ ३॥

१६. इयाणिं विवेगारिहं भण्णइ। 'पिंडोवहिसेज्जा'इच्चाइ। 'पिंडो' संघाओ असण-पाण-खाइम-साइम-भेयभिन्नो। 'उवही' ओहिय-उवग्गहिय-भेओ। 'सेज्जा' उवस्सओ। आइसद्देण डगलग-छार-मल्लग-ओसहाणि घेप्पन्ति। 'कडजोगी' गीयत्थो भण्णइ। पिंडेसणा-वत्थ-पाएसणा[13]-छेयसुयाईणि[14] सुत्तत्थओ अहीयाणि जेण सो गीयत्थो। तेणोवउत्तेण गहियं सुओवएसाणुसारोवओगपरिणामपरिणएणं ति भणियं होइ। 'पच्छा नायमसुद्धं'। केण दोसेण असुद्धं[15] नायं भण्णइ। उग्गमउप्पायणेसणाहिं संकियमसंकियं वा दोसवत्तेण 'सुद्धो' 'निरइयारो'। विहाणेणं' विहिणा सुओवइट्ठेण 'विगिंचमाणो' परिट्ठवेन्तो सुद्धो हवइ।

१७. 'कालद्धाणाइच्छिय' इच्चाइ। 'कालाइच्छियं' पढमपोरिसीगहियं[16] चउत्थपोरिसिं जाव जं धरिज्जइ। अद्धजोयणाइरेगाओ आणीयं नीयं वा। असढयाए सढयाए य। विगहा-किड्डा-इन्दियमाईहिं सढो, गिलाण-सागारिय-थंडिल्ल-भयाइक्कमणेण य[17] असढो। विहीए विगिञ्चन्तो सुद्धो। अणुग्गएसूरे अत्थमिए वा जं गहियमसणाइ असढेण गिरिराहुमेहमहियारयावरिए

1 A एवं। 2 B असणि०। 3 A० मंडवा०। 4 B० मादी। 5 B०हिंत्ति। 6 B ०वाडाइ। 7 B ०णत्तो। 8 B० सियाइयारं। 9 A उवस०। 10 B० वाद। 11 B पच्छित्तं। 12 A एवं च। 13 B० पाएसणा सेज्जाछेय०। 14 A सुयाइयं। 15 A० ण सुद्धं। 16 B पोरुसी०। 17 B नास्ति।

सवियरि उग्गयबुद्धीए अणत्थमियबुद्धीए वा गहियं होज्जा; पच्छा य अणुग्गए[1] अत्थमिए वा[2] नायं तओ[3] विहीए विगिञ्चन्तो सुद्धो। 'कारणे' वा गहियं गिलाणायरियबाल[4]पाहुणयदुल्लहस-हस्सदाणाइ-कारणे नाणाविहे जं गहियं विहिभोयणे य कए जइ तं उव्वरियं तओ विहीए अणा-वायमसंलोगाइयाए विगिञ्चन्तो। 'भत्ताइ' भत्तग्गहणेण असणं, आइग्गहणेण पाण-खाइम-साइ-माणि वि घेप्पन्ति। सो य[5] एवं करेन्तो सुद्धो हवइ त्ति[6] विवेगारिहं भणियं ॥ ४ ॥

१८. इयाणि काउस्सग्गारिहं भण्णइ—'गमणागमण'—इच्चाइ। उवस्सयाओ गुरुमूलाओ वा 'गमणं, आगमणं' बाहिराओ आयरियसमीवं। 'विहारो' सज्झायनिमित्तं जं अन्नत्थगमणं। एत्थ सव्वहिं चेव इरियावहिया काउस्सग्गो पायच्छित्तं कीरइ। 'सुयम्मि' उद्देससमुद्देसाणुन्ना-पट्ठवणपडिक्कमणसुयक्खंधंगपरियट्टणाइएसु सुए काउस्सग्गो कीरइ। 'सावज्जसुमिणे'[7] पाणा-इवायाइ। आइसद्देण अणवज्जसुमिणे[8]वि। कम्हेंति। 'च'सद्देण दुन्निमित्त-दुस्सउण-पडिहणण-निमित्तं अट्ठुस्सासुस्सग्गकरणं। 'नावा' चउव्विहा—समुद्दनावा, उज्जाणी, ओयाणी, तिरिच्छ-गामिणी। आइमा समुद्दे। पच्छिल्ला तिन्नि नईए[9]। उज्जाणी पडिसोत्तगामिणी। ओयाणी पुण अणुसोयगामिणी। तिरिच्छगामिणी णदिं[10] छिन्दन्ती गच्छइ। 'णईसंतारो'[11] चउव्विहो। सो पुण पाएहिं संघट्ट-लेव-उवरिलेवेहिं तिविहो होइ, बाहा-उडुवाईहिं य। सव्वत्थ 'पायच्छित्तं' जयणोवउत्तस्स[12] विहीए 'काउस्सग्गो' पायच्छित्तं होइ।

१९. 'भत्ते पाणे' इच्चाइ। 'भत्तपाणाइ' पसिद्धं चेव। 'सयणं' जत्थ सुप्पइ। 'आसणं' जत्थ निविसिज्जइ। 'अरहन्तसेज्जा' चेइयघरं। 'समणसेज्जा' पडिस्सओ। सव्वेसु एएसु[13] भत्ताइस-मणसेज्जापज्जवसाणेसु हत्थसयाओ परेण गमणे आगमणे वा कए पायच्छित्तं[14] काउस्सग्गो। सो पणुवीसुस्सासो[15] कायव्वो। उच्चारिज्जइ त्ति 'उच्चारो'। पस्सवतीति 'पस्सवणं'[16]। दोसु वि परिट्ठविएसु हत्थसयब्भन्तरे परेण वा हत्थमेत्ते वि काउस्सग्गो पणुवीसुस्सासो कज्जइ।

२०. 'हत्थ सय' इच्चाइ। अणन्तरगाहा-जुयलेण काउस्सग्गं पच्छित्तमुत्तं; तं पुण काउ-स्सग्गं किं परिमाणं करेन्ति[17]। अओ ऊसास-परिमाण-निरूवणत्थाओ तिन्नि गाहाओ भण्णन्ति। गाहाए पढमद्धं पढियसिद्धं। 'पाणवहाइसुमिणए' त्ति करणकारावणाणुमईहिं सुमिणे[18] पाणा-इवाओ कहो ओज्जा। तत्थ ऊसाससयपरिमाणं[19] तुल्लं। 'चउत्थ'मिति मेहुण-[20]सुमिणयदंसणे अट्ठसयऊसासपरिमाणं काउस्सग्गं[21] करेज्जा।

२१. 'देसियराइय' इच्चाइ। जहासंखेण ऊसासपरिमाणकहणमेयं। दिवसावसाण-पडिक्क-मणे पच्छिमकाउस्सग्गतिए पढमे दो उज्जोया चिन्तिज्जन्ति। पच्छिमेसु दोसु एक्केक्को। एवमेए चत्तारि उज्जोया। एसो य उज्जोयदण्डगो पणुवीसूसासपरिमाणेण छिज्जइ। तओ पणुवीसा चउहिं उज्जोएहिं गुणिया ऊसाससयं भवति। रयणिपहाय-पडिक्कमणे पुण पन्नासं ऊसासा सयस्स अद्धेण होन्ति। तत्थ दोहिं उज्जोएहिं पणुवीसा गुणिज्जइ। पक्खपडिक्कमणे बारस उज्जोया। तेहिं पणुवीसा गुणिया होन्ति ऊसासाणं तिन्नि य सयाओ। चाउम्मास-पडिक्कमणे वीसाए उज्जोएहिं पणुवीसा गुणिज्जइ, पंचसया होन्ति। वारिसिय पडिक्कमणे चत्तालीसाए उज्जोएहिं पणुवीसा गुणिया सहस्समुस्सासाणं होइ। अन्ने अट्ठ ऊसासा नमोक्कारे कज्जन्ति। तओ अट्ठुत्तरं सहस्सं होइ। सो य नमोक्कारो संवच्छरिए बहुओ कालो निव्विग्घेणं गओ त्ति चिन्तिज्जइ मंगलत्थं पज्जन्ते।

---

1 B॰ग्गओ। 2 A॰मिओ। 3 B ततो। 4 B 'बाल'नास्ति। 5 B च। 6 B नास्ति। 7-8 A ॰मिणो। 9 B नदीए। 10 A नदी। 11 A नदि सं॰। 12 B जइणो॰। 13 B एतेसु। 14 A पयच्छित्तं। 15 A पुण॰। 16 A पस॰। 17 B करेउ त्ति। 18 A सुमिणोत्ति। 19 A ऊसासयप॰। 20 A मिहुण॰। 21 B उस्स॰।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. 'उद्देस' इच्चाइ। सुत्ते उद्देस-समुद्देस-अणुन्नासु सत्तावीसं ऊसासा उस्सग्गो कीरइ। सुयक्खन्धङ्गपरियट्टणुत्तरकाले य सत्तावीसुस्सासपरिमाणुस्सग्गकरणं। पट्ठवणपडिक्कमणे अट्ठूसासगपरिमाणुस्सग्गकरणं। आइसद्देण दुन्निमित्तावसउणपडिघायनिमित्तं अट्ठूसासमुस्सग्गं करेइ। एयं काउस्सग्गारिहं भणियं ॥ ५ ॥

२३. 'उद्देसज्झयणे' इच्चाइ। उस्सग्गाभिहाणाणन्तरं तवारिहं भण्णइ। तत्थ नाणायाराइयारो दुविहो—ओहओ, विभागओ य। तत्थ विभागेण उद्देसग-अज्झयण-सुयक्खन्ध-अङ्गाणं कमसो य परिवाडीए कमेण, पमाइस्स कालाइक्कमणाइसु त्ति सम्बज्झइ। पमाइगहणं, काल-विणय-बहुमाण-उवहाण-अनिण्हवण-विवज्जया अइयारो होइ। वञ्जणभेय-अत्थभेय-तदुभयभेया वा कया अइयारो होइ नाणस्स। एएसिं अट्ठण्हपयाणमन्नयरट्ठाणट्ठिओ नाणाइयारे वट्टइ। अकाले सज्झायकरणं असज्झाइए वा करणं; एस कालाइयारो। विणयं न पउञ्जइ, जच्चाइएहिं वा मयावलेवलित्तो विणयभंगं करेइ, हीलइ वा; एवमाइ विणयाइआरो। सुए गुरुम्मि य बहुमाण-भत्तीओ न करेइ। भत्ती उवयारमेत्तं। बहुमाणो ओरसो सिणेहसम्बन्धो आयरियाणं उवरि सो वा न कओ। उवहाणं तवचरणं आयंबिलाइयं न करेइ। निण्हवणं अवलवणं। जस्स सगासे अहीयं तदुद्देसेण भणइ 'नाहं तस्स सगासे अहिज्जिओ'। जुगप्पहाणं वा सूरिं समुद्दिसइ; सयमेव वाहिज्जियं भणइ। एसा निण्हवणा। वञ्जयइ जेण अत्थो तं वञ्जणं। सुत्तस्स सन्ना। तं च सुत्तं मत्तऽक्खरबिन्दूहिं ऊणमइरित्तं वा करेइ, सक्कयं वा करेइ, अन्नाभिहाणेण वा भणइ। एस वञ्जणभेओ। एवमत्थभेय-तदुभयभेया वि नेया।

२४. 'निव्विगइय'—इच्चाइ। उद्देसगाइयारे निव्विगइयं[1]। अज्झयणाइयारे पुरिमड्ढं। सुयक्ख[2]-न्धाइयारे एगासणयं[3]। अंगाइयारे आयंबिलं। अणागाढे एयं। आगाढे पुण एएसु चेव ठाणेसु[4] पुरिमड्ढाइ-अब्भत्तट्ठ-पज्जवसाणं। अत्थसुणणे वि पुरिमड्ढाइ-खमण-पज्जन्तमेएसु चेव ठाणेसु। एयं विभागपच्छित्तं भणियं। इयाणिं ओहेण[5] भन्नइ। —

२५. 'सामन्नं पुण' इच्चाइ। सव्वम्मि चेव सुत्ते ओहेण अविसेसिए आयामं। अत्थे य अविसेसिए अब्भत्तट्ठो। कमेण अहिज्जन्तो न ताव पावइ तं सुत्तं अत्थं वा परियाओ वा न पूरइ सो अपत्तो (१); अवरो अपत्तो अजोगो। तिंतिणिचवलचित्त[6]गाणंगणियाइ-णेगदोस-संजुत्तो (२); अन्नोवि अपत्तो[7] वयसा सुएण वा (३) एएसिं सव्वेसिं चेव जो वायणं देइ उद्देस-समुद्देसणुन्ना वा करेइ तस्स वि खमणं। 'च' सद्देण जइ पत्तं न वाएइ सुएण, पत्तं वा जोगं न वाएइ, वत्तं वा वयसुएहिं। एएसिं च उद्देसणादि जो न करेइ वा तस्स अब्भत्तट्ठो।

२६. 'कालाविसज्जण'-इच्चाइ। कालाविसज्जणं कालस्स अपडिक्कमणं। 'आइ'सद्देण अणुओगस्स[8] अविसज्जणं। 'मंडलि-वसुहा' मंडलि-भूमी सा तिविहा[9] सुत्ते अत्थे भोयणे एएसिं तिण्हवि अप्पमज्जणे निव्वीयं। सुत्ते अत्थे वा निसेज्जं न करेइ। अक्खे वा न रएति तो खमणं, 'च' सद्दा वंदण-काउसग्गो ण करेति तहावि खमणं चेव।

२७. 'आगाढाणागाढम्मि' इच्चाइ। जोगो दुविहो–आगाढो अणागाढो य। आगाढे सव्वभंगो देसभंगो य। अणागाढे वि सव्वभंगो देसभंगो य। सव्वभंगो नाम आयंबिलं न करेइ विगईओ सेवइ। देसभंगो नाम विगई भुञ्जेऊण पच्छा काउस्सग्गं करेइ। सयमेव वा काउस्सग्गं काऊण भुञ्जइ, विगई वा एगट्ठं गेण्हइ[10]। अभणिओ[11] वा 'संदिसह काउस्सग्गं करेमि'त्ति

1 B ०व्वीईयं। 2 A ०यखं०। 3 A एक्कास०। 4 B ट्ठाणे०। 5 A ओहेणं। 6 B तिंतिणियचलचि०। 7 A अव्वत्तो। 8 A अणिओ०। 9 A तिहा। 10 B गिह्णइ। 11 A अभिणि०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणइ। आगाढसव्वभंगे छट्ठं, देसभंगे चउत्थं । अणागाढसव्वभंगे चउत्थं, देसभंगे आयंबिलं। एस नाणाइयारो भणिओ।

इयाणिं दंसणाइयारो भन्नइ—

२८. 'संकाइयासु देसे' इच्चाइ। संका आइ जेसिं पयाणं ताइं इमाइं संकाइयाइं। तेसु संकाइएसु अट्ठसु पएसु। काणि पुण ताणि? इमाणि भन्नन्ति। [१] संका, [२] कंखा, [३] वितिगिञ्छा[1], [४] मूढदिट्ठी, [५] अणुववूहा,[2] [६] अथिरीकरणं, [७] अवच्छलं, [८] अप्पभावणया[3]। संसयकारणं संका-देसे य[4] सव्वे य। तत्थ देसम्मि जह—तुल्ले जीवत्ते किह भविया अभविया[5], अन्ने एवमाइ संकादेसे। सव्वे—पागय[6]भासबद्धत्ता मा होज्जाऽकुसलपरिकप्पियं। दिट्ठन्तो पेज्जकप्पट्ठो। एत्तो कंखा दुविहा—देसे, सव्वे य बोधव्वा। देसे कुतित्थियमयं कंखइ। एत्थवि अहिंसा मोक्खो य दिट्ठो त्ति। सव्वे पुण कंखइ सव्वे कुतित्थिमए[7]। दिट्ठंतो रायामच्चा आसावहिया पसत्थमपसत्था । वितिगिञ्छा[8] देसे सव्वे य। जहा भइमो[9] परिसो परिकेसो अम्हाण केसलोयाइ कीरए होज्जा न[10] वा मोक्खो। विदुगुञ्छा वा-विद्वज्जाने विदः[11] साधवः। ते दुगुञ्छइ मण्डलि-मोय-जल्लाइएहिं। मूढदिट्ठी परतित्थियपूयाओ[12] अइसयमयाणि वा सोऊण मइवामोहो होज्जा। उववूहा दुविहा—पसत्था अप्पसत्था य। पसत्था साहूसु नाणदंसणतवसंजमखमणवेयावच्चाइसु अब्भुज्जयस्स उच्छाहवड्ढणं उववूहणं । अप्पसत्था मिच्छत्ताइसु[13] । थिरीकरणं पसत्थमप्पसत्थं च[14]। विसीयमाणस्स चरित्ताइसु थिरीकरणं पसत्थं। असंजमे थिरीकरणं अप्पसत्थं। वच्छल्लमवि एवमेव दुविहं—आयरिय-गिलाण-पाहुण-असहु[15]-बाल-बुड्ढाईणं[16] आहारोवहिमाइणा समाहिकरणं पसत्थं । ओसन्नाइ[17]-गिहत्थाणं अप्पसत्थं। पभावणा वि एवमेव[18]। तित्थयर-पवयण-निव्वाण-मग्गपभावणा पसत्था। मिच्छत्त-अण्णाणाईणं[19] अप्पसत्था। एवं अट्ठ वि वित्थरओ परूवेऊण। तत्थ संका देसे सव्वे य। एवं कंखा वि। एवं वितिगिञ्छा[20] दुगुञ्छा वि। एवं मइ[वा]मोहो वि। अप्पसत्थुववूहा देसे सव्वे य। एवं वच्छलं पि देसे सव्वे य। अप्पसत्थप्पभावणा वि देसे सव्वे य। तत्थ चउसु वि संकाइएसु देसे खमणं। मिच्छोववूहणाइसु य देसे[21] खमणं। च सद्देण थिरीकरण-वच्छल्ल-प्पभावणे मिच्छत्ताईणं देसे खमणं। एवं ओहओ। विभागओ[22] पुण संकाइसु अट्ठसु वि देसे भिक्खुस्स पुरिमड्ढं। वसभस्स एक्कासणगं[23] । उवज्झायस्स आयंबिलं । आयरियस्स अब्भत्तट्ठो ।

२९. 'एवंचिय' इच्चाइ। एवं[24] चेवाणन्तरुद्दिट्ठं पुरिसविभागेण पच्छित्तं पिहं पिहं। जइणं साहूण[25] उववूहणं न करेइ। आइसद्देण[26] थिरीकरणं वच्छलं पभावणं वा पवयणजइ[27]माइयाणं ण करेइ। भिक्खुस्स पुरिमड्ढं। वसभस्स[28] एक्कासणयं[29]। उवज्झायस्सायंबिलं। गुरुस्स अभत्तट्ठो। एयं पढमद्धवक्खाणं। पच्छद्धं पुण उवरिमगाहाए सम्बज्झइ[30]। सा य एसा गाहा—

३०. 'परिवाराइ' इच्चाइ। 'परिवारनिमित्तं'ति सहायनिमित्तं ति जं भणियं होइ। 'आइ'-सद्देण आहारोवहि-निमित्तं वा। तप्पसाएण आहारोवहि-सेज्जाओ वा लभिस्सन्ति त्ति काउं पासत्थोसन्नकुसीलसंसत्ताहाछन्दणियाणं[31] उवरि ममत्तं करेइ। सावग-सन्नायगाणं वा सव्वेसिं

1 B विगिंछा। 2 A अण०। 3 B अप०। 4 B 'य' नास्ति। 5 B० विए। 6 B पागइय। 7 B ०तित्थ०। 8 B विइगिंच्छा। 9 A हइमो। 10 B ण। 11 B विदवः। 12 A पूयाअइ०। 13 A मिच्छाइसु। 14 B वा। 15 B ०णग सस्तु असहु। 16 B ०दीणं। 17 A ०ण्णइ। 18 A एमेव। 19 B ०त्तऽन्ना०। 20 B विगिंछा। 21 B ०वूहणा देसे। 22 A विभागाओ। 23 B एगास०। 24 B एयं। 25 A जइ साहू। 26 B आदि०। 27 A जति०। 28 B वसहस्स। 29 B एगास०। 30 B ०ज्झति। 31 B ०च्छंदनीइआणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा परिपालण-सम्भोग-संवास-सुत्तत्थदाणाणि। जइ करेइ वच्छल्लं तो भिक्खुणो णिव्वीयं[1]। वसभोवज्झायगुरूणं[2] पुरिमेगासणायामाइं जहासंखं। अह पुण इममालम्बणं करेइ। 'साहम्मिओ'त्ति एसो संजमं वा करेसइ[3]। 'वा'सद्देण कुलगणसंघगिलाणकज्जाइएसु पडितप्पिस्सइ त्ति[4]। एवं विहाए बुद्धीए सव्वहिं सुद्धो। एवं दंसणायारपच्छित्तं भणियं॥

इयाणिं चरित्तायारपच्छित्तं भन्नइ—

३१. 'एगिंदियाण' इच्चाइ। एगिन्दिया पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-पत्तेयवणस्सई। एएसिं पंचण्ह वि पिहु पिहु संघट्टणे निव्वीइयं[5]। आउकायस्स संघट्टणे[6] घड-गोलंकय-वारगाइ-ठियस्स, पायहत्थाइचालियस्स ईसिं परियावो, पुण गाढतरचालियस्स उद्दवणं। पिहु परितावणहणणपाणाईसु। एएसिं च परितावणा दुविहा अणागाढा आगाढा य। तत्थ अणागाढाए पुरिमड्ढं। आगाढाए एक्कासणयं। उद्दवणे[7] पुण आयामं पंचसु वि।

३२. 'पुरिमाई' इच्चाइ। अणन्तवणस्सइ-बिय-तिय-चउरिन्दियाण संघट्टण-अणागाढ-आगाढ-परिताव[8]-उद्दवणेसु पुरिमाइ-खमणन्तं[9] जहासंखं। पञ्चिन्दियसंघट्टणे एक्कासणयं। अणागाढ-परितावणे आयामं। आगाढपरितावणे[10] खमणं। उद्दवणे एक्ककल्लाणगं। पमायसहियस्स।

३३. 'मोसाइसु' इच्चाइ। मुसावाय-अदत्त-परिग्गहेसु मेहुणवज्जिएसु। दव्वाइवत्थुभिन्नेसु त्ति। मुसावाओ चउव्विहो—दव्वखेत्तकालभावेहिं। दव्वओ जहण्णमज्झिमुक्कोसो। एवं खेत्तकालभावेसु वि तिविहो। एवं[11] जहा मुसावाओ चउव्विहो पुणो य एक्केक्को तिविहो। तहाऽदत्तपरिग्गहा वि। एत्थ य दव्वाइभेयभिन्ने चउव्विहे वि[12] मुसावाए जो जहन्नभेओ तहिं सव्वत्थ एक्कासणयं, मज्झिमे सव्वहिं आयामं, उक्कोसे वि चउव्विहे खमणं। एवं अदत्त-परिग्गहेसु वि पच्छित्तं दायव्वं।

३४. 'लेवाडय' इच्चाइ। लेवाडय-परिवासे[13] अब्भत्तट्ठो। सुक्कसन्निहिएसु वि—सुंठिहरडइ-बहेडगाइसु अब्भत्तट्ठो। इयरा गिल्लसन्निही—गुलकक्कयघयतेल्लाई तीए छट्ठं। सेस निसिभत्ते अट्ठमं। ओहसुत्ताओ[14] जमन्नं तं सेसं। किं चोहसुत्तं? पढमभंगो। सेसा तिन्नि भंगा सेसनिसिभत्तसद्देण भवन्ति। एवमेयं मूलगुणाइयारे मेहुणवज्जिए पच्छित्तं भणियं। मेहुणाइयारस्स पुण मूलट्ठाणे भणिहिई।

इयाणिं उत्तरगुणाइयारपच्छित्तं भन्नइ। ते य उत्तरगुणा पिंडविसोहीयाईया। तत्थ पिंडविसोही तिसु ठाणेसु हवइ। उग्गमे उप्पायणाए एसणाए य। तहा संजोयणपमाणइंगालधूमकारणविभागेण य विसुद्धी भवइ[15]। एत्थ य उग्गमो सोलसभेओ। ते य इमे सोलस भेया आहाकम्माई[16]। एत्थ सोलससु दोसेसु जत्थ जत्थ सरिसं पच्छित्तं तं तं दोसं गाहाए संपिंडिय कहयइ। तहा उप्पायणाए वि सोलस। तत्थ जे सरिसपच्छित्ता ते समुच्चिणइ। एवं एसणादोसेसु वि दससु सरिसट्ठाणाइं उवसंहरइ। एगट्ठी किच्चा। एए सव्वे वि पिंडनिज्जुत्तिणुसारेण भाणियव्वा। इह पुण पच्छित्तमेव केवलं विहिज्जइ।

आहाकम्मे खवणं।

उद्देसियं दुविहं—ओहे विभागे य। परिमियभिक्खदाणरूवं ओहो सामन्नमेगपगारं अविसेसियं तत्थ पुरिमड्ढं। विभागे तिन्नि भेया उद्देसो, कडं, कम्मं। एए[17] तिन्नि वि[18] पत्तेयं

1 B निव्वीइयं। 2 A वसभोउज्झाय। 3 B करिस्सइ। 4 A ०तप्पस्सइ। 5 A ०व्विईयं 6 A आउक्कायसंघट्टणं। 7 A ओदवणे। 8 B परियावण। 9 B खवणं। 10 B परियावे 11 B एवं जरा। 12 A 'वि' नास्ति। 13 A ०वासेइ। 14 B ओहमुत्ता०। 15 B होइ 16 B कम्माती। 17 A एएसिं। 18 A ०ण्हवि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउहिं मेएहिं भिज्जन्ति[1]। तं जहा—उद्देसुद्देसियं, उद्देससमुद्देसियं, उद्देसाएसियं, उद्देससमाएसियं। एएसु विमेएसु पुरिमड्ढं। कडुद्देसं, कडसमुद्देसं, कडाएसं, कडसमाएसं। एएसु वि चउसु विमेएसु एक्कासणयं। तहा कमुद्देसं, कम्मसमुद्देसं, कम्माएसं, कम्मसमाएसं। तत्थ पढमे[2] आयंबिलं। सेसेसु तिसु मेएसु अब्भत्तट्ठो।

पूइयं दुविहं—सुहुमं बायरं च[3]। सुहुमं धूमाइ। बायरं उवगरणे भत्तपाणे य। तत्थ उवगरणपूइए पुरिमड्ढं। भत्तपाणपूइए एक्कासणयं।

मीसज्जायं तिविहं—जावंतियमीसज्जायं एत्थ आयंबिलं। पासंडमीसज्जाए साहुमीसज्जाए य खमणं।

ठवणा दुविहा—इत्तिरिया तत्थ निव्वीइयं। चिरठवियाए पुरिमड्ढं।

पाहुडिया वि दुविहा—सुहुमाए निव्वीइयं। बायराए खमणं।

पाओकरणं दुविहं—पागडकरणे पुरिमड्ढं। पगासकरणे आयामं।

कीयं दुविहं—दव्वे भावे य। दव्वे दुविहं—आयकीयं, परकीयं च। एत्थ दोसु वि आयामं। भावे वि आयकीयं परकीयं च। भावायकीए आयामं। भावपरकीए पुरिमड्ढं।

पामिच्चं दुविहं—लोइयं एत्थ आयामं, लोगुत्तरिए पुण पुरिमड्ढं।

परियट्टियं दुविहं—लोइए आयामं, लोगुत्तरिए पुण पुरिमड्ढं।

आहडं दुविहं—सग्गामओ[4], परग्गामओ य। सग्गामाहडे पुरिमड्ढं। परग्गामाहडे सपच्चवाए चउत्थं। परग्गामाहडे निप्पच्चवाए आयामं।

उब्भिण्णं दुविहं—दद्दरउब्भिन्ने पुरिमड्ढं, पिहिओब्भिन्नकवाडे आयामं।

मालोहडं दुविहं—जहन्ने पुरिमड्ढं, उक्कोसे आयामं।

अच्छेज्जं तिविहं—पहुअच्छेज्जं, सामिअच्छेज्जं, तेण अच्छेज्जं[5]। तिसु वि आयामं।

अणिसट्ठं तिविहं—साहारणाणिसट्ठं,[6] चोल्लगाणिसट्ठं, जड्डाणिसट्ठं। तिसु वि आयामं।

अज्झोयरो तिविहो—जावंतिय-पासंडियमीसो, साहुमीसो। एत्थ जावंतिए पुरिमड्ढं, इयरेसु दोसु वि एक्कासणयं। एवं उग्गमदोसेसु पायच्छित्तं भणियं।

इयाणिं उप्पायणाए[7] पायच्छित्तं भन्नइ—धाई[8] पंचविहा, सव्वत्थ आयामं। दूई दुविहा—सग्गाम-परग्गामा, दोसु वि आयामं। निमित्तं तिविहं—तीए आयामं, वट्टमाणे[9] अणागए य खमणं। आजीवे जाइकुलाइभिन्ने, सव्वत्थ आयामं। वणीमए[10] वि सव्वत्थ आयामं। तिगिच्छा दुविहा—सुहुमाए पुरिमड्ढं, बायराए[11] आयामं। कोहे माणे आयामं, मायाए एक्कासणं,[12] लोमे खमणं। संथवो दुविहो—पुव्विं संथवो, पच्छासंथवो वा। वयण-संथवे पुरिमड्ढं, सम्बन्धि-संथवे आयामं। विज्जाए आयामं। मन्ते आयामं। चुण्णे आयामं। जोगे आयामं। मूलकम्मे मूलं।

इयाणिं एसणादोसेसु पच्छित्तं भण्णइ—ते य इमे दस संकियमाईया[13]। तत्थ संकिए चउभंगो-संकियगाही संकियभोई[14]। चरिमो णिस्संकिओ[15] दोसविसुद्धो, बीओ[16] वि विसुद्धो चेव। पढमतइए[17] संकियभोई। जं दोसं संकइ तस्स चेव पच्छित्तमावज्जइ। सच्चित्तमक्खियं तिविहं—पुढवि-आउ-वणस्सइ। तत्थ पुढविससरक्खमक्खियहत्थेणं निव्विगइयं[18]। मीसकद्दमेणं पुरिमड्ढं। निम्मीसकद्दमे आयामं। मट्टिया-ओस-हरियाल-हिंगुलुय-मणोसिला-अंजण-लोण-

---

1 A भिज्जइ। 2 B पढमए। 3 B 'च' नास्ति। 4 B ०माओ। 5 B अच्छिज्जं। 6 A साधारण अणिसट्ठं। 7 A ०यणेए। 8 B धाती। 9 A वट्टमा०। 10 B वणीमगे। 11 A पाय०। 12 B एगासणगं। 13 B ०मादीया। 14 B भोती। 15 A नीसं०। 16 A बिइओ विसु०। 17 A ततिए। 18 B निव्वीययं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेरुयं-वन्निय-सेडिय-सोरट्ठिय-मक्खिए करमत्ते सव्वत्थ पुरिमड्ढं। एयं पुढविमक्खियं। इयाणिं आउमक्खियं भन्नइ—ससिणिद्धे निव्विगइयं। उदउल्ले पुरिमड्ढं। पुरकम्म-पच्छकम्मे आयामं एयं आउमक्खियं भणियं। इयाणिं वणस्सइमक्खियं भन्नइ—सो य वणस्सई दुविहो–परित्तो, अणन्तो य। परित्ते तिन्नि भेया—पिट्ठं, रोट्टं[1], कुकुसा। उक्कुट्टं चिंचाइ। एएहिं मक्खिएहिं तिहिं वि पुरिमड्ढं। अणन्ते वि[2] एएहिं चेव तिन्नि भेया। एत्थ एक्कासणयं[3]। एयं सच्चित्तमक्खियं भणियं इयाणिं अचित्तमक्खियं भन्नइ—तं दुविहं—गरहिय-मज्जायमक्खिए आयामं। अगरहिय-संसत्तमक्खिए आयामं[4]। एयं मक्खियं भणियं। इयाणिं णिक्खित्तं भन्नइ—एत्थ चउभंगो सचित्ते सचित्तं निक्खित्तं। एत्थ तइए[5] पच्छित्तं। तं च सच्चित्तं छक्काया—पुढवी-आऊ-तेऊ-वाऊ परित्तवणस्सइकाऊ-तसाणं च। सच्चित्ताणमणन्तर-निक्खित्ते आयामं। एएसिं चेव सच्चित्ताण परंपरनिक्खित्ते पुरिमड्ढं। एएसिं चेव मीसाणमणन्तर[6]निक्खित्ते पुरिमड्ढं। एएसिं चेव मीसाण परंपरनिक्खित्ते निव्वीयं। अणन्तवणस्सइ-सच्चित्ताणन्तरे खमणं। एयस्स चेव परंपरेण[7] एक्कासणयं[8]। अणन्तवणस्सइ-मीसाणन्तरणिक्खित्ते एक्कासणयं। एयस्स चेव परंपरनिक्खित्ते निव्वीयं। पिहिए चउभंगो। तत्थ तइए[9] पच्छित्तं। अचित्तेण गुरुणा पिहियस्स, सचित्तेण पुढवी-आऊ-तेऊ-वाऊ-परित्तवण-तस-सचित्तेहिं अणन्तर[10]पिहिए आयामं। एएहिं चेव परंपरपिहिए पुरिमड्ढं। एएहिं चेव मीसेहिं अणन्तर-पिहिए पुरिमड्ढं। एएहिं चेव परंपर निव्वीयं। अणन्तवण-सचित्ताणन्तरपिहिए खमणं। तेण चेव परंपरपिहिए एक्कासणयं। अणन्तवणस्सइ-मीसाणन्तरपिहिए एक्कासणयं। एएण चेव परंपरपिहिए निव्वीयं। गुरु-अचित्तपिहिए खमणं। इयाणिं साहरियं भन्नइ। एत्थ वि चउभंगो। तत्थ पुढवि-आऊ-तेऊ-वाऊ-परित्तवणस्सइ तससचित्ताणन्तरसाहरणे आयामं। एएहिं परंपरसाहरणे पुरिमड्ढं। एएहिं चेव मीसाण अणन्तर साहरणे पुरिमड्ढं। एएहिं चेव मीसाणं परंपरसाहरणे निव्विइयं[11]। अणन्तवणस्सइसचित्ताणन्तर साहरणे खमणं। एएहिं चेव[12] अणन्तवणस्सइपरंपरसाहरणे एक्कासणयं। अणन्तवणस्सइमीसाणन्तरसाहरणे एक्कासणयं। एयस्स चेव मीसपरंपरसाहरणे निव्विइयं। बीयसाहरिए निव्विगइयं अचित्ते अचित्तं साहरिए पुरिमड्ढं। अह गुरुसाहरिए तो खमणं। इयाणिं दायारो त्ति[13] भन्नइ-बाले वुड्ढे मत्ते उम्मत्ते चेव णेजरिए अन्धे एएसु दिन्तेसु गहणे आयामं। पगलन्तकुट्ठे खमणं पाउयारूढे वि खमणं। हत्थे[14] दुइए नियलबद्धे य हत्थच्छिन्ने य पायच्छिन्ने य नपुंसके[15] गुव्विणि बालवच्छाए भुञ्जन्तीए विरोलन्तीए भज्जन्तीए कंडन्तीए पीसन्तीए एयासु सव्वासु आयामं। पिंजन्तीए[16] रूवन्तीए कत्तन्तीए पमद्दमाणीए पुरिमड्ढं। छक्कायवग्गहत्था समणट्ठा णिक्खिवित्तु ते चेव[17] गाहन्ती[18] घट्टन्ती[19] संघट्टन्ती आरभन्ती[20]। एयासु सट्ठाणे नी० पु० ए० आ० अभ० कल्लाणगं एयं सट्ठाणं। संसत्तेण दव्वेण लित्तहत्था य लित्तमत्ता य आयामं, सेसेसु पुरिमड्ढं। ओयत्तन्तीए साहारणं च देन्तीए चोरियगं देन्तीए पाहुडियं[22] ठवेन्तीए सपच्चवायाए परं च उद्दिस्स आयामं इयाणिं उम्मीसं भन्नइ—परित्तवणस्सइ-सचित्तउम्मीसे आयामं। एएण चेव परित्ते मीसेण उम्मीसे निव्विइयं। अणन्तसचित्तउम्मीसे खमणं। एएण चेव अणन्तमीसे निव्विइयं बीउम्मीसे[23] निव्विइयं। अह पुढवाईहिंतो जहा णिक्खित्ते। इयाणिं अपरिणयं भन्नइ—तं दुविहं दव्वे भावे य। दव्वे अपरिणयं–पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-परित्तवणस्सइ-अपरिणए आयामं। अ

---

1 B नास्ति। 2 A अणंतेहिं। 3 B एगासणगं। 4 A इदं वाक्यं पतितम्। 5 A ततिए 6 A मीसाणंतर०। 7 A परंपरे। 8 B एगासणगं। 9 A ततिए। 10 A अणंतरे०। 11 B निव्वीयं। 12 A एतद्वाक्यं नास्ति। 13 B दायगेत्ति। 14 B हत्थं। 15 A ०सरे 16 B रुंचंतीए। 17 A चेव। 18 A ०हिंती। 19 A नास्ति। 20 A संघट्टमारभंतीए। 21 A ओयतंतीए। 22 ०डियगं। 23 A पिउ०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्तवणस्सइ-अपरिणए खमणं। एत्थ य चउभंगो—दव्वे अपरिणयं, भावे वि अपरिणयं। भावापरिणयं दोण्हं पि[1] भुञ्जमाणाणं, एत्थ वि पुरिमड्ढं। इयाणिं लित्तं भन्नइ—संसत्तेण हत्थेण वा मत्तेण वा[2] आयामं। इयाणिं छड्डियं भन्नइ—पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-परित्तवणेसु आयामं। अणन्तवणेसु खमणं। एए एसणा दोसा।

संजोयणा दुविहा—बाहिं भायणे, अन्तो वयणे। दोण्ह वि खमणं। परिमाणाइरित्ते आयामं। सइंगाले खमणं। धूमे आयामं। अकारणे भुञ्जइ[3] आयामं। कारणे अभुञ्जमाणस्स आयामं। घासेसणा दोसा एए।

एयम्मि पच्छित्तपत्थारे—

३५. 'उद्देसियचरिमतिए' इच्चाइ गाहा। } एयाओ दोवि गाहाओ जेसु जेसु ठाणेसु
३६. 'अइरं अणन्त' इच्चाइ गाहा। } अब्भत्तट्ठं तेसु तेसु ओयारिज्जन्ति।

३७. 'कम्मुद्देसियं' इच्चाइ गाहा। } एयाओ दोवि जेसु जेसु ठाणेसु आयामं तेसु तेसु
३८. 'अइरं परित्त०' इच्चाइ गाहा। } ओयारिज्जन्ति।

३९. 'अज्झोयर' गाहा। एगासणयट्ठाणेसु ओयारिज्जइ।

४०. 'ओह विभागा' इच्चाइ गाहा। }
४१. 'सग्गामाहड' इच्चाइ गाहा। } एयाओ तिण्णि गाहाओ जेसु जेसु ठाणेसु पुरिमड्ढं तेसु तेसु ओयारिज्जन्ति।
४२. 'पत्तेय'मिच्चाइ गाहा। }

४३. 'इत्तरठविय' इच्चाइ गाहा। एसा निव्विईयं जेसु जेसु ठाणेसु तेसु तेसु ओयारिज्जइ।

४४. 'सहसाणाभोगे' इच्चाइ। सहसाणाभोगा पुव्वुत्ता। तेसु सहसाणाभोगेसु वट्टमाणस्स जेसु जेसु कारणेसु पडिक्कमणं भणियं तेसु तेसु चेव कारणेसु आभोएणं जाणमाणो जं करेइ, अइबहुसो पुणो पुणो अइप्पमाणेण वा करेइ, सव्वत्थ निव्विगइयं।

४५. 'धावणडेवण' इच्चाइ। धावणं गइभेदो[4]। डेवणं उल्लंडणं[5]। संघरिसेण गमणं—को सिग्घगइ त्ति, जमलिओ वा गच्छइ। किड्डा अट्ठावय-चउरंग-जूयाइ। कुहावणं[6] इन्दजालवट्टखेड्डाइ। आइसद्देण समास-पहेलिया-कुहेडगा घेप्पंति। उक्कुट्ठी[7] पुक्कारिय-कलकलो। गीयं गीयमेव। छेलियं सेंटियं[8]। जीवरूयं—मयूर-तित्तिर-सुग-सारसादिलवियं सव्वेसेतेसु अब्भत्तट्ठो। आइसद्देण अजीवरूये वि—अरहट्ट-गड्डिया-पाउया-सद्देसु वि।

४६. 'तिविहोवहिणो विच्चुय' इच्चाइ। तिविहोवहिणो—जहन्नो मज्झिमो उक्कोसो। मुहपोत्तिय-पायकेसरिया गोच्छगो पत्तठवणं च एस चउव्विहो जहन्नो। मज्झिमो छव्विहो—पडलारयत्ताणं पत्ताबंधो चोलपट्टो मत्तओ रयहरणं च। उक्कोसो चउव्विहो-पडिग्गहो, तिन्नि पच्छाया[9]। एए ओहियस्स थेरकप्पे[10] चोद्दसमेया भणिया। इयाणिं उवग्गहिओ थेरकप्पो[11] तिविहो भन्नइ—जहन्नो मज्झिमो उक्कोसो। पीढगं निसिज्जं डंडगा पमज्जणी घट्टगा डगलगा पिप्पलग-सूई नहरणी दंत-कण्ण-सोहणग-दुगं; एसो जहन्नो। वासताणाइओ मज्झिमगो। वासताणा पंच इमे—वालो सुत्तो सुंगो[12] कुडसीसग छत्तए चेव॥

तेहिं य दोन्निओ ओहोवहिम्मि[13] वाले य सोत्तिए चेव।
सेसतियवासताणे पणयं तह चिलिमिलीण इमं॥

---

1 A तु। 2 A हत्थे मत्ते वा। 3 A 'भुञ्जइ' नास्ति। 4 B गति०। 5 B उड्डणं। 6 A कुहा०। 7 A उक्कुट्ठिय। 8 B सिंटियं। 9 B पच्छागा। 10 B कप्पो। 11 B कप्पे। 12 A बाले सुत्ते सूई। 13 B ओहोविहि०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वालमई[1] सुत्तमई वागमई तहय डंडकडगमई। संथारगदुगमझुसिरं झुसिरं पिय[2] डंडपणगं च डंड-विडंडग-लट्ठि-विलट्ठी तह नालिया य पंचमिया। अवलेहणि-मत्त-तिगं पासवणुच्चारखेले य चम्मतिय ऽत्थुर पाउर तलिग अहवावि चम्मतिविहमिमं। कत्तीतलियावब्भा पट्टगदुगं चेव होइ इमं संथारुत्तरपट्टो[3] अहवा सन्नाहपट्टपल्लत्थी। मज्झो अन्नाणं पुण अइरित्तो वारगो होइ॥ अक्खा संथारो वा दुविहो एगंगिओ य इयरो वा। बिइयपय[4]पोत्थपणगं फलगं तह होइ उक्कोसो

एस अन्नाणं साहूणं चोग्गहिओ भणिओ। इयाणिं अन्नाणं ओहिओ भन्नइ। जो च्चिय थेरकप्पियाण ओहोवही चोद्दसविहो सो चेव अन्नाणं पि। नवरं—

अन्नाणं एस च्चिय चोलट्ठाणम्मि[6] कमढगं नवरं। अन्नो य देहलग्गो इमोवही होइ तासिं पि ओग्गहणन्तगपट्टो अट्टोरुगचलणिया य बोधव्वा। अब्भिन्तरबाहि-नियंसणीय तह कंचुए चेव उक्कच्छिय-वेकच्छिय-संघाडी चेव खंधकरणी य। ओहोवहिम्मि एए अन्नाणं पन्नवीसाओ

एत्थ अन्नाणं जहन्नो जो चेव साहूणं ओहिओ चउव्विहो। उक्कोसो अट्ठविहो—चउरो चेव पुव्वुद्दिट्ठा जे साहूणं। अन्ने य इमे चउरो—अब्भिन्तरबाहि-नियंसणीय संघाडी खंधकरण एसो उक्कोसओ उ अन्नाणं। तेरसविहो उ मज्झो इणमो उ समासओ होइ॥

पत्ता बंधाईया चउरो ते चेव पुव्वनिद्दिट्ठा। मत्तो य कमढगं वा तह ओग्गहणन्तगं चेव॥ पट्टो अट्टोरुविय चलणिय तह कंचुगे य उक्कच्छी। वेकच्छी तेरसमा अन्नाणं होइ णायव्वा॥

जहन्नोवहिम्मि 'विच्चुए' पडिए पुण लद्धे निव्विईयं। मज्झिमे पुरिमड्ढं। उक्कोसए एक्कासणयं 'विस्सरिया पेहिए'त्ति—पडिलेहिउं विस्सरिउ त्ति भणियं होइ। जहन्ने अप्पडिलेहिए निव्विईयं मज्झिमे पुरिमड्ढं। उक्कोसे एक्कासणयं। 'विस्सारियानिवेयणे'त्ति निवेइउं' विस्सरियं ति आयरियाईणं तिविहो[8] वि। तो एवं चेव पच्छित्तं। अह पुण सव्वोवही विच्चुअ पुणरवि लद्धो। पडिलेहिउं वा विस्सरिओ। निवेइउं[9] वा विस्सरिओ सव्वो चेव, तो आयामं

४७. 'हारिय धो'इच्चाइ। हारिए जहन्नोवहिम्मि एक्कासणयं। मज्झिमे आयामं। उक्को चउत्थं। धोए वि एवं चेव पच्छित्तं तिविहं। उग्गमेउं न निवेइए। जाणन्तो वि जहा न वट्ट परिग्गहिउं आयरियस्स अणिवेइओ उवही। तस्सानिवेइयस्स तिविहं एयं चेव पच्छित्तं अदिन्नं वा आयरियाईहिं जहन्नाइ-भेयं उवहिं परिभुञ्जइ एयं चेव तिविहं पच्छित्तं दिन्नं वा उवहिं जहन्नाइ-भेयं आयरियाईहिं अणणुन्नाओ अन्नेसिं देइ। एत्थ वि एवं चे पच्छित्तं तिविहं। अह पुण सव्वोवहिं हारेज्जा। सव्वोवहिं वा उदुबद्धे धोवेज्जा। सव्वोवहिं उग्गमेउं न निवेएइ। सव्वोवहिं वा अदिन्नं परिभुञ्जइ। सव्वोवहिमणापुच्छाए अणणुन्नाउ वा अन्नेसिं देइ। एवं सव्वहारवणाइएसु[10] एएसु जीएण छट्ठं।

४८. 'मुहणन्तय' इच्चाइ। मुहणन्तए फिडिए ओग्गहाओ निव्विईयं। रयहरणे अब्भत्तट्ठो एवं ताव अणट्ठे। अह पुण नासियं हारवियं वा पमाएण मुहणन्तयं तो से चउत्थं। रयहरणे छट्ठं

४९. 'कालद्धाणाईए' इच्चाइ। विगहाइपमाएणं[11] कालाईयं करिन्ति भत्ताइ निव्विइ अह पुण परिभुञ्जन्ते चउत्थं। एवं अद्धाणाइक्कमे वि अपरिभुञ्जन्तस्स निव्विईयं; परिभुञ्जन्तस अब्भत्तट्ठो। पारिट्ठावणियं सव्वमेवाविहीए विगिञ्चिन्तस्स भत्ताइ पुरिमड्ढं।

५०. 'पाणस्सासंवरणे' इच्चाइ। पाणाहारासंवरणे। भूमितिगं ति—उच्चार-पासव कालभूमि। एगतर-अपडिलेहणाए वि[12] निव्विईयं। चउव्विहाहारासंवरणे, अहवा नमोक्का पोरिसियाइयं पच्चक्खाणं ण गेण्हइ; गहियं वा पच्चक्खाणं भञ्जइ सव्वत्थ पुरिमड्ढं।

---

1 B पुस्तके 'मई' स्थाने सर्वत्र 'मती' पाठः। 2 A चिय। 3 B ओतरि°। 4 A पिइय 5 B चेवो°। 6 B चोलगट्ठाणंमि। 7 A निवेएउ। 8 A तिविहे। 9 A निवेउं। 10 . वणाइसु। 11 A पमाएण। 12 A 'वि' नास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. 'एयं चिय' इच्चाइ। एयं चिय पुरिमड्ढं। सामन्नं अविसेसियं ति भणियं[1] होइ। तवो बारसविहो। पडिमाओ बारस—मासिया, दोमासिया, तिमासिया, चाउमासिया, पञ्चमासिया, छम्मासिया, सत्तमासिया, पढम-सत्तराइन्दिया, दोच्च-सत्तराइन्दिया, तइय-सत्तराइन्दिया, अहोराइया, एगराइया। अभिग्गहा दव्वखेत्तकालभावभेयभिन्ना। एएसिं अगेण्हणे भंगे वा पुरिमड्ढं। गाहा पच्छद्धस्स विभासा[2] इमा। पक्खिए अब्भत्तट्ठमायंबिलं वा। जं वा दिवस-पच्चक्खाणं। ताओ जहासत्तीए तवं न करेइ अइरित्तं, तो खुड्डगस्स निव्वीईयं, थेरगस्स पुरिमड्ढं, भिक्खुस्स एक्कासणयं, उवज्झायस्सायंबिलं, आयरियस्स अब्भत्तट्ठो। चाउम्मासे खुड्डगाइ-आयरियावसाणाणं पंचण्ह वि जहासंखं पुरिमड्ढेगासणायामचउत्थछट्ठाइं दिज्जन्ति। संवच्छरिए एक्कासणायामचउत्थछट्ठट्ठमाइं दिज्जन्ति जहासंखं पंचण्ह वि।

५२. 'फिडिए' इच्चाइ। फिडिओ निद्दापमाएणं एगस्सुस्सगस्स निव्विईयं। दोसु पुरिमड्ढं। तिहि वि एगासणयं। काउस्सग्गाणं चेव फिडिओ पच्छाहुन्तओ करेइ ताहे आयामं। सयं वा उस्सारेइ एगाइ काउस्सग्गे तो निव्वीइयपुरिमड्ढेगासणाइं जहासंखं। सव्वे चेव सयमुस्सारेइ आयामं। भग्गे वा एगाइस्सुस्सग्गे अपुण्णे चेव अन्तराले तहा वि निव्विईय-पुरिमड्ढेगासणाइं। सव्वेसु भग्गेसु आयामं। एवं वन्दणएसु वि एस चेव गमो[3]।

५३. 'अकएसुं' इच्चाइ। अहवा उस्सग्गमेव न करेइ। एगाइ ताहे पुरिमेगासणायामाइं[4]। सव्वावस्सयं न करेइ चउत्थं। जहा काउस्सग्गे एवं वन्दणाइएसुं पि गाहा पच्छद्धेण सह चउत्थं सम्बज्झइ। दिया अपडिलेहिए थंडिले राओ[5] वोसिरइ, दिया वा सुवइ चउत्थं।

५४. 'कोहे बहु' इच्चाइ। सगिमुप्पन्नं कोहं पक्खाओ उवरिं चाउम्मासाओ वा उवरिं धरेइ तो चउत्थं। आसवो वियडं तमाइयंते[6] चउत्थं। कक्कोलग-लवंग-पूगफल-जाइफल-तं-बोलाइसु सव्वत्थ चउत्थं। पुव्वगाहाओ अणुवट्टाविज्जइ। लसुणे अचित्ते पुरिमड्ढं। आइसद्देण पलंडू घेप्पइ। तण्णगमयूरतित्तिराइ-बंधमुयणे पुरिमड्ढं।

५५. 'अज्झुसिर' इच्चाइ। अज्झुसिरतणं कुसाइ तेसिं अकारणपरिभोगे निव्विईयं,[7] सेसप-णएसु पुरिमड्ढं। सेसा पंच पणगा—तणपणगं, दूसपणगं[8], पोत्थयपणगं, चम्मपणगं। एत्थ य दूस-पणगं दुविहं तेण पंचपणगा। तत्थ सालीवीहीकोद्दवरालगआरन्नतणं[9] चेति तणपणगं। दूसपणगं दुविहं–दुप्पडिलेहिय-दूसपणगं अप्पडिलेहिय-दूसपणगं च। कोयवि पावारग[10] पूरी दाढियाली विराली, एयं दुप्पडिलेहिय-दूसपणगं। तूली आलिंगणी अंगोवहाणं[11] गंडोवहाणं[12] मसूरगो य[13] एयं अप्पडिलेहिय-दूसपणगं। गंडीपोत्थओ[14], कच्छवीपोत्थओ, मुट्ठीपोत्थओ, छिवाडी[15], संपुडगं, एयं पोत्थयपणगं। गो-माहिस-अय-एला-मिय-चम्मपणगं। एत्थ य तणपणए दुप्प-डिलेहिय-दूसपणए चम्मपणए य पुरिमड्ढं। अप्पडिलेहिय-दूसपणए एक्कासणयं। पोत्थयप-णगग्गहणे आयामं। बेइन्दियाइ-तसवहे जं च आवज्जइ तं च दिज्जइ। विइय-चुन्निकारमएण पो-त्थयपणगे वि पुरिमड्ढं।

५६. 'ठवणमणापुच्छाए' इच्चाइ। दाणसड्ढअहाभद्दसन्निमाईणि ठवणकुलाणि। ताणि आय-रियमणापुच्छिय भत्ताइ पविसिऊण गेण्हइ जइ तो से एक्कासणयं। तेसु य कुलेसु एगो चेव संघाडगो णिव्विसइ सेसा न पविसन्ति। विरियं परक्कमो तं निगूहन्तस्स एक्कासणयं। जीय-ववहारे एयं। सुयववहाराइसु अन्नहा। एक्कासणयं च माया[16] निप्फन्नं। सेसमायाओ अन्न-

1 A पुस्तके 'ति भणियं' पतितं। 2 A विहासा। 3 A कमसो। 4 B० गासणं आया०। 5 B 'राओ' नास्ति। 6 A तमापियते। 7 B पुस्तके 'अज्झुसिरतणेसु निव्वीयं' एतावन्मात्रपाठः। 8 B पोत्थय पणगं, दूसपणगं। 9 B अरण्णतिणं। 10 B कोयव पावार–। 11 A मडंगोवहाणं। 12 A गंडोवहाणी। 13 B वा। 14 A ०पोत्थगो। 15 B छेवाडी। 16 A माय०।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

मायाओ,[1]ता य इमा—जहा–भद्दगं भोच्चा विवन्नं विरसमाहरे आयरियसगासे। जसत्थी; जहा—'एस महा तवस्सी विरसाहारो रसपरिच्चागं करेइ'त्ति। एवमाइयासु मायासु खमणं।

५७. 'दप्पेणं'इच्चाइ। दप्पो वग्गण-धावण-डेवणाइओ[2]। दप्पे वट्टमाणेण पञ्चिन्दिओ वहिओ होज्जा। संकिलिट्ठकम्मं—अंगादाण-परिमद्दण-सुक्कपोग्गल-निग्घायणाइ[3],दीहद्धाण-पडिवन्नो[4]य। आहाकम्म-द्धाणकप्पाइयं वा बहु अइयारं करेज्जा। दीहगिलाणकप्पस्स वा अवसाणे आहाकम्मसन्निहिसेवणं वा कयं होज्जा। एएसु कारणेसु पंचकल्लाणगं पच्छित्तं।

५८. 'सव्वोवहि'इच्चाइ। पाउसे जयणाए वि सव्वोवहि कप्पे कए पुरिमत्ताए वा चरिमाए पमाएणं। अप्पडिलेहिए चाउम्मासवरिसेसु य विसोहीए पउत्ताए निरइयारस्स वि पंचकल्लाणगं दिज्जइ। किं कारणं। जम्हा सुहुमाइयारे कए वि न याणइ न वा संभरइ। जहा पाउसद्दरत्तवेरत्तपाभाओगकालग्गहणे सुत्तत्थपोरिसि-अकरणे अप्पडिलेहियमाई। एएण कारणेण सव्वेसु वि दिज्जइ त्ति।

५९. 'छेया'इच्चाइ।जो छेयं न सद्दहइ, किं वा छिज्जइ न छिज्जइ त्ति एवं भणइ। मिउणो त्ति–जो छिज्जमाणे वि परियाए न संतप्पइ जहा 'मे परियाओ छिन्नो'त्ति। अहवा अन्नेसिं ओमराइणिओ[5] जाओ त्ति परियायगव्विओ जो दीहपरियाओ[6] सो परियाए छिन्ने[7] तहावि अन्नेहिंतो अब्भहियपरियाओ न ओमराइणिओ होइ। नवा बीहेइ परियायछेयस्स। एएसिं जहुद्दिट्ठाणं छेयमावन्नाण वि तवो दिज्जइ। आइसद्देण मूलाणवट्टपारंचियपयावन्नाण वि। जीयववहारमएण[8]गणाहिवइणो य। गणाहिवई आयरिओ तस्स छेयाइमावन्नस्सावि तवारिहं दिज्जइ। मा पुण सेहदुसुंठाईण अपरिणामगाणं हीलणिज्जो भविस्सइ त्ति। चसद्देण कुलगणसंघाहिवा घेप्पन्ति।

६०. 'जं जं'मिच्चाइ। इह जीयववहारे जं जं पच्छित्तं न भणियं अवराहमुद्दिसिऊण तस्सावि आवत्तिविसेसेण दाणसंखेवं भणामि। आवत्ती पायच्छित्तट्ठाणसंपत्ती। सा य निसीहकप्पववहाराभिहिया[9]। सुत्तओ अत्थओ य। आणा अणवत्थमिच्छत्तविराहणा सवित्थरा। तवसो य—सो य तवो पणगादी छम्मासपज्जवसाणो अणेगावत्तिदाणविरयणा लक्खणो तेसु सव्वेसु[10] गंथेसु। इह पुण जीयववहारे संखेवेणं आवत्तीदाणं निरूविज्जइ।

६१. 'भिन्नो अविसिट्ठ'इच्चाइ। भिन्न इति ससमयसन्ना; पंचवीसं दिवसा भिन्नसद्देण घेप्पन्ति। सो य अविसिट्ठो एक्को चेव। अविसिट्ठगहणाओ य सव्वपणगाई भेया घेप्पन्ति। पणगं—लहुगं, गुरुगं च; दसगं—लहुगं, गुरुगं च;[11] पन्नरसगं—लहुगं, गुरुगं च; वीसगं—लहुगं, गुरुगं च पंचवीसगं—लहुगं, गुरुगं च। एस भिन्नमासो बहुभेओ वि एक्को चेव घेप्पइ। एसो य सुयववहारो जेसु जेसु अवराहेसु भणिओ तेसु चेव अवराहेसु[12] जीएण सव्वत्थ निव्विगई। भिन्नो अविसिट्ठो च्चिय एवं वक्खाणियं। इयाणिं मासो त्ति। सो य लहुमासो गुरुमासो य। एत्थ य लहुमासे पुरिमड्ढं। गुरुमासे एक्कासणयं। चउरो य छच्च मासा सम्बज्झन्ति। तत्थ लहुचउमासे आयामं। चउगुरुमासे चउत्थं। छल्लहुमासे छट्ठं। छगुरुमासे अट्ठमं। एवं सुत्तनिद्दिट्ठावत्ति जहावराहं जाणिऊण जीएण निव्विइयाइ-अट्ठमभत्तन्तं तवं देज्जा।

६२. 'इयसव्वावत्तीओ' इच्चाइ। इय एवं एएण पगारेण। सव्वावत्तीओ सव्वतवट्ठाणाइं। जहक्कमं पायच्छित्ताणुलोमेण। समए सिद्धंते। जीएण देज्जा। निव्विइयाइयं दाणं जह जह भणियं तहा तहा देज्ज त्ति भणियं होइ।

1 A ०मायातो। 2 A ०णादीओ। 3 A निग्घाइयणाइ। 4 A पडिपंनो। 5 B ०राइणितो। 6 B परियागो। 7 A विच्छिन्ने। 8 ०णएण। 9 B ०हारादि अभिहिया। 10 B 'सव्वेसु' नास्ति। 11 A पुस्तके द्वितीयं वाक्यं नोपलभ्यते। 12 अत्र B पुस्तके 'जेसु अवराहेसु भणि अवराहेसु एतादृशः खण्डितः पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. 'एयं पुण सव्व'मिच्चाइ। एयं ति जहुद्दिट्ठं । पुण सद्दो विसेसणे । सव्वं पायच्छित्त-दाणं। पाएण बाहुल्लेण। सामन्नमविसेसियं। विसेसेण निद्दिट्ठं विणिद्दिट्ठं। देयं विभागेण। दव्वाइ—आइसद्देण—खेत्तकालभावपुरिसपडिसेवणाओ य। अविक्खिऊण विसेसियं। ऊणा-इरित्तं तस्स मंवा (?) देज्ज त्ति।

६४. 'दव्वं खेत्त'मिच्चाइ । पढमं गाहद्धं कण्ठं । नाउम्मि तं चिय—जाणिऊण दव्वाइ विभागम्मि तं चेव परिमाणपरिच्छिन्नं देज्जा। अहवा, नाउमियं चिय—इदमिति पच्चक्खी-भावे। इदमेव जीयववहारभणियं देज्जा। तम्मत्तं[1] भणियसमं। दव्वखेत्तकालभावपुरिसपडिसेव-णादीसु हीणेसु हीणं देज्जा। अहिएसु[2] अहियं देज्जा। साहारणेसु साहारणं देज्जा।

६५. 'आहाराई दव्व'मिच्चाइ। आहारो आई जेसिं दव्वाणं ताइं दव्वाइं आहाराईणि। जम्मि देसे ताइं बलियाइं। जहा अणूवएसे[3] सालिकूरो बलिओ । सहावेणं चेव सुलहो[4] य। एयं नाऊण जं जीयभणियं दाणं तस्सब्भहियमवि देज्जा । जत्थ पुण चणक-निप्फाव-कंजियाइ लुक्खाहारो; दुलहो वा; तत्थ जीयदाणं हीणमवि देज्जा।

६६. 'लुक्ख'मिच्चाइ। लुक्खं नाम नेहरहियं। खेतं वाय[5]-पित्तलं वा। सीयलं पुण सिणिद्धं[6] भन्नइ; अणूवखेत्तं वा। निद्धलुक्खं साहारणं भन्नइ। इह य जीयदाणे णिद्धखेत्ते अहियं देज्जा। साहारणे जहा भणियं समं देज्जा । लुक्खखेत्ते हीणं देज्जा । एवं काले वि तिविहे[7] तिविहं देज्जा।

६७. 'गिम्हसिसिर'इच्चाइ। गिम्हो लुक्खो कालो। साहारणो हेमन्तो। वासारत्तो निद्धो। गिम्हे तिविहो तवो—जहन्नो मज्झो उक्कोसो। जहन्नो चउत्थं, मज्झिमो छट्ठं, उक्कोसो अट्ठमं। हेमन्ते तिविहो—जहन्नमज्झिमुक्कोसो छट्ठट्ठमदसमभेओ । वासारत्ते वि जहन्नमज्झिमुक्कोसो अट्ठमदसमबारसमेयभिन्नो। एस नवविहो ववहारो। एयं सुट्ठु जाणिऊण सुयववहारेण वा नवविहविगप्पेण सुट्ठु जाणिऊण तिविह-काले तिविह-विगप्पियं तवं देज्जा। सो य इमो—अहागुरुआइ। एत्थ य मूलिया नवभेया नवभेयपत्थारे दट्ठव्वा। विभज्जमाणा सत्तावीसं। आवत्ति-दाण-तवसा कालेण य निओएयव्वा। एस नवविहो ववहारो वन्निओ त्ति। सो य नव-विहो ववहारो इमो—

गुरुओ गुरुयतराओ[8] अहागुरू चेव होइ ववहारो।
लहुओ लहुयतराओ[9] अहालहू होइ[10] ववहारो॥
लहुसो लहुसतराओ अह लहुसो चेव होइ ववहारो।
एएसिं पच्छित्तं वोच्छामि अणाणुपुव्वीए—(सुत्ताणुसारेण)॥
गुरुगो य होइ मासो गुरुयतराओ[11] य होइ चउमासो।
अह गुरुगो छम्मासो[12] गुरुपक्खे होइ पडिवत्ती॥
तीसा य पन्नवीसा वीसा[13] विय होइ लहुयपक्खम्मि।
पनरस[14] दस पंचे व य लहुसय[15] पक्खम्मि पडिवत्ती॥
गुरुगं च अट्ठमं खलु गुरुयतरागं[16] च होइ दसमं तु।
अह गुरुगं बारसमं गुरुपक्खे होइ पडिवत्ती॥

---

1 B ०मित्तं। 2 A अहिए। 3 A अण्णव। 4 B सुलभो । 5 B वात्तं। 6 B निद्धं। 7 A तिहे। 8 B गुरुततरा० । 9 B लहुगत०। 10 B लहू चेव होइ। 11 B गुरुयरागो। 12 A ०म्मासं। 13 A द्वितीय 'वीसा' पतितम् । 14 B पण्णरस। 15 B लहुसप०। 16 B गुरुतरा०।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

छट्ठचउत्थायंबिल लहुपक्खे होइ[1] पडिवत्ती।
एगासण-पुरिमड्ढं निव्वीयं[2] लहुसगुद्धो वा ॥
ओहेण एस भणिओ[3], एत्तो वोच्छं पुणो विभागेण— ।
तिगनवसत्तावीसा एक्कासीतीय[4] भेएहिं ॥
नवविह ववहारेसो संखेवेणं तिहा मुणेयव्वो ।
उक्कोसो मज्झो वा जहन्नगो चेव तिविहो सो ॥
उक्कोसो गुरुपक्खो लहुपक्खो मज्झिमो मुणेयव्वो ।
लहुसगपक्खो जहन्नो तिविगप्पो एस णायव्वो ॥
गुरुपक्खो उक्कोसो मज्झ[5] जहन्नो य एस[6] लहुगे वि ।
एमेवय लहुसेवी एवेसो नवविहो होइ ॥
गुरुपक्खे छम्मासो पणमासो चेव होइ उक्कोसो ।
मज्झो चउ त्ति मासो दुमासगुरुमासग[7] जहन्नो ॥
लहुमासभिन्नमासा[8] वीसा विय तिविहमेव लहुपक्खे[9] ।
पन्नरस दसगं पणगं[10] लहुसुक्कोसाइ तिविहेसो ॥
आवत्ति तवो एसो नवभेओ वन्निओ समासेणं ।
अहुणाउ सत्तवीसो दाणतवो तस्सिमो होइ ॥
गुरु लहु लहुसगपक्खे एक्केक्के नवविहो मुणेयव्वो ।
उक्कोसुक्कोसो वा उक्कोसो मज्झिम जहन्नो ॥
मज्झुक्कोसो मज्झिम मज्झो तह होइ मज्झिम जहन्नो ।
इय णेया जहन्ने वी उक्कोसो मज्झिम मज्झिम जहन्नो ॥
गुरुपक्खे नव एए नव चेव य होन्ति लहुय पक्खे वि ।
नव चेव लहुसपक्खे सत्तावीसं हवन्तेए ॥
बारसमदसमअट्ठम छप्पणमासेसु तिविह दाणेयं ।
चउत्तिमासे दस अट्ठ[11] छट्ठ उक्कोसगा[12] तिविहा ॥
एमेवुक्कोसाई[13] दुमासगुरुमासिए तिहा दाणं ।
अट्ठम छट्ठ चउत्थं नवविहमेयं तु गुरुपक्खे ॥
दसमं अट्ठम छट्ठं लहुमासुक्कोसगाइ तिह दाणं ।
अट्ठम छट्ठ चउत्थं उक्कोसादेत[14] तिह भिन्नं[15] ॥
छट्ठ चउत्थायामं उक्कोसादेय[16] दाणवीसाए ।
लहुपक्खम्मि नवविहो एसो बीओ[17] भवे नवगो ॥
अट्ठम छट्ठ चउत्थं एसुक्कोसाइ[18] दाणपन्नरसा[19] ।
छट्ठ चउत्थायामं दससू तिविहे य दाणभवे ॥
खमणायामेक्कासण तिविहुक्कोसाइ दाण[20]पणगेयं ।
लहुसेस तइयनवगो[21] सत्तावीसेस वासासु ॥

---

1 B होंति। 2 A निव्वीईयं। 3 B भणितो। 4 B एक्कासी इय। 5 A मज्झिम। 6 A एवं। 7 A मासिग। 8 B मासो। 9 A पुस्तके 'वीस लहुक्कोसमज्झिमजहन्ना' एतादृशो द्वितीयः पादः। 10 A दसग। 11 A अट्ठम। 12 B ०सगादिति०। 13 B ०सादी। 14 A एय। 15 A भिन्ने। 16 A एय। 17 B बितिओ। 18 B ०सादि। 19 B ०रसे। 20 B ०साइयाण। 21 A ततिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिसिरे दसमाईणं[1] चारणमेएण सत्तवीसेण ।
ठायइ[2] पुरिमड्ढम्मी अड्ढोक्कन्तीय तह चेव ॥
अट्ठममाई गिम्हे चारणमेएण सत्तवीसेण ।
तह चेव य ढोक्कन्ती[3] ठावइ निव्वीयए[4] नवरं ॥
एएहिं दाणेहिं आवत्तीओ सया सया नियमा ।
बोधव्वा सव्वाओ असहुस्सेक्केक्कहासणया ॥
जाव ठियं एक्केक्कं तं पीहासेज्ज असहुणो ताव ।
दाउं सट्ठाण[5] तवं परट्ठाणं देज्ज एमेव ॥
एवं ठाणे ठाणे हेट्ठाउत्तो[6] कमेण हासंतो ।
नेयव्वं जावठियं नियमा निव्वीइयं[7] एक्कं ॥

एस नवविहो ववहारो ।

६८. 'हट्ठगिलाणा'इच्चाइ । भावं पडुच्चसममहियमूणं वा देज्जा । हट्ठस्स नीरोगस्स बलियसरीरस्स समहियं वा देज्जा । गिलाणस्स ऊणं, नवा वि देज्जा । जावइयं वा वि सक्केइ तावइयं वा वि से देज्जा । कालं वा सहेज्जा; जाव पउणीहोइ । हट्ठो सन्तो करेस्सइ त्ति ।

६९. 'पुरिसा गीयागीया' इच्चाइ । पुरिसं पडुच्च सममहियं ऊणं वा देज्जा । पुरिसा केइ गीयत्था, केइ अगीयत्था । धिइसंघयणसंपन्नत्ताओ केइ सहा, तव्विरहियत्ताओ केइ असहा । सढा मायाविणो, असढा उज्जुभूयप्पाणो । उस्सग्गे उस्सग्गं । अववाए अववायं । जहा भणियं सद्दहन्ता आयरन्ता य परिणामगा भन्नन्ति, अपरिणामगा पुण जे उस्सग्गमेव सद्दहन्ति आयरन्ति य; अववायं पुण न सद्दहन्ति नायरन्ति य । अइपरिणामगा जे अववायमेवायरन्ति तम्मि चेव[8] सज्जन्ति, न उस्सग्गे ।

७०. 'तह धिइ'इच्चाइ । तहेत्ति आणन्तरिए । धिइ-संघयणे चउभंगो । धिइए संघयणेण य पढमो संपन्नो । इह य पढमपच्छिमा भंगा दुवे संगहिया सुत्तेण, मज्झिमिल्ला दुवे भाणियव्वा । अहवा बितियचुन्निकारा[9]भिप्पाएण चत्तारि वि सुत्तेणेव गहिया । कहं ?-धिइसंपन्ना, ण संघयणेण १ । संघयणेण वा संपन्ना, ण धिईए २ । उभयसंपन्ना ३ । उभयहीणा य ४ । अहवा इमे पंच विगप्पा । आयतरे णामेगे नो परतरए १ । परतरए नामेगे, नो आयतरए २ । एगे आयतरए वि परतरए वि ३ । एगे नो आयतरए नो परतरए ४ । एए[10] चत्तारि भंगा ठाणक्कमेण । तहा पंचमो अन्नतरतरगो नाम विगप्पो । आयतरगो नाम जो उपवासेहिं दढो । परतरगो नाम जो वेयावच्चकरो गच्छोवग्गहकरो व त्ति । अन्नतरतरगो[11] नाम जो एक्कं सक्केइ काउं, तवं वेयावच्चं वा । न पुण दो वि सक्केइ ।

७१. 'कप्पट्ठिय' इच्चाइ । कप्पट्ठिया आईए[12] जेसिं ते कप्पट्ठियादओ । आइसद्देण—परिणया[13], कडजोगी, तरमाण त्ति एए[14] चत्तारि घेप्पन्ति । [15]एएसिं चेव पडिवक्खभूया अण्णे वि चत्तारि जणा घेप्पन्ति[15] । अकप्पट्ठिया अपरिणया अकडजोगी अतरमाणगा । तत्थ कप्पट्ठिया जे आचेलुक्कुद्देसियाइ दसविहे कप्पे ठिया । कयरे ते ?—इमे वक्खमाणा—

आचेलुक्कुद्देसिय सेज्जायररायपिंडकिइकम्मे ।
वयजेट्ठ पडिक्कमणे मासं पज्जोसवणकप्पे ॥

1 B ०मादीणं । 2 B ठायति । 3 B चेव अड्ढो० । 4 A निव्वीइए । 5 A ०ट्ठाणे । 6 B हेट्ठाहुन्तो । 7 A ०व्वीइयगं । 8 A तम्मिन्नेव । 9 B बिइयचुन्निगारा० । 10 A एते । 11 A पुस्तके 'अन्नतरगो'अपपाठः । 12 A अइया । 13 A ०णता । 14 एते । 15 'एएसिं' आरभ्य 'घेप्पंति' यावत् पाठः A पुस्तके पतितः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे पुण मज्झिमजिणसन्तगा महाविदेहगा य ते अकप्पट्ठिया। कप्पट्ठिया दुविहा–सावेक्खा, निरवेक्खा य[1]। सावेक्खा गच्छवासी, निरवेक्खा जिणकप्पियादयो। एवमकप्पट्ठिया वि सावेक्खा निरवेक्खा य। परिणया गीयत्था, अपरिणया अगीयत्था। कडजोगिणो चउत्थ-छट्ठट्ठमाईहिं विविहतवोवहाणेहिं[2] जोगवियसरीरा। अकडजोगिणो अपरिकम्मवियसरीरा। तरमाणगा धिइसंघयण-संपन्ना। अतरमाणगा एएहिं विउत्ता[3]।

७२. 'जो जह' इच्चाइ। एएसिं कप्पट्ठियाइयाणं सावेक्ख-निरवेक्खमेयाणं जो जह सक्केइ तवं काउं। बहुतरगुणो नाम धिइसंघयणसंपन्नो[4] परिणयकडजोगी आयपरतरो[5] वा होज्जा। तस्साहियं पि दिज्जइ। कओहिंतो अहियं?—जीयववहारभणियाओ[6]। जो पुण हीणो धिइसंघयणाईहिं तस्स थोवतरयं पि[7] जीयभणियाओ देज्जा। जो पुण सव्वहीणो तस्स[8] सव्वं झोसेज्जा[9], न किंचि दिज्जइ त्ति जं भणियं होइ।

७३. 'एत्थ पुण' इच्चाइ। एत्थ एयम्मि जीयववहारे बहुतरया भिक्खुणो त्ति। ते य अकयकरणा अजोगविया अणभिगया अगीयत्था। च सद्देण अथिरा विय त्ति। जं तेण कारणेण जीयववहारे अट्ठमभत्तं अन्तो निव्वीइयमाईए। एयं मज्झं गहियं जन्तविहीए। एयस्सेव फुडीकरणत्थं[10] जन्तविहाणं भणामि। तिरियाए तेरसघरए काउं हेट्ठाहुत्तो य जाव नव घराइं पुण्णाइं ताव ठावेयव्वं। पच्छा एएसिं णवण्हं हेट्ठा जाइं दाहिणेण अन्तेठियाणि दोन्नि घरयाइं ताइं मोत्तूणं अहो एगं घरयं वड्ढाविज्जइ। ताहे तिरियायया[11] एक्कारस घरया होन्ति। पुणो एएसिं एक्कारसण्हं सव्वदाहिणा दुवे मोत्तूणं अहो एगं घरं वड्ढाविज्जइ। ताहे ते आयता णव घरा होन्ति। एवं दुवे दुवे छड्डुन्तेणं घरयाइं हेट्ठिल्लदाहिणिल्लाइं ता नेयव्वं, अहो एक्केक्क घरयवड्ढीए जाव एक्कमेव घरयं सव्वाऽहोजायं। एवमेयस्स घरजन्तयस्स सव्वुवरिं[12] तिरियायया[13] सेढी। तीसे सेढीए उवरिं सव्वाईए[14] निरवेक्खं ठावेज्जा। निरवेक्खस्स य[15] दाहिणेण बिइय-तइयघर[16]मज्झनिग्गयरेहोवरिं आयरियं कयकरणं अकयकरणं च ठावेज्जा। चउत्थपंचमघरयमज्झविणिग्गयरेहोवरिं कयकरणं उवज्झायं अकयकरणं च ठावेज्जा[17]। छट्ठसत्तमअट्ठमनवमघरयमज्झविणिग्गयरेहोवरिं गीयभिक्खुं[18] ठावेज्जा, थिरं अथिरं च। तत्थ जो सो थिरो सो कयकरणो अकयकरणो य। अथिरो वि कयकरणो अकयकरणो य। तओ[19] पुण दसमएक्कारसबारसतेरसघरयमज्झविणिग्गयरेहोवरिं अगीयभिक्खुं ठावेज्जा, थिरमथिरं च। थिरं कयकरणं अकयकरणं च। अथिरं कयकरणं अकयकरणं च ठावेज्जा। एवं ठावेऊण णिरवेक्खहेट्ठिमघरए सुन्नं ठावेयव्वं। जम्हा तहिं पारंचियं पयं होइ। सो य निरवेक्खो सहावेण[20] चेव पारंचिओ तम्हा तहिं सुन्नं ठावेयव्वं। एयस्स दाहिणेण कयकरणायरियहेट्ठा पारंचियं। एवं[21] तहिं चेव अवराहे—जहिं कयकरणायरियस्स पारंचियं अकयकरणस्सायरियस्स तम्मि चेवावराहे अणवट्ठप्पं। एत्थ चेवावराहे—कयकरणोवज्झायस्स अणवट्ठं(ट्ठप्पं)। एत्थ चेवावराहे अकयकरणोवज्झायस्स मूलं। एत्थ चे[22]वावराहे गीयभिक्खु-थिरकयकरणस्स मूलं। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु थिरअकयकरणस्स छेओ। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु-अथिरकयकरणस्स छेओ। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु अथिर-अकयकरणस्स छग्गुरू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु-थिरकयकरणस्स छग्गुरू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु थिरअकयकरणस्स छल्लहू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु अथिर-

1 A वा। 2 A विहाणेहिं। 3 B ०णगा दोहि विजुया। 4 A पैन्ना। 5 A आयतरगो। 6 B ०यातो। 7 A 'पि' नास्ति। 8 A सस्स। 9 A सोसेज्जा। 10 B फुडीकरणत्थं। 11 B ०यायता। 12 B सव्वुप्परिं। 13 B ०यायता। 14 B सव्वातीए। 15 A 'य' नास्ति। 16 A ततिय। 17 'कय' आरभ्य 'ठावेज्जा' यावत् पङ्क्तिः पतिता A आदर्शे। 18 B गीयंभि०। 19 B ततो। 20 A सभावेण। 21 B एवं। 22 अत्र द्वित्राः पङ्क्तयः पतिताः A आदर्शे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयकरणस्स छल्लहू । एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु-अथिर-अकयकरणस्स चउगुरू । एवं एयाए[1] पन्तिए पायच्छित्तट्ठाणरयणा एवं कायव्वा । सुन्नं । पारञ्चियं । अणवट्ठप्प । अणवट्ठप्प । मूल । मूल । छेय । छेय । छग्गुरु । छग्गुरु । छल्लहु । छल्लहु । अन्ते चउ गुरू । एयाए हेट्ठा सुण्णं । अणवट्ठप्पो । मूलं २ । छेदो २ । छग्गुरू २ । छल्लहु २ । चउ गुरू २ । अन्ते सव्वदाहिणे चउ लहु । एयाए हेट्ठा मूलं २ । छेदो २ । छग्गुरू २ । छल्लहु २ । चउ गुरू चउ लहु २ । सव्वदाहिणे मासगुरू । एयाए हेट्ठा छेदो २ । छग्गुरू २ । छल्लहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । सव्वदाहिणे मासलहु । एयाए हेट्ठा छग्गुरू २ । छल्लहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । सव्वदाहिणे भिन्नमासो । एयाए हेट्ठा छल्लहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । सव्वदाहिणे वीसा । एयाए हेट्ठा चउगुरू २ । चउ लहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । सव्वदाहिणे पन्नरस । एयाए चेव हेट्ठा चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । सव्वदाहिणे दस । एयाए हेट्ठा मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वादाहिणे पंच । एयाए हेट्ठा भिन्नमासो २ । वीसा २ । पण्णरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा पंच । एयासिं च तिरियाययाणं घरयाणं आईए जं पयं जहिं अवराहे ठावियं तहिं चेवावराहे ताए पन्तीए पुरिसावेक्खाए सव्वे पच्छित्तपया चारेयव्वा । एवं विरईए पुरिसविभागेण पणगादी छम्मासावसाणे निव्वीयाइ अट्ठमभत्तंतं पुव्व भणियमेव ।

अहुणा पडिसेवणा भन्नइ—

७४. 'आउट्टिय' गाहा । आउट्टिया नाम जं उवेच्च पाणाइवायं करेइ । दप्पो नाम धावण-डेवणवग्गणाइओ, कन्दप्पो वा दप्पो । पमाओ नाम जं राओ दिया वा अप्पडिलेहन्तो[2] अपमज्जन्तो[3] य पाणाइवायाइयमावज्जइ । कप्पपडिसेवणा नाम कारणे गीयत्थो कडजोगी उवउत्तो जयणाए पडिसेवेज्जा । एसा पडिसेवणा । पडिसेवओ पडिसेवियव्वं च दोन्नि वि पडिसेवणाए सूइयाइं । तत्थ पडिसेवओ पुरिसो पडिसेवियव्वं पुण दव्वाइं । दव्वमाहाराइ । खित्तं छिन्नमडंबेयरं वा । कालो ओम-दुब्भिक्खाइ । भावे हट्ठ-गिलाणाइ । एवं एयं पडिसेवियव्वं ।

७५. ['जं जीयदाण' गाहा ।] जं जीयववहारेण मए पच्छित्तं भणियं तमणन्तरं सव्वं एयं चउण्हपडिसेवणाण आउट्टियाइयाण कयराए पडिसेवणाए पडिसेविए दिज्जइ ? । सन्देह सम्भवे इमं भन्नइ—तइयाए पमायपडिसेवणाए त्ति । दव्वाइए पडिसेविए सेसपडिसेवणासु पुण कहं भन्नइ । एत्तो च्चिय ठाणन्तरं वड्ढेज्जा । एक्कं । एत्तो त्ति जहाभणिय-पमाय-ट्ठाण-पायच्छित्ताओ एगट्ठाणवुड्ढी कायव्वा । पमाए निव्वीयाइ-अट्ठमभत्तन्तं, दप्पेण पुण पुरिमाइ-दसमन्तं होइ ।

७६. 'आउट्टिया' इच्चाइ । आउट्टिं आसेवमाणस्स[4] एक्कासणाई दुवालसन्तं दिज्जइ । अहवा सट्ठाणं । पाणाइवाए मूलं । सट्ठाणं जं जम्मि वा अवराहे सव्वबहुयं तस्स दिज्जइ तं चेव सट्ठाणं होइ । कप्पपडिसेवणाए पडिसेविए पडिक्कमणं, मिच्छादुक्कडमिति च भणियं होइ । अहवा तदुभयं आलोयणमिच्छादुक्कडं च ।

७७. 'आलोयण' इच्चाइ । आलोयणकाले वि जया गूहइ पलिउञ्चइ वा तया[5] सो संकिलिट्ठपरिणामो तस्स अहियं पुण्णं वा दिज्जइ । जो पुण आलोयणाकाले संवेगमुवगओ निन्दण-गरहणाइणा विसुद्धपरिणामो तस्स ऊणमवि देज्जा । जो पुण मज्झपरिणामो तस्स तम्मत्तमेव देज्जा ।

---

1 एयाए य पंतीए । 2 B •लेहिंतो । 3 B •मज्जितो । 4 A आउट्टियाए सेव• । 5 B तदा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७८. 'इति दव्वाइ'इच्चाइ। इति एवं दव्वखेत्तकालभावेसु चउसु वि बहुगुणेसु,[1] गुरुसेवा पहाणसेवा भण्णइ। एएसु बहुतरं देज्जा। 'हीणतरे हीणतरं' ति। दव्वखेत्तकालभावा जहा जहा हीणा तहा तहा हीणतरं पच्छित्तं देज्जा। सव्वहीणस्स झोसो वा कज्जइ।

७९. 'झोसिज्जइ' इच्चाइ। झोसिज्जइ त्ति मुच्चइ। सुबहुगमवि जाव अन्नं तवं वहइ ताव जइ अन्नमावज्जइ तो तं झोसिज्जइ। जहा[2] छम्मासपट्ठविए पञ्चहिं दिवसेहिं गएहिं अन्नमावन्नगो होज्जा। पढमगं वहन्तस्स पच्छिमं से झोसिज्जइ[3]। वेयावच्चकरस्स वा थोवतरं दिज्जइ। जावइयं वहन्तो वेयावच्चं काउं सक्केइ तावइयं से दिज्जइ। एयं[4] तवारिहं भणियं॥

अहुणा छेयारिहं भन्नइ—

८०. 'तवगव्विय' इच्चाइ। तवगव्विओ छम्मासखमओ। अन्नो वा जो विगिट्ठ-तवकरण[5]-समत्थो—किं मम तवेण किज्जइ[6] त्ति। तवअसमत्थो पुण गिलाणो असहू बालवुड्ढो[7] वा। तवं वा जो न सद्दहइ। [8]पुणो पुणो वा तवेण दिज्जमाणेण वि ण दम्मइ। अइपरिणामगो अइपसंगी वा। पुणो पुणो सेवेइ[9], सुबहुं वा। एएसु जहुद्दिट्ठेसु तवारिहावत्तीए वि छेओ चेव दिज्जइ त्ति। पुव्वपरियायस्स देसच्छेओ कज्जइ।

८१. 'सुबहुत्तर' इच्चाइ। सुबहुगा उत्तरगुणा पिण्डविसोहिमाईया। ते जो भंसेइ विणासेइ, पुणो पुणो छेयावत्तीओ करेइ। जो य पासत्थो। आइसद्देण ओसण्ण-कुसील-संसत्त-नीओ वा। जईण साहूण संविग्गाणं। पडितप्पइ वेयावच्चं करेइ। बहुसो य अणेगसो। उत्तरगाहाए अत्थपरिसमत्ती होही[10]।

८२. 'उक्कोस'मिच्चाइ। उक्कोसा तव भूमी। आइजिणिन्दतित्थे संवच्छरं। मज्झिमजिणाणं अट्ठमासा। वीरवरस्स छम्मासा। एयं उक्कोसं तवभूमीं समईओ। जो तस्स छेओ सावसेसं च से चरणं; तस्स छेओ पणगाईओ[11]। आइसद्देण दस-पन्नरस-वीसाई जाव छम्मासा। जावं वा धरइ परियाओ। छेयारिहं भणियं॥

अहुणा मूलारिहं भन्नइ—

८३. 'आउट्टिया' इच्चाइ। आउट्टियाए पञ्चिन्दियं वहेज्जा। मेहुणं दप्पेण सेवेज्जा। सेसा मुसावाय-अदिन्नादाण-परिग्गहा ते उक्कोसेणं[12] पडिसेवेइ। आउट्टियाए पुणो पुणो य त्ति। एवं जहुद्दिट्ठट्ठाणेसु मूलं।

८४. 'तवगव्विय' इच्चाइ। तवगव्विओ। आइसद्देण तवअसमत्थो। तवं असद्दहन्तो तवेण य जो न दम्मइ। मूलगुणे बहुविहे बहुसो य दूसेइ भञ्जइ वा। एवं उत्तरगुणे वि एस वइयरो। दंसणं वा वमइ। दंसणे वन्ते नियमा चरित्तं वन्तं। चरित्तम्मि दंसणे भयणा। दंसणे वा चरित्ते वा वन्ते चियत्तकिच्चो। किच्चाइं दंसणाईणि। तप्परिच्चाएण चियत्तकिच्चो। सेहेय त्ति सेहो जो अभिणवो सिक्खं गाहिज्जइ। अणुवट्ठविओ[13]। एएसिं जहुद्दिट्ठाणं मूलं।

८५. 'अच्चन्तोसन्न' मिच्चाइ। अच्चन्तोसन्नो नाम ओसन्न-पव्वाविओ। संविग्गेहिं वा पव्वावियमेत्तो चेव ओसन्नयाए विहरिओ जो, सो अच्चन्तोसन्नो। परलिंगं दुगं—घरत्थलिंगं, अन्नतित्थियलिंगं च। तं जो आउट्टियाए दप्पेण वा करेइ। मूलकम्मं—इत्थीगब्भादाणसाडणं जो करेइ। भिक्खुम्मि य विहियतवे। विहिओ तवो जस्स सो विहियतवो। छेयमूले वि अइक्कमिउं। अणवट्ठतवं वा पारञ्चियतवं वा। अइयारसेवणाए पत्ते एएसिं जहुद्दिट्ठाणं मूलं सव्वेसिं पि।

---

1 B पुस्तके 'चउ...णेसु' एतद्वाक्यं नास्ति। 2–3 'जहा' आरभ्य 'झोसिज्जइ' यावत् पाठः A पुस्तके पतितः। 4 B एवं। 5 B करणस्स०। 6 A कज्जइ। 7 A गिलाणअसहुबालवुड्ढा। 8–9 'पुणो०' आरभ्य 'सेवेइ' पर्यन्तः पाठः A आदर्शे पतितः। 10 B होइ। 11 B पणगादीतो। 12 B उक्कोसगे। 13 B अणुट्ठविओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६. 'छेएण' इच्चाइ। छिज्जमाणे छिज्जमाणे जया परियाओ निरवसेसो छिन्नो, तदा से मूलं। अणवट्टप्पतवावसाणे पारञ्चियतवावसाणे[1] य मूलं दिज्जइ। मूलावत्तीओ वा—पुणो पुणो आवज्जमाणस्स मूलं। एवं जहुद्दिट्ठकारणेसु सव्वत्थमूलं। मूलारिहं भणियं॥

अहुणा अणवट्ठप्पारिहं[2] भन्नइ—

८७. 'उक्कोस'मिच्चाइ। तदो (ओ) अणवट्ठप्पा पन्नत्ता; तं जहा—साहम्मियाणं तेणं करेमाणो १। अन्नधम्मियाणं तेणं करेमाणो २। हत्थादाणं दलयमाणो ३। उक्कोसं सचित्ताइयं। तेणेइ—पुणो पुणो तेणेइ। अईव पउट्ठचित्तो संकिलिट्ठचित्तो त्ति कोहलो होइ। पउट्ठचित्तो तेणेइ। सा य तेणिया दुविहा—साहम्मियतेणिया, परधम्मियतेणिया य। दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य। सचित्त-अचित्त-मीसया दव्वे। अन्नसंजओग्गहियखेत्ते अणणुन्नविए अवत्थाणं खेत्ते। काले जहिं करेइ। भावओ रत्तदुट्ठो। अन्नधम्मिया दुविहा—लिंगपविट्ठा, गिहत्था य। तिविहं तेणमेतेसिं आहारो उवही सचित्तं वाऽवहरइ त्ति। हत्थादालो गहिओ, सो य तिविहो—अत्थादाणो, हत्थालम्बो, हत्थातालो। तत्थ अत्थादाणो नेमित्तिओसन्नागारिया[3] भवगपडिभग्गवणियपेसणरूयगसउणी। बीइओ[4] उवणओ नउलगमेगो[5] घयगुलमंतो वसतणकट्ठाबाहिं अन्नो य सउणिगणिमित्तं। हत्थालम्बो असिवपुररोहउवसमणत्थमभिचारगाइ[6] करेइ। हत्थातालो जट्ठिमुट्ठिलउडोपलपहाराईहिं मरणभयणिरवेक्खो अप्पणो परस्स य पहरइ। सपक्खे च सद्देण परपक्खे य। घोरपरिणामो निरणुक्कोसो त्ति।

८८. 'अभिसेओ' इच्चाइ। अभिसेओ उवज्झाओ। जेसु जेसु अवराहेसु पारञ्चियमावज्जइ। बहुसो अणेगसो। आवन्नो वि अणवट्ठप्पो कीरइ। किं कारणं। जेण अणवट्ठप्पपारञ्चियमावन्नस्सावि मूलमेव दिज्जइ भिक्खुणो। जेण तस्स परं मूलट्ठाणं भवति[7]। तहा उवज्झायस्सावि परं अणवट्ठप्पपयं, अणवट्ठप्पावत्तीओ य। जया बहुसो आवज्जइ तया य अणवट्ठप्पं दिज्जइ।

८९. 'कीरइ' इच्चाइ। वएसु लिंगेसु वा[8] जम्हा न ठाविज्जइ तम्हा अणवट्ठप्पो। सो य अणवट्ठप्पो चउव्विहो—लिंगओ, खेत्तओ, कालओ, तवओ[9]। लिंगं दुविहं—दव्वे भावे य। दव्वलिंगं रओहरणाइ[10]। भावलिंगं महव्वयाइ। एत्थ चउभंगो। अणन्तरगाहासम्बद्धा इमा गाहा—

९०. 'अप्पडिविरय' इच्चाइ। सपक्खपरपक्खपदुट्ठो तेणगाइदोसेहिं। अप्पडिविरओ सपक्ख-परपक्ख[11]पहरणुज्जुओ। निरवेक्खो अणुवसन्तवेरो जो। सो दव्वभावलिंगेहिं दोहिं वि अणवट्ठपो। हत्थालम्बो, अत्थादाणो[12], ओसण्णाइया य तद्दोसाणुवसन्ता न भावलिंगारिहा। दव्वलिंगमत्थि तेसिं, भावलिंगेणाऽणवट्ठप्पा। खेत्तओ अणवट्ठप्पो जो जम्मि खेत्ते दोसमावन्नो सो तम्मि खेत्ते अणवट्ठप्पो। जहा अत्थादाणिओ[13] तम्मि चेव खेत्ते देसे वा न उवट्ठाविज्जइ। किं कारणं पुवब्भासा लोगो पुच्छेज्जा[14]। सो वा तं इड्ढिगारवमसमत्थो धारेउं। तेण अन्नत्थ उवट्ठाविज्जइ। उत्तिमट्ठपडिवन्नस्स वा तत्थेव भावलिंगं दिज्जइ।

९१. 'जत्तिय'मिच्चाइ। कालतो[15] अणवट्ठप्पो जो जेत्तियं कालं अणुवरतदोसो[16] सो तत्तियं कालं अणवट्ठप्पो। तव-अणवट्ठप्पो दुविहो—आसायणा-अणवट्ठप्पो, पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो य। तत्थासायणामिमेसिं करेज्जा। तित्थयर-पवयण-सुय-आयरिय-गणहराणं महिड्ढियाणं। जहा सव्वोवायकुसलेहिं अइकक्खडदेसणा कया। जाणन्ता य किं घरवासे वसन्ति, भोगे य भुञ्जन्ति। तहा इत्थीतित्थं। संघमहिक्खिवइ [17]पडिणीयताए वा वट्टइ। अहवा भणइ अन्ने वा संघा अत्थि

1 पतितमेतद्वाक्यं A आदर्शे। 2 A अणहप्पारिहं। 3 B निमित्तिदोसण्णगायरिया। 4 B बीइदो। 5 A नउलमेगो। 6 A चारुगाइ। 7 B हवइ। 8 B लिंगे वा। 9 A भावओ। 10 B रयहर०। 11 B पडिपक्ख। 12 B हत्थादा०। 13 B ०दाणितो। 14 B पुच्छिज्जा। 15 B कालओ। 16 A अणवरयदोसो। 17 A 'पडिणी०' आरभ्य ०'खिवइ' पर्यन्तः पाठो नोपलभ्यते A आदर्शे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सियालसुणगाणं विगाणं ति। एवं सुयं अहिक्खिवइ—पाययं ति। थाणे थाणे वा काया, पुणो पुणो वा वयाणि, पमाय-अप्पमाया वा। मोक्खदेसणाए जोइस-जोणिपाहुड-गणितेण वा किं पओयणं। तहा आयरियं जच्चाईहिं अहिक्खिवइ। तहा गणहरं महिड्ढियं। महिड्ढियगहणेण मूलगणहरा गहिया। जो वा जम्मि जुगे पहाणो तमहिक्खिवइ। इड्ढिरससायगरुया, सुहसाया, परोवएसु[1]ज्जुया मंखा इव, गिहिवच्छलगा न जईणं ति[2] एवमाईहिं आसाएन्तो[3] अणवट्ठप्पं पावेइ। एस आसायणा-अणवट्ठप्पो। पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो इमेहिं कारणेहिं—साहम्मिय-अन्न-धम्मिय-तेणियाए हत्थादालणादीहिं य आवज्जइ। तत्थ आसायणा-तवअणवट्ठप्पो जहन्नेण छम्मासा, उक्कोसेणं संवच्छरं। पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो जहन्नेणं बारसमासा उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि; इमाए गाहाए भिन्नइ[4]—

९२. 'वासं बारस' इच्चाइ। सो य जइ इमेहिं गुणेहिं जुत्तो तो अणवट्ठप्पतवं पडिवज्जइ।

संघयणविरियआगमसुत्तत्थविहीए जो समग्गो उ।
तवसी निग्गहजुत्तो पवयणसारे अहिगयत्थो॥
तिलतुसतिभागमेत्तो वि जस्स असुहो[5] ण विज्जई भावो।
निज्जूहणारिहो सो सेसे निज्जूहणा णत्थि॥
एय गुणसंपउत्तो पावइ अणवट्ठमुत्तमगुणोहो।
एय गुण विप्पहूणे तारिसगम्मी भवे मूलं॥

एयं ता उस्सग्गेणं। अववाएण[6] पुण कुलगणसंघकज्जाइं तेणाधीणाइं[7] सिंहणाइय[8]कज्जं वा पसाहियन्ति; तो थोवं थोवतरं वा से देज्जा[9]। संघोवा से सव्व[10]मेव मुञ्चेज्जा[11]। तस्स पुण अणवट्ठप्पतवं पडिवज्जमाणस्स को विही? किं वा तवं करेइ त्ति। एत्थ गाहा।—

९३. 'वन्दइ' इच्चाइ। गणनिक्खेवमित्तिरियं काउं परगणं पडिवज्जइ। पसत्थदव्वखेत्त-काल-भावेसु। पसत्थदव्वे; उच्छु-वणसंड-पउमसर-चेइयघराइसु खेत्ते; काले सुहदिवसे; भावओ सज्झागयं रविगयाइयं मोत्तुं आलोयणं पउञ्जइ। काउस्सग्गो कीरइ निरुवसग्गनिमित्तं सेसाणं[12] भयजणणणिमित्तं च। गच्छेण सहवासो एगखेत्ते, एगउवस्सए, एगपासे, अपरिभोए अच्छइ। सेहमाइए वि वन्दइ। ते पुण तं ण वन्दन्ति। परिहारतवो गिम्ह-सिसिर-वासासु जहन्नमज्झिमुक्कोसो। गिम्हे चउत्थ-छट्ठ-ट्ठमाइं। सिसिरे छट्ठ-ट्ठम-दसमाइं। वासासु अट्ठम-दसम-बारसन्ताइं। पारणए अलेवकडं। संखेवओ अणवट्ठप्पारिहं भणियं॥

अहुणा पारञ्चियारिहं भन्नइ—

९४. 'तित्थंगर' इच्चाइ। तित्थगराई जहा अणवट्ठप्पे तहा इहं पि भाणियव्वो। गणहरो तित्थगराणन्तरसीसो, सो महिड्ढियगहणेण गहिओ जो। जहिं जुगप्पहाणो। आयो लाभो संपत्ती य एगट्ठा। तस्स साडणा आसायणा। जहा जहा अभिनिवेसेण हीलेई तहा तहा आयस्स साडणं करिन्तो पारञ्चियं पावइ।

९५. 'जो य सलिंगे' इच्चाइ। तओ पारञ्चिया पन्नत्ताः तं-जहा—दुट्ठे पारञ्चिए, मूढे पारञ्चिए, अन्नमन्नं करेमाणे पारञ्चिए। दुट्ठो दुविहो–कसायदुट्ठो, विसयदुट्ठो य। सपक्ख–परपक्खे चउभंगो। सपक्खो समण समणी। परपक्खो गिहत्था। तत्थ कसायदुट्ठे उदाहरणं[13]–सासवनाले मुहणन्तए य सिहिरिणि उलुगच्छिओ त्ति। विसयदुट्ठे वि चउभंगो। तत्थ दुविह-दुट्ठो वि पढम-बिईयभंगे वट्टमाणो लिंगओ पारञ्ची। तईए अइसई देज्जा। अणइसई न देइ लिंगं। रायवहओ

1 B ०वदेसु०। 2 A तु। 3 B एवमातीहिं आसादिंतो। 4 A भिन्नति। 5 A असुभो। 6 A० वाए पुण। 7 B तेणहीणाइ 8 A सिंगणा०। 9 A दिज्जेज्जा। 10 A संघोवा सव्व०। 11 A मुच्चेज्जा। 12 'सेसा...मित्तं च' एतद्वाक्यं A आदर्शे नास्ति। 13 A उयाह०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा उदाइमारओ अन्नो वा। राइणो वा अग्गमहिसिं पडिसेवेइ। अग्गमहिसिग्गहणेण अन्नावि जा इट्ठा। च सद्देण जुवराय-सेणावइमाईणं वा अग्गमहिसीओ। बहुसो पुणो पुणो य; लोग-पगासो य जो स पारञ्चियं पावइ। इयरासु महिलासु पुण किं न पारञ्चिओ? भन्नइ—बहु अवाया रायग्गमहिसीए। कुल-गण-संघ-आयरिय-पत्थारनिव्विसयाईया दोसा जओ पहवन्ति त्ति[1]। इयरम-हिलासु पुण वयभंगदोसो, एगस्स य अवाओ होज्जा तेणं मूलं।

९६. 'थीणद्धि' इच्चाइ। थीणद्धी दरिसणावरण-कम्मभेओ निद्दा-पणगस्स। अइसंकिलिट्ठ-परिणामा थीणद्धी। पदुट्ठपुव्वाभिलसिओवरि सुत्तो वावारए केसवबलद्धं च जायए। उदाहरणाइं—

पोग्गलमोयगदन्ते फरुसगवडसालभंजणे चेव।

एवमाई उदाहरणा। अन्नोन्नासेवणं—अन्नोन्नाहिट्ठाणासेवणन्ति भणियं होइ। तत्थ पार-ञ्चियं। बहुसो पुणो पुणो य तेसु पारञ्चियावराहेसु एगरिसेण सज्जए पसज्जए जो।

९७. 'सो कीरइ' [इच्चाइ]। सो य पारञ्चिओ चउव्विहो—लिंगओ, खेत्तओ, कालओ, तवओ[2]। तत्थ दव्व-भावलिंगे चउभंगो। थीणद्धिमहादोसो। अन्नोन्नासेवणा-पसत्तो। रायवहओ अग्गमहिसीपडिसेवणाइएसु अवराहेसु उभयलिंगेणावि पारञ्ची।

९८–९९. 'वसहि' इच्चाइ। 'जत्थुप्पन्नो' इच्चाइ। खेत्तपारञ्चिओ जो जम्मि खेत्ते दूसिओ अच्छमाणो वा दोसं पावेज्जा। वसहीए एवं निवेसण-पाडग-साही-निओग-पुर-देस-रज्जाओ य जत्थ जत्थ दोसमावन्नो आवज्जिस्सइ वा ताओ ताओ[3] खेत्तपारञ्चिओ कीरइ।

१००. 'जत्तियमेत्त' मिच्चाइ। जो जावईयं कालं अणुवसन्तदोसो, दूसइ वा जावईयं कालं सो कालपारञ्चिओ। तवसा पारञ्चिओ दुविहो—आसायणापारञ्चिओ, पडिसेवणापारञ्चिओ य। आसायणापारञ्चिओ तित्थगराइट्ठाणेसु। विभासा पुव्वभणिया। पडिसेवणापारञ्चिओ तिविहो–दुट्ठे पारञ्चिए, पमत्ते पारञ्चिए, अन्नमन्नं करेमाणे पारञ्चिए। दुट्ठो दुविहो—कसायविसएहिं पुव्वभणिओ। पमत्तो पञ्चविहो—'कसाय–विगहा–वियड–इन्दिय–निद्द–प्पमाय' इति। एए भाणियव्वा वित्थरओ[4]। अन्नमन्नं करेमाणो पुव्वभणिओ। आसायणापारञ्चिओ जहन्नेण छम्मासा, उक्कोसेण संवच्छरं। पडिसेवणा-पारञ्चिओ जहन्नेण बारसमासे उक्कोसेणं बारसवासा। संघयणाइया गुणा जहा अणवट्ठप्पे; तवो वि तह चेव।

१०१. 'एगागी' इच्चाइ। जिणकप्पियपडिरूविओ खेत्तबाहिं ठाइ अद्धजोयणबाहिरओ। जओ विहरइ आयरिओ तओ तओ सो वि विहरइ। खेत्तओ बाहिरओ ठियस्स आयरिओ पइदिवसं अवलोयणं करेइ। सुत्तत्थपोरिसीओ दोन्नि वि दाउं गच्छइ तस्स समीवं। अहवा अत्थपोरिसिं अदाउं गच्छइ। अहवा दोन्निवि अदाऊण गच्छइ। अहवा दुब्बलो, असमत्थो तद्दूरं गंतुं, कुलाइकज्जेहिं वा वावडो, ताहे गीयत्थं सीसमन्नं वा पेसेइ। भत्तपाणं चायरियस्स आयरियपेसवियस्स वा जत्थ गओ अन्तराले वा से उवणेन्ति। पारञ्चिओ वि भत्तपाणाईयं पडिलेहणुव्वत्तणाइं वा अगिलाणो सयमेव करेइ। अह गिलाणो तो आयरिओ अन्नो वा से भत्ताइ आहारइ उव्वत्तणाइयं पि से कुणइ। सुत्तत्थेसु आयरिओ अन्नो वा से पडिपुच्छगं देइ। एवमेयं संखेवपारञ्चियारिहं भणियं।

१०२. 'अणवट्ठप्प' इच्चाइ। तवअणवट्ठप्पो तवपारञ्चिओ य भद्दबाहुसामिम्मि चरिमचउद्दस-पुव्वधरे दो वि वोच्छिन्ना। लिंग-खेत्त-कालाणवट्ठप्प-पारञ्चिया ताव अणुसज्जिज्जन्ति जाव तित्थं।

1 B जओ य हवन्ति। 2 A भावओ। 3 B तातो तातो। 4 B वित्थरवेण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०३. 'इतिएस' इच्चाइ। इतिकरणो परिसमत्तिवयणो। एस इति अणन्तरुद्दिट्ठो जीयकप्पो जीयववहारो कप्पो। वण्णणा परूवण त्ति एगट्ठा। समासओ संखेवओ। सोहणं विहियं जेसिं नाणाइयं ते सुविहिया साहू। तेसिमणुकंपानिमित्तं। कहिओ अक्खाओ। देओ दायव्वो अयं पुण। कहिं? पत्ते। किंविसिट्ठे? संविग्गवज्जभीरू, परिणामगकडजोगी, आयरियवन्नवादी, संगहसीलो, अपरितन्तबहुसुयमेहावी; एवमाइगुणसंपन्ने पत्ते। पुण सद्दोऽवधारणे । पत्ते चेव दायव्वो, नापत्ते। सुट्ठु परिच्छिया गुणा जस्स। एए चेव संविग्गाई भणिया गुणा। आइमज्झावसाणेसु ताव-च्छेय-निघसेसु य जच्चसुवन्नमिव अविगारि जं, तं सुपरिच्छियगुणं; तम्मि सुपरिच्छियगुणे सुत्तत्थयओ देओयमिति।

इति जेण जीयदाणं साहूणऽइयारपंकपरिसुद्धिकरं।
गाहाहिं फुडं रइयं महुरपयत्थाहिं पावणं परमहियं ॥
जिणभद्दखमासमणं निच्छियसुत्तत्थदायगामलचरणं।
तमहं वंदे पयओ परमं परमोवगारकारिणमहग्घं ॥

॥ जीतकल्पचूर्णिः समाप्ता। सिद्धसेनकृतिरेषा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीचन्द्रसूरिसंरचिता

जीतकल्पबृहच्चूर्णिविषमपदव्याख्या

नत्वा श्रीमन्महावीरं स्वपरोपकृतिहेतवे ।
जीतकल्पबृहच्चूर्णेर्व्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥

अत्रादौ शास्त्रारम्भे विघ्नोपशमनायेष्टदेवता-गणधर-स्थविर-प्रवचनानां यथाक्रमं वर्णनाय रूपकचतुष्टयमाह—

१. '**सिद्धत्थे**'त्यादि । सिद्धा निष्पन्ना अर्थाः प्रयोजनानि यस्य ज्ञानावाप्तौ सत्यां स सिद्धार्थः; समाप्तकर्तव्य इत्यर्थः। सिद्धं प्रसिद्धं शासनं संघो यस्य स तथा। सिद्धा अनादिप्रवाहतया नित्याः प्रसिद्धा अर्था जीवादयो यत्र श्रुते तत् सिद्धार्थं तच्छ्रुतं यस्य । ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः। सिद्धार्थस्य राज्ञः सुतं चापत्यम् । कम्?–वीरेभ्योऽतिक्रान्तेभ्यो वरः श्रेष्ठः, उपसर्गादिसहनप्रत्यलत्वाद्वीरवरस्तम् । वराः श्रेष्ठा वरा ईप्सितार्थलाभरूपास्तान् ददाति यस्तम् । वरा देवादयो यतयश्च तेभ्यो वरकाः प्रधानाः शक्रादयो गणधराश्च तैर्महितं पूजितम् । नमत प्रणमत हे जनाः! जीवेभ्यो हितो मोक्षमार्गप्रदर्शकत्वेन स तथा; तम् ॥

२. एकादशापि गणधरान् दुर्धरगुणधारकान्; धराधिपो मेरुस्तद्वत्सारा अचलत्वात्, तान्; चस्य गम्यमानत्वात् जम्बुप्रभवादींश्च समस्तसूत्रधरान् सूरीन् प्रणमत ॥

३. दशपूर्वधरान् नवपूर्वधरांश्च; अतिशयिन अवधिमनःपर्यायज्ञानिनः; अवशेषज्ञानिनश्च मतिश्रुतज्ञानिनः; यत्नेन सर्वानपि यतिगुणप्रवरान्; सर्वकालं त्रिकरणशुद्धेन भावेन नमत ॥

४. इतः स्थविरनमस्कारादूर्ध्वं प्रवचनं नमत । निर्वाणाङ्गमित्येतदेव व्याख्यानयति । निर्वाणस्याङ्गं कारणं जीवानां तद्गमकत्वात्—तत्प्रापकत्वादित्यर्थः। निर्वाणं मोक्षं गमयति प्रापयति जन्तून् निर्वाणगमिति प्राप्ते—अनुस्वारोऽलाक्षणिको निर्वाणङ्गमिति । प्रवचनमित्यस्यार्थमाह—प्रकर्षेण गतं स्थितं जीवादिवस्तुवाचकतयेति प्रगतम्, आगामिफलजननसमर्थं यत्तत् । प्रशस्तं वर्णादिगुणोपेतं कष्टप्राप्यं च यत्तत् । प्रधानं—तथा च दधिदूर्वादयः प्रशस्ता उच्यन्ते न तु प्रधानानि, प्रधानः पटादिरपि भवति न तु प्रशस्त इति व्यवह्रियते, इत्यनयोर्विशेषः । ततः प्रशस्तानि संसारोत्तारीणि वचनानि यत्र तत्प्रशस्तवचनम् । प्रधानानि द्रव्याणि वचनानि यत्र तत्प्रधानवचनम् । इत्यर्थत्रयोपेतं प्रवचनं नमत ॥

५. अधुना जीतकल्पसूत्रकर्तुर्**जिनभद्रगणे**र्वर्णनाय श्लोकषट्कमयं कुलकमाह—**नमह**इत्यादि—तं **जिनभद्रक्षमाश्रमणं** च नमतेति योगः। शेषाणि तद्विशेषणानि । युगप्रधानमिति—तत्कालीना आगमार्थवेदिनः पुरुषा युगमभिप्रेतं तेषु प्रधानस्तम् । प्रधानज्ञानिनां बहुमतम् । सर्वश्रुतिशास्त्राणि शब्दशास्त्रप्रभृतीनि तेषु कुशलं तद्वेदिनम् । दर्शनज्ञानयोर्योऽसावुपयोगमार्गस्तत्र स्थितं तत्परम् ॥

६. **जस्से**त्यादि—यस्य पादपद्मं भ्रमरा इव मुनिवरा यतयो रात्रौ च दिवा च सेवन्ते सदा नित्यं तं नमतेति योगः। अनन्यसाधारणविशेषणसामर्थ्यादनुक्तमपि विशेष्यं लभ्यते । कीदृशा भ्रमराः?—मकरन्दः किञ्जल्कस्तत्र तृषितास्तत्पिपासवः। यतयः कीदृशाः?—ज्ञानमेवाज्ञानज्ञादिभेदभिन्नं मकरन्दस्तत्तृषितास्तद्ग्रहीतुमिच्छवः। पुनः कीदृशा भ्रमराः?—अमृतमयवशगन्धाभिवासिताः—अमृतं जलं तेन निर्वृत्तममृतमयं पद्मम्, तस्य वशोऽधीनो यो *गन्धस्तेनाभिसामस्त्येन वासिता आहूताः शब्दिता इति यावत् । वाशृशब्दे—इत्यस्य स(?)रूपम् । यतयः कीदृशाः?*—मुखमेव निर्झरोऽपां प्रसवस्थानम्, *तत्रामृतमिव यन्मतं जिनागमस्तस्य* वशोऽधीनो यो गन्धः *परिमलः माहात्म्यरूपस्तेनाभिवासिताः—तदाकृष्टमानसा इत्यर्थः ॥*

७. समयशब्द आचारार्थोऽत्र, ततः स्वाचार-पराचारयोः प्रतिपादको य आगमः शास्त्रनिवहस्स च । लिपयश्चाष्टादशभेदाः । गणितं पाटीगणितादि । छन्दांसि च पिङ्गलादीनि । शब्दशास्त्रम् [व्याकरणं] । तैर्निर्मितो जनितो यशःपटहो दशस्वपि दिक्ष्वनुयोगविषयेऽनुपमो यस्य भ्राम्यति तं नमत ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. तथा, येनानुपममतिनाऽऽवश्यके ज्ञानानां मत्यादीनां विशेषा विशेषिताः कथिता अविशेषतः सामस्त्येन। ज्ञानिनां च विशेषाः प्रमाणानां विशेषा विशेषितास्तथा गणधराणां च पृच्छा येन विशेषितास्तं नमत ॥

९. येन छेदसूत्रस्था प्रायश्चित्तानामापत्तिर्या सविधिर्निर्यूढः। आचार्योपाध्यायादिकं पुरुषविशेषमाश्रित्य स्फुटः प्रकटः। केन कृत्वा दानस्य विरचना तया यत्नस्तेन। क जीतेन दानं तस्य कल्पस्तत्र। अन्ये तु येन छेद-श्रुतार्थान्, कथंभूतान्-आपत्तिदानयोर्विरचनं यत्र; तस्मात् जीतदानकल्पविषययोर्विधिः पुरुषविशेषमाश्रित्य स्फुटो यत्नेन निर्यूढ उद्धृतस्तं नमतेति, व्याचक्षते ॥

१०–११. भूयोपि परसमयवेदित्वं विशेषतस्तस्याह—**परे**त्यादि—सुसमिता ये सुश्रमणास्तेषां यः समाधिमार्गः प्रतिदिनाचरणीयमनुष्ठानं तेन क्षमाप्रधाना ये श्रमणास्तेषां निधानमिवैकम्, अनेनानेकसुशिष्यसंपत्समन्वितत्वं तस्याह। तं नत्वा। मदमथनम्। मानारिहंति मानारिहस्तम्। शेषं सुगमम्। स्कन्धकं छन्दः सर्वरूपकेषु; आर्यागीतिरित्यपरनामकम्।

पृ० पं० (पृ०=पृष्ठम्; पं०=पंक्तिः)

१—26. **कोवीत्यादि**—आचारचूलात्वान्निशीथस्याचारपदात् परत उपादानम्।

,,—27. **ववहारमाइयन्ति**—आदिग्रहणाद् भगवत्यादिपरिग्रहः।

,,—31. **[नाणाइयारेसु]**—नानातिचारेषु का आपत्तिः। 'आवत्ती पायच्छित्तगणसम्पत्ति' प्रायश्चित्तयोग्यता इत्यर्थः। **कम्मिवत्ति**—कस्यामापत्तौ अपरिमूढः सन्।

२—2. **कप्पियाइपहिन्ति**—पिण्डैषणा-वस्त्रैषणादिकल्पा येनार्थतः सूत्रतश्चाभ्यस्ताः स कल्पादिगुणोपेत उच्यते। **[अपत्तापत्त]**—अपात्रमयोग्यः; अप्राप्तः श्रुतेन वयसा च। येन नाधीतं श्रुतं सोऽप्राप्तश्रुतः। **[अवत्त]**—अव्यक्तो वयसा षोडशवर्षाणि यावत्, तदूर्ध्वं व्यक्तः पश्चकूर्चश्च यः। **[तिन्तिणिय]**—तिन्तिणिको झिगिझिगिणस (स्व) भावः। **[चलचित्त]**—सम्यक्त्वादिषु योऽस्थिरः स चलचित्तः। तथा चायोग्य उक्तो यथा—

तिन्तिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुब्बलचरित्ते। आयरिय पारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥

,,—6. **[कयपवयण]**—प्रोच्यन्ते तेनेति प्रवचनम्। वक्तीति प्रवदतीति वा प्रवचनम्। प्रतिष्ठावचनं वा प्रवचनम्। प्रवचने योगानन्यत्वात् सङ्घस्य सर्वपक्षेष्वपि सङ्घ एव प्रवचनशब्दवाच्यः। यतः—प्रवचनं श्रुतमुच्यते। तच्च भावश्रुतमुपयोगरूपम्। श्रुतोपयोगश्च न निराश्रय इति प्रवचनाश्रयत्वात्सङ्घः प्रवचनमभिधीयते। अत एवाह **जेण तं सुयमित्यादि** तद्-सङ्घोपयोगात्।

,,—14. **वत्तणुवत्तेत्यादि**—वृत्तः पात्रबन्धग्रन्थिदानादिकः। एकदा नवो जातः। ततोऽनुवृत्तः एकपुरुषं यावत्। ततः प्रवृत्तः पुरुषप्रवाहेण। अत एव बहुश आसेवितो महाजनेन। भाष्यकृता उक्तम्—

वत्तो नामं एक्कसिं अणुवत्तो जो पुणो बिइयवारे। तईयवारपवत्तो, परिग्गहीओ महाणेणंति ॥ १ ॥

,,—18. **सोहणन्ति**—शोधकम्। **मरुयाई**—धिग्जातयः। **कत्थइ त्ति**—द्विजातिवधे।

,,—21. **[पलास-खारोदगाइ]**—पलासक्षारं च उदकं च। आदिग्रहणादरिष्टकादिग्रहः, तद् यथा वस्त्रमलं शोधयति।

,,—25. **विसेसणं च सइसंभवे**—यथा विद्यावान् धनवान् गोमानयं वर इत्यादिषु प्रशस्तातिप्रचुराऽनन्यसाधारणविद्याधनगवादिवस्तुसद्भावेन यथाविशेष्यं विशिष्यते विद्यादिभिस्तदा तत्तत्र सम्भवि विशेषणं ज्ञेयम्। व्यभिचारे नीलोत्पलमित्यत्र नीलविशेषणं रक्तोत्पलादेरपि सम्भवाद् द्रव्यव्यवच्छेदाय नीलपदम्। एवमिहापि शेषागमादिव्यवहारसम्भवात्तदवच्छेदाय जीतपदम्।

,,—29. **[केवल-मण-ओहिणाणीति]**—केवल-मण-ओहिणाणीत्यत्र अवधिर्द्विधा—भवप्रत्ययः क्षायोपशमिकश्च। तत्राद्यो देवनारकाणाम्। तत्रायं विशेषः—

उप्पज्जमत्तेण उ खलु भवपच्चईओ हि जत्तिओ विसओ। सव्वं तं ओभासई न य वुड्ढी नव य हाणी [हि] ॥ १ ॥
गुणपच्चइओ ओही गब्भजतिरिमणुयसंपमोत्तूणं। कम्माण खओवसमे तदवरणिज्जाण उप्पज्जे ॥ २ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संख्यातायुष्कगर्भजतिर्यङ्मनुष्यान् मुक्त्वा न शेषाणां क्षायोपशमिकावधिसम्भवो युगलधर्मिकाणाम्। अवधिर्मूर्तिमद्रव्यविषयः। अत्र यदा केवली प्राप्यते तदा तदग्रतो दीयते। तदभावे मनःपर्यायज्ञानिनः समीपे। तस्याप्यभावे अवधिज्ञानिन इत्यादि यथाक्रमं वाच्यम्।

२—30. **अवसेस-पुव्वीत्ति**—अवशेषपूर्विणः—अष्ट-सप्ताद्येक-तदर्द्धान्तं यावत्।

२—31. **निशीथ-कल्प-व्यवहार-दशाश्रुतस्कन्ध-पञ्चकल्प**-प्रभृतिकं शेषं श्रुतं सर्वमपि श्रुतव्यवहारः। तदुक्तम्—'आयारपकप्पाई सेसं सव्वं सुयं विणिद्दिट्ठ' मिति। चतुर्दशादिपूर्वाणां श्रुतत्वाविशेषेऽप्यतीन्द्रियार्थेषु विशिष्टज्ञानहेतुत्वेन सातिशयत्वात् केवलादिवदागमत्वेनैव तानि व्यपदिष्टानि। यत आगम्यन्ते परिच्छिद्यन्ते अतीन्द्रियाः पदार्था अनेनेत्यागम उच्यते।

२—32. तथा आज्ञायत आदिश्यत इत्याज्ञा। तद्रूपव्यवहारस्तु केनापि शिष्येण निजातिचारालोचकेन आलोचनाचार्यः सन्निहितोऽप्राप्तः, दूरे त्वसौ तिष्ठति। ततः केनचित्कारणेन स्वयं तावत्तत्र गन्तुं न शक्नोति। अगीतार्थस्तु कश्चित्तत्र गन्ता विद्यते। तस्य हस्ते आगमभाषया गूढानि अपराधपदानि लिखित्वा यदा शिष्यं प्रस्थापयति; गुरुरपि तथैव गूढपदौ(दैः)प्रायश्चित्तं लिखित्वा प्रेषयति तदासौ आज्ञालक्षणस्तृतीयो व्यवहारः। तद यु(दु)क्तं 'देसन्तरट्ठियाणं गूढपयालोयणा आणा।' गूढपदानि च दर्शयिष्यति चूर्णिकृत्। जहा—पढमस्स य कज्जस्सेत्यादिना॥ **आसेवियसत्थत्थ त्ति**—अभ्यस्तशास्त्रार्थौ।

२—33. दूरदेशान्तरनिवासिनौ। **मइधारणा-कुसलं त्ति**—सन्दिष्टवस्तुनयनसमर्थम्।

२—34. गूढार्थैर्वाक्यैः। दर्पासेवनापदमेकम्, अपरं च कल्पासेवनरूपम्। ततः कल्पासेवनद्वितीयपदापेक्षया दर्पासेवनलक्षणं प्रथमं पदम्। तत्रापि दर्पासेवने दशपदानि दर्पाकल्पनिरालम्बनादीनि। तेषु मध्ये प्रथमपदेन दर्पलक्षणेन षट्कानि च त्रीणि। ततः प्रथमषट्कं व्रतषट्कलक्षणम्। अभ्यन्तरतन्मध्यवर्ति तत्र पठितमित्यर्थः। तत्रापि च प्राणातिपातादीनि षट् स्थानानि। तेषु मध्ये प्रथमं स्थानं प्राणातिपातरूपम्, आपन्नमित्येवं गूढपदेन प्राणातिपातातिचारं निर्दिष्टवान्। प्रथमषट्के द्वितीयादिस्थानेष्वतिदिशन्नाह—

२—35. **पढमेत्यादि। सेसेसु वि त्ति**—द्वितीयादिषु मृषावादादिषु स्थानेषु इत्थं वाच्यम्। द्वितीयं षट्कं कायषट्कलक्षणम्। तत्र प्रथमं च स्थानं पृथिवीकायविषयम्, शेषाणि च पदानि अप्कायादीनि। तेषु तृतीयं षट्कं अकल्पगृहभाजनादि-शोभावर्जनपर्यन्तलक्षणम्। तत्र पिण्ड-उपाश्रय-वस्त्र-पात्ररूपं चतुष्टयं यदनेषणीयं तदकल्प्यम्। करोटककंशपात्र्यादिकं च गृहभाजनम्। आसंदकमंचिकादिः पल्यङ्करूपम्। भिक्षां गतेन संयतेन गृहे नोपवेष्टव्यमित्येवं निषद्यावर्जनमुच्यते। स्नानवर्जनं पञ्चमम्। शोभावर्जनं षष्ठमिति। स्वस्थाने न्यक्षेण व्याख्यास्यते गाथेयम्। तत्र प्रथमस्थानमकल्पलक्षणम्।

२—36. **सेसेसु वि पएसु त्ति**—शेषाणि पदानि गृहभाजनादीनि तेषु। इदानीमतिदेशमाह-प्रथमपदं दर्पलक्षणममुञ्चता तत्रैव यानि अकल्पनिरालम्बनादीनि द्वितीयतृतीयादीनि पदानि निःशङ्कपर्यन्तानि तेषु वाच्यम्। यथा **पढमस्स य कज्जस्सा बिइएण पएण सेवियं जं च**। शेषं पूर्ववत्। ततः **तइएण पएण सेवियं जं** चेत्यादि। यावद् **दसमेण पएण सेवियं जं च** त्ति। इत्येवं प्रथमषट्कमाश्रित्य चारणीयम्। भूयोऽपि द्वितीयषट्कमाश्रित्य तृतीयषट्कं चाश्रित्येत्थमेव चारणीयं यावद्दशमपदमिति। अत एवाह—

३—5. **पुढविकायाइसु त्ति**। अपिशब्दोऽत्र दृश्यस्ततः पृथिवीकायादिष्वपीति दृश्यम्। द्वितीयं च कार्यं कल्पासेवनरूपम्। तत्र चतुर्विंशति पदानि भवन्ति। तेषु मध्ये प्रथमं पदं दर्शनलक्षणं तदर्थमासेवितमित्यर्थः॥ प्रथमादिपदव्याख्यामाह—**पढमं ठाणमित्यादि**—दर्प-कल्पासेवनेऽधिकृत्य प्रथमं स्थानं दर्पः, दर्पकल्पासेवनाश्रयणेन एतत्साध्यत्वादाकुट्टेरेतयोरेवान्तर्भावः। प्रमादस्य दर्प एवेति न तयोः पृथक् प्रायश्चित्तनिरूपणम्।

३—9. **परिग्गहो चेव त्ति**—च शब्दाद्रात्रिभोजनग्रहः। इत्येवं प्रथमषट्कविषयः।

३—10. **एवमकप्पाईसु वि त्ति**—नवसु पदेषु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३—11. द्वितीयं कार्यं कल्पः, कल्पासेवनामाश्रित्य ।

३—12. तत्र ज्ञानादीनि त्रयोविंशति पदानि तेषु मध्ये एकैकस्मिन् पदे; एवमष्टादशसु चतुर्विंशत्या गुणितेषु कल्पासेवनायामेतावन्तो भेदाः—४३२ । उभयासेवनयोर्भेदमीलने ६१२ गाथानां भवन्ति ।

३—14. **दुविहा पडिसेवणा-दप्पिया कप्पियेत्यादि—दप्पाईणि दसपयाणि वक्खाणेइ—**

३—17. **तत्थ दप्पो—धावणडेवणाई**—इत्यादि । अमीषामयमर्थः—धावण त्ति निःकारणेण खड्डयप्पयाणं धावणं । डेवणं गत्तवरंडाईफडणं । आदिशब्दात् मल्लवत् बाहुजुद्धकरणं, लगुडिभमाडणं ॥ १ ॥

अकप्पो नाम पुढवाइकायाणं अपरिणयाणं गहणं करेइ । अहवा उदउल्ल-ससणिद्ध-ससरक्खाइएहिं हत्थमत्तेहिं गिण्हइ । जं वा अगीयत्थेणं आहारोवहि उप्पाइयं तं परिभुंजंतस्स अकप्पो । पञ्चकादिप्रायश्चित्तशुद्धियोग्यमपवाद-सेवनविधिं त्यक्त्वा गुरुतरदोषसेवनं वा अकप्पो ॥ २ ॥

निरालम्बो ज्ञानाद्यालम्बनं विना नाणाईणि अवलंबिउं अकप्पियं पडिसेवइ सालम्बा; नाणाइ अवलम्बनं त्यक्त्वा अकारणेण पडिसेवइ जं सा निरालम्बा ॥ ३ ॥

३—18. **चियत्त त्ति**—त्यक्तं कृत्यं करणीयं येन स त्यक्तकृत्यः, त्यक्तचारित्रः । अयमर्थः—जं अववायेण निसेवियं गिलाणाइकारणे असंथरे वा, पुणो ते चेव हट्ठसमत्थो वि होउ (उं) निसेवंतो चियत्तकिच्चो भवइ ॥ ४ ॥

अप्पसत्थे त्ति—बलवर्णाद्यर्थं प्रासुकभोज्यपि जं पडिसेवइ सा अप्रशस्तपडिसेवणा, किं पुण अविसुद्धं आहाकम्माइं ॥ ५ ॥

३—19. **वीसत्थे त्ति**—अकिच्चं पाणाइवायाइ सेवंतो लोय-लोउत्तरविरुद्धं सपक्ख-परपक्खाउ अलज्जिरो वीसत्थो । सपक्खो सावगाइ; परपक्खो मिथ्यादृष्टयः ॥ ६ ॥

अपरिच्छिय त्ति—आयव्ययमपरीक्ष्य यः प्रवर्ततेऽपवादे । आयो लाभो, व्ययो लब्धस्य प्रणाशः; एसा अपरिच्छियपडिसेवणा ॥ ७ ॥

३—20. **अकडजोगि त्ति । जोगमकाऊण त्ति**—ग्लानादौ कार्ये गृहेषु वारत्रयपर्यटनमकृत्वा सेवते । यद्वा संथाराइसु तिन्नि वारा एसणीयं अन्निसिउं जया तइयवाराए वि न लब्भइ तया चउत्थपरिवाडीए अणेसणीयं घेत्तव्वं । एवं तिगुणं व्यापारमक्ष(कृ)त्वैव जा वियवाराए चेव अणेसणीयं गिण्हइ सोऽकडजोगी ॥ ८ ॥

निरणुतावि त्ति—जो साहू अववाएणावि पुढवाईणं संघट्टण-परियावण-उद्दवणं वा काउं पच्छा नाणुतप्पइ—'हा दुट्ठु कयं' सो अणणुतावी होइ-अपच्छायावीत्यर्थः । जो दप्पेणं पडिसेवेन्तो नानुतप्येतस्य विशेषः ॥ ९ ॥

३—21. **णिस्संको त्ति**—निरपेक्षः । अकार्यं कुर्वन् कस्याप्याचार्यादेर्न शङ्कते, नेहलोकस्यापि बिभेति ॥१०॥

३—23. दंसणाईणि चउवीसपयाणि, एएसिं इमं वक्खाणं—**दंसण त्ति**—दंसणपभावगाणि सत्थाणि **सिद्धि-विणिच्छय-सम्मत्यादि** गिण्हन्तोऽसंथरमाणो जं अकप्पियं पडिसेवइ जयणाए तत्थ, सो सुद्धोऽप्रायश्चित्त इत्यर्थः ॥

नाण त्ति—नाणनिमित्तं सुत्तं अत्थं वा गेण्हमाणो तत्थ वि असंथरे अकप्पियं पडिसेवंतो सुद्धो ॥

चरित्ते त्ति—जत्थ क्खेत्ते एसणदोसो, ताओ खेत्ताओ चारित्रार्थिना निर्गन्तव्यम् । तओ निग्गच्छमाणो जं अकप्पियं सेवइ तत्थ सुद्धो ॥

तव त्ति—तवं काहामि त्ति घयाइ नेहंऽतिपिवेज्ज, कए वा विगिट्ठतवे पारणे लायातरणाई पियेज्जा । लाया नाम वीहिया भुज्जिया भट्ठे ताण तंदुलेसु पेया कज्जइ तं लायातरणं भन्नइ तं, विगिट्ठतवपारणए अहवा आहाकम्मं पि देज्जा । मा अन्नेण दोसीणाइणा रोगो हवेज्जा । पारणगे आमलगसर्करादयो वा दीयन्ते । जयणाए सुद्धो । अतोऽग्रे **संजमे**ति पदं दृश्यते चूर्णिपुस्तकेषु परं तदशुद्धम् । तस्य स्थाने **पवयण त्ति** पदं पठनीयम् । **निशीथे** एतदीय-भाष्ये च इत्थमेव पठितत्वात्; चारित्रपदेनैव संयमार्थस्योक्तत्वाच्च । अतः पवयण त्ति व्याख्यायते—पवयणट्ठयाए किंचि पडिसेवंतो सुद्धो । जहा कोई रायाइ भणेज्जा 'मम विसयाओ नीह [र]' । एत्थ पवयणट्ठया सेवंतो सुद्धो । जह **विट्ठुअणगारो** । तेण रुसिएण लक्खजोयणपमाणं रूवं विगुव्विय लवणो चलणेणालोडिओ त्ति ॥

समिय त्ति—इरियं न सोहेइस्सामि त्ति चक्षुर्निमित्तं वैद्योपदेशादोषधपानं कुर्यात् । इरियासमिइनिमित्तं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेत्तचित्ताईओ होउं मा भासासमिएऽसमिओ होमि त्ति तप्पसमणट्ठया ओसहपाणं कुर्यात् । तइयाए समिईए अणेसणियं पि कयाइ गिण्हेज्जा । एसणदोसेसु वा दससु संकाइएसु गिण्हेज्जा । अद्धाणपडिवन्नो वा अद्धाणकप्पं पडिसेवेज्जा । आयाणनिक्खेवणसमिईए चलहत्थो होउं कंपणवाउणा गहिओ सो अन्नओ पमज्जइ अण्णओ निक्खेवं करेइ; तप्पसमणट्ठया वा ओसहं करेज्जा । पारिट्ठावणियसमिईए कायभूमीए वा किंचि विराहेज्जा ।

मणोगुत्तीए वियडं कारणओ पडिसेवियं तव्वसा मणसाऽगुत्तो कारणागुत्तो खेत्तचित्ताइ हवेज्जा ।

'साहम्मियवच्छलाइ-बालवुड्ढपज्जवसाणाण' नवण्हं पयाणं व्याख्या । साहम्मियवच्छलं पडुच्च किंचि अकप्पं पडिसेवेज्ज । जहा **अज्जवयरे**हिं असिवगमुंडो नित्थरिओ । तत्थ किं अकप्पं? भन्नइ—

तहे वा संजयं धीरो आसएहिं करेहिं वा । सयं चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासिज्ज पन्नवं—इति ॥

सिलोगो कण्ठ्यः । कुल-गण-संघकज्जेसु समुप्पन्नेसु वसीकरण-उच्चाटण-होमाइ रायाइयमुद्दिस्स पउंजेयव्वं । निमित्त-चुन्न-जोगा कायव्वा । आचार्यस्य असहिष्णोर्गिलाणस्स बालवुड्ढाण य जेण समाही तं कायव्वं । को य असहू? तत्थ राया जुवराया सेट्ठि-अमच्च-पुरोहिया य एए असहू पुरिसा भन्नंति । एए अन्तपन्ताइएहिं अभाविया । बालवुड्ढा य कारणे दिक्खिया होज्जा;–जहा **वयरसामी, अज्जरक्खिय**-पिया य । एएसिं पणगाइयाए जयणाए घेत्तुं समाहिहेउं दायव्वं । जयणाए अलब्भमाणे पच्छा जाव आहाकम्मेणावि समाहाणं कायव्वं ।

३—25. इयाणिं **उदयाइ-वसणपज्जवसाणाणं** अट्ठण्हं पयाणं व्याख्या उच्यते । तत्थ **उदय त्ति—** वाहो पानीयप्लव इत्यर्थः । **अग्गि त्ति**—दवाग्निरागच्छति । [**चोर त्ति**—]चोरा दुविहा उवगरणसरीराणं । **सावय त्ति**—गय-सप्प-सीह-वग्घाइ । **भय त्ति**—एयसयासाओ भयं । एएसिं अन्नयरकारणे उप्पन्ने थंभणिविज्जं मंतेऊण थंभेज्जा । विज्जाभावे पलायइ । पलाइउं असमत्थो श्रान्तो वा सचित्तरुक्खं दुरुहेज्जा, न दोसो । [**कंतार त्ति**—]कन्तारमध्वानं जत्थ भत्तपाणं न लब्भइ तत्थ जयणाए कयलगाई फलं वा उदगाई वा फासुयं गिण्हेज्जा । अडवी ४; दव्व-खेत्त-काल-भावावई चउहा । दव्वओ फासुयं दव्वं न लहइ । खेत्तओ अद्धाणपडिवन्नयाण आवई । कालओ दुभिक्खाइसु । भावओ गिलाणस्स आवई । तत्थ किंचि अकप्पियं पडिसेवेज्जा । तत्थ विसुद्धो । गीयाइ-अब्भासो व[स?]णं । कोई चारणाइदिक्खिओ वसणत्तो गीओच्चारं करेज्ज । पुव्वभाविओ पक्कताम्बूलपत्ताइ मुहे पक्खिवेज्ज । एसा दंसणाइया कप्पिया । एत्थ पडिसेवओ साहू, दप्पिया-कप्पियाइ पडिसेवणा, पडिसेवियव्वं च वयछक्काईणि अट्ठारसट्ठाणाणि । तत्थ य—

३—28. वयछक्क-कायछक्कं॰ गाहा । व्याख्याः—व्रतषट्कं प्राणातिपातादिपञ्चकरात्रीभोजनविरतिषट्कम् । पृथिव्यादयः षड्जीवनिकायाः । षट्कद्वयेन मूलगुणा उक्ताः । अथैतद्वृत्तिकल्पा अकल्प्यादयः षडुत्तरगुणा अभिधीयन्ते । तत्राकल्पो द्विविधः—शिक्षकस्थापनाकल्पः, अकल्प्यस्थापनाकल्पश्च । तत्राद्यः–अनधीतपिण्डनिर्युक्त्यादिशास्त्रसाधुना आनीतमाहारादि साधुभ्यो न कल्पते । उक्तं च—

अणहीया खलु जेणं, पिंडेसण १ सेज्ज २ वत्थ ३ पाएसा ४ । तेणाणिआणि जइणो कप्पंति न पिंडमाईणि ॥१॥
उउबद्धम्मि न अनला, वासावासे उ दोवि नो सेहा । दिक्खिज्जंती सेहट्ठवणा कप्पो इमो नवरं ॥ २ ॥

'दोवि त्ति'–नपुंसकाऽनपुंसकाख्यं द्वयं वर्षासु न दीक्ष्यते । शीतोष्णाख्यशेषमासाष्टके अनला नपुंसका न दीक्षार्हाः इति । [**अकप्पो**—] शिक्षकस्थापनाकल्पोऽकल्प्यः । अन्यश्च पिण्डशय्यावस्त्रपात्रानेषणीयचतुष्टयगोचरोऽकल्प्यः । उद्गमोत्पादनादिदोषरहितं च चतुष्कं कल्प्यम् । [**गिहिभायणं**—] गृहभाजनं गृहस्थसम्बन्धिकांश्यकरोटकतलिकामृन्मयकुण्डिकादिकमकल्प्यम् । **पलियंक त्ति**—आसन्दकशय्यामञ्चकादिके उपवेशनशयनीयरूपे सुषिरदोषान्न कल्पते उपवेष्टुं स्वप्तुं वा । **निसेज्ज त्ति**—भिक्षार्थं गृहे प्रविष्टस्य साधोस्तत्र निषदनं कर्तुं न कल्पते उत्सर्गतः; अपवादतस्तु साधुत्रयमध्ये अन्यतरस्य कल्पते जराभिभूतस्य व्याधिमतो विकृष्टक्षपकस्य च तपस्विन इति । एते च भिक्षाटनं न कार्यन्त एव । परमात्मलब्धिकाद्यपेक्षया सूत्रे त्रयस्योपवेशनं योज्यम् । [**सिणाणं ति**—] स्नानमङ्गप्रक्षालनं देशसर्वभेदभिन्नम् । [**सोभवज्जणं**—]शोभावर्जनं विभूषापरित्यागः । इत्यष्टादशस्थानगणः प्रतिषेवयितव्य आलोचनागोचरः ।

३—30. सोऊण॰ गाहा । तस्य गुरोः प्रतिसेवकस्य । स शिष्यः गूढपदावधारकः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोऊण त्ति—श्रुत्वा; प्रतिसेवनां आलोचनां च श्रुत्वा, क्रमविधिं च श्रुत्वा मूलोत्तरगुणविषयाम्। आगमं ज्ञात्वा, पुरुषजातं च आचार्यादि ज्ञात्वा। तदीयं पर्यायं व्रतवयोविषयम्, बलं च शरीरसामर्थ्यम्, क्षेत्रं च कर्कशसाधारणादिरूपं ज्ञात्वा। यस्मादागतस्तत्रैव गतः। अमुमेवार्थं प्रकटयति अवधारेउमित्यादिना।

३—31. **सो तउ त्ति**—स तकः गूढपदालोचनाकथकः। **सो०** गाहा। स आलोचना-दाता स्वयं गन्तुमसमर्थः स्वशिष्यं प्रेषयति; तदभावे आगतशिष्यस्यैव कथयतीति तात्पर्यम्।

३—32. **अणुमज्जिय त्ति**—निरूप्य विशोध्येत्यर्थः। **तं ति**—गूढपदालोचितमतिचारम्। तस्य गुरोः। **पच्छित्तं ति**—तपोदानरूपं ददाति, गूढपदैरेषां कथयति। तान्येव दर्शयति **पढमस्स ये**त्यादिना—

३—33. प्रथमस्येति दर्पासेवनारूपस्य। [**दसविहमालोयणं ति**—] दशविधालोचना दर्प-अकल्पादिदशपदात्मिका, तां विमृश्य, गूढपदौ प्रायश्चित्तं पाठयति। **नक्खत्ते भे पील त्ति**—अस्यार्थः-भे भवतां पीडा विराधना; नक्षत्रे कोऽर्थः-चन्द्रादित्यग्रहनक्षत्रतारकभेदतः पञ्चविधज्योतिश्चक्रमध्ये नक्षत्रभेदश्चतुर्थस्थानी। अतस्तेन चतुर्थव्रतगोचरा पीडा सूच्यते—इत्येके व्याचक्षते। अत्रैव—नक्खत्तमेगे मूलं भणंति, अन्ने हत्थं निद्दिसंति; अवरे मूलुत्तरगुणविराहण त्ति। तत्थ चउत्थ (०त्थतं b) इयव्वयविराहणाइयारे हत्थं ति हत्थकम्मं कयं। हत्थेण अदिन्नं वा गहियं। यद्वा व्रतषट्कादयः सप्तविंशतिसंख्या अनगारगुणा मूलोत्तरगुणरूपा नक्षत्रशब्देनात्राभिप्रेताः, नक्षत्राणामप्येतत्संख्याव्यवहारात्। तथा च अनगारगुणानाश्रित्य पठ्यते—'सत्तावीसाए अनगारगुणेहिं ति'। तत्र—

वयछक्कमिंदियाणं च निग्गहो भावकरणसच्चं च। खमया विरागया वि य मणसाईणं निरोहो य॥

कायाण छक्कजोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया। तह मारणंतियाहियासणा एए अणगारगुणा॥

इह व्रतषट्कं मूलगुणाः। कायषट्कं चेति द्वादश शेषाः (?)। तत्र मूलगुणे चतुर्थव्रतविषये पढमे छक्के चउत्थं भवेद्दाणमिति गाथापाठो द्रष्टव्यः। उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य **सुक्के मासे तवं कुणह त्ति** भणितं; चउमासं छमासं च तवं कुणह सुक्क इत्यप्यग्रतो भणितम्। परं शुक्लमासादिदानपक्षे उत्तरगुणानाश्रित्य द्रष्टव्यम्। कृष्णमासादिदानपक्षे मूलगुणविराधनामाश्रित्येति। नवरं उग्घाओ सुक्कमासो सड्ढसत्तावीसं दिवसनिष्पन्नो। अणुग्घाओ पडिपुन्नो तीसअहोरत्तनिष्पन्नो॥

४—2. **एवं ता उग्घाए[इ]**त्यादि—तत्र उद्घातो भागपातस्तेन निर्वृत्तं उद्घातिमं लघ्वित्यर्थः। एतन्निषेधादनुद्घातिमं गुर्वित्यर्थः। तत्र प्रथमं पञ्चकं, दशकं, पञ्चदशकं, विंशतिमं, पञ्चविंशतिमं, इत्येतत्सर्वं भिन्नमासशब्दवाच्यं ज्ञेयम्। मासलघु, मासगुरु, चउलघु, चउगुरु, छलहु, छगुरु। अन्यच्च द्विमासगुरु, त्रिमासगुरु, चउमासगुरु, पञ्चमासगुरु, छमासगुरु—एते सम्पूर्ण-निजनिजपरिमाणाः कृष्णमासशब्दवाच्याः, अनुद्घाताश्चोच्यन्ते। तत्र लघुगुरुदानेऽयं क्रमः—

अद्धेण छिन्नसेसं पुव्वद्धेणं तु संजुयं काउं। देज्जाहि लहुयदाणं, गुरुदाणं तत्तियं चेव॥

यथा-मासस्यार्द्धच्छिन्नस्य शेषदिन १५। एतन् मासापेक्षया पूर्वस्य पञ्चविंशतिकस्यार्द्धे सार्धद्वादशकेन संयुतं कृतं मासार्द्धं सार्धसप्तविंशतिर्भवति। इत्येवं दिनसंख्यानिष्पन्नः शुक्लमासः, उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य वाच्यः। शुक्लचतुर्मासः प्राचीनप्रक्रियया कृतः। एतावान् ११० भवति। शुक्लषण्मासिकं तपः १६५।

अणुघाए ताणि त्ति—तानि मासिकादीनि षण्मासान्तानि तपांसि अणुग्घाए त्ति सम्पूर्णानि कृष्णशब्दवाच्यादीनि द्रष्टव्यानि। तत्र गुरुमासिकं गुरुद्विमासत्रिमासचातुर्मासिकं पञ्चमासिकं षण्मासिकम्।

गु० मा० ३०	गु० द्विमा० ६०	गु० त्रि० ००	गु० चा० ०००	गु० पं० ००००	गु० ष० ०००००
ल० मा० २७॥	ल० ,, ४५	ल० ,, ७५	ल० ,, १०५	ल० ,, १३५	ल० ,, १६५.

अन्यच्चोच्यते किञ्चित्—अट्ठमाइणा तवेण जं बुज्झइ तं तवगुरुयं, निव्वीयाइणा छट्ठंतेण बुज्झमाणं तवलहुगं, कालओ जं गिम्हे बुज्झइ तं काललहुयं। अन्यच्च—

जं तु निरंतरदाणं जस्स व तस्स व तवस्स तं गुरुयं। जं पुण संतरदाणं गरुयं पि हु तं लहुं होइ॥

तवकाले आसन्न व गुरू वि होइ लहू लहू गुरुओ। कालो गिम्हो गुरु अट्ठाइतवो लहू सेसो॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इह तीर्थे उत्कृष्टतोऽपि षण्मासान्तमेवातिचारशुद्ध्यर्थं तपो भवति। अत उक्तं—मास-चउमास-छमासियाणि। इत ऊर्ध्वं च षण्मासिकेनाप्यशुद्धौ छेदमूलानवस्थाप्यपाराञ्चिकानि तत्तत्कालापेक्षया सूरिभिर्दीयन्ते। अतश्चूर्णिकृदाज्ञाव्यवहारे कृते गूढपदैरेव तानि वक्तुकाम इदमाह—**छेअं अओ वोच्छं ति। अओ त्ति**—षण्मासीए तपस ऊर्ध्वं छेदादिप्रायश्चित्तं गूढपदैराज्ञाव्यवहारत्वाद्वक्ष्ये। अन्यत्राप्युक्तम्—

'उस्सग्गेण वि सुज्झइ अइयारो कोइ, कोइ उ तवेण। तेण उ असुज्झमाणे छेयविसेसा विसोहिंति त्ति'॥ तत्र—

४—3. **छिंदं तु तयं भाणं ति॰** गाहा। अस्यायमर्थः—तयं तु तकत्, भाणं ति पूर्वव्रतपर्यायरूपं भाजनम्, छिन्दन्तु अपनयन्तु उत्सारयन्तु। पर्यायच्छेदं तु अतिचारानाश्रित्य 'छब्भागंगुलपणए' इत्यादिना वक्ष्यति। पूर्वपर्यायच्छेदेनाशुद्ध्यमाने साधवो व्रतस्य पर्यायस्य मूलं व्रजन्तु। अष्टमप्रायश्चित्तभाजो भवन्तु। तस्याप्ययोग्यतायां 'अव्वावडावगच्छे'—व्रजेयुरव्यावृताः, अव्यापाराः संतिष्ठन्तु, अनवस्थाप्यार्हा भवन्तु। तेनाप्यशुद्धौ तदयोग्यतायां 'अब्बिइया वावि' विहरन्तु। अद्वितीया एकाकिनः सन्तो वक्ष्यमाणपाराञ्चिकप्रायश्चित्तासेविनो भवन्तु। प्रागुपात्तं छेदं दर्शयति—

४—4. **छब्भागंगुले**त्यादिना। छेदो हि पञ्चकदशकादिरूपतया तत्तदतिचारापेक्षया तपोभूमिमपक्रान्तस्य यावत्पर्यायधरणं तावद्भवति। यदाह—

'उक्कोसं तवभूमिं समईओ सावसेस-चरणो य। छेयं पणगाईयं पावइ जा धरइ परियाओ॥'

गाथाद्वयस्यार्थः कथ्यते-**छब्भागंगुलपणगे त्ति**—सो आलोयणायरिओ, तस्स सीसस्स एयाए सन्नागूढं छेयपायच्छित्तं देइ। तं जहा-मास दुमास तिमास चउम्मास पंचमास छम्मासाणं पत्तेयं पत्तेयं अंगुलववएसं करेइ। तहा कए य जस्स मासमेत्तो परियाओ तस्स, पंचगे त्ति पंचसु दिवसेसु छिंदियव्वेसु, अंगुल त्ति मासस्स छब्भागो छिंदियव्वो त्ति भणियं होइ। **दसभाए ति भाग त्ति**—तस्सेव य अंगुलसन्नियस्स मासस्स दससु दिणेसु छिंदियव्वेसु अंगुलस्स तिभागो छिंदियव्वो त्ति भणइ। मासपज्जायस्स दसदिवसा छिंदियव्व त्ति भणियं होइ। **अद्ध-पन्नरसे त्ति**—तस्सेवांगुलसन्नियस्स मासस्स पन्नरसे त्ति पन्नरससु दिवसेसु छिंदियव्वेसु अद्धमंगुलस्स छिंदियव्वं ति निद्दिसइ। पन्नरस दिवसाणि छिंदियव्वाणि त्ति सब्भावो। **वीसाए तिभागूणं ति**—तस्सेव मासस्स वीसाए दिवसाणं छिंदियव्वाए तमेवंगुलं ति-भागूणं ति तइयभागेण ऊणं छिंदियव्वं ति भण्णइ। मासस्स दोन्नि भागा अवरा य त्ति भणियं होइ। **छब्भागूणं तु पणवीसे त्ति**—तस्सेव मासस्स पंचवीसाए दिवसाणं छिंदियव्वाए छब्भागूणं ति तमेवांगुलं छब्भागेण ऊणं छिंदियव्वं ति भणइ। मासस्स पंचवीसं दिवसा छिंदियव्वं ति। मासे छिंदियव्वे अंगुलं छिंदियव्वं ति भणइ॥ १॥ बिहिं मासेहिं छिंदियव्वेहिं अंगुलदुगं छिंदियव्वं ति भणइ॥ २॥ ति मासे छिंदियव्वे अंगुलतिगं छिंदियव्वं ति भणइ॥३॥ चउमासे छिंदियव्वे चउरो अंगुलाइं छिंदियव्वाइं भणइ॥ ४॥ पंचहिं मासेहिं छिंदियव्वेहिं अंगुलपंचगं छिंदियव्वं ति सन्दिसइ॥ ५॥ छम्मासपरियाए छिन्दियव्वे छअंगुलाइं ववइसइ॥ ६॥

४—5. **एए छेयविभाग त्ति**—एए त्ति पुव्वनिद्दिट्ठा, छेय त्ति छेयं सत्तमपायच्छित्तं तस्स विभागा विसेसा नायव्वा—जाणियव्वा। **अहक्कमेणं तु** त्ति जे जहा निद्दिट्ठा।

आज्ञाव्यवहारे दर्पिकीमासेवामभिधायाधुना कल्पिकीमाह—

४—6. **बिइअस्स कज्जस्से**त्यादिना। द्वितीयस्य कल्पासेवनारूपस्य ज्ञानदर्शनादिचतुर्विंशतिपदरूपस्य तद्गोचरामासेवनां श्रुत्वा शिष्येण कथ्यमानां सूरिर्ब्रूते—**आउत्तनमोक्कार त्ति**। आयुक्ताः संयमोद्यमविधायिनः पञ्चपरमेष्ठिस्मरणपरा भवंतु सूरयोऽप्रायश्चित्तिन इति भावः। नवरं—कारणपडिसेवा वि हु सावज्जा निच्छये अकरणिज्जा, किं सर्वथा नेत्याह—बहुसो वियाइत्ता। कर्तव्यमिति शेषः। अधारणिजेसु—अत्यागाढकारणेष्वित्यर्थः। "जइ वि य समणुन्नाया—सावद्यप्रतिषेवेति प्रक्रमः—तहवि य दोसो न वज्जणे दिट्ठो। दढधम्मया हु एवं नाभिक्खनिसेव-निद्दयया॥"

४—8. **एवं सो** इत्यादि। द्रव्यादिकं ज्ञात्वा परिभाव्य वेति शेषः। परिपृच्छ्य स्वकीयगणं स्वयमात्मगमनं विधत्ते, शोधिदाता सूरिः गीतार्थशिष्यं वा प्रेषयति। **अविज्जमाणे व त्ति** निजगमन-स्वशिष्याभावे। **तस्सेव त्ति** आलोचनातिचारकथकप्रेषितशिष्यस्यैव हस्ते गूढपदैरक्षतैः(रै?)र्लिखित्वा वा विशोधिं प्रेषयति।

४—10. धारणाव्यवहारस्तु—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'गीयत्थेणं दिण्णं सुद्धिं अवधारिऊण तह चेव । दिंतस्स धारणा सा उद्धियए य धरणरूवा जा ॥' सुगमा ।

४—13. **बहुसो पडितप्पियस्स त्ति**—अनेकशः कृतकार्यस्य । **अवसेस त्ति**—किञ्चिच्छेषाकर्णितागमस्य । अयमर्थः-वैयावृत्त्यकरणादिना गच्छोपकारी कश्चित्साधुरद्याप्यशेषच्छेदश्रुतयोग्यो न भवति ततस्तस्यानुग्रहं कृत्वा यदा गुरुरुद्धृतान्येव कानिचित् प्रायश्चित्तपदानि कथयति तदा तस्य तेषां पदानां धरणं धारणा अभिधीयते ।

४—15. जीतव्यवहारस्तु येष्वपराधेषु पूर्वमहर्षयो बहुना तपःप्रकारेण शुद्धिं कृतवन्तस्तेष्वपराधेषु साम्प्रतं द्रव्यक्षेत्रकालभावान् विचिन्त्य संहननादीनां च हानिमासाद्य समुचितेन केनचित्तपःप्रकारेण यां गीतार्थाः शुद्धिं निर्दिशन्ति तत्समयपरिभाषया जीतमित्युच्यते । अथवा यद्यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्तं कारणतः प्रायश्चित्तं वर्तितमन्यैश्च बहुभिरनुवर्तितं तत्तत्र रूढं जीतमुच्यते ।

४—19. **वत्तणु०** गाहा ।—

वत्तो नामं एक्कंसि अणुवत्तो जो पुणो बिइयवारे । तइयवारं पवत्तो सुपरिग्गहिओ महाणेणं ॥

बहुसो बहुस्सुएहिं जो वत्तो न य निवारिओ होइ । वत्तणुवत्तपमाणं जीएण कयं हवइ एयं ॥

तथा च—सो जह काईएणं अपडिक्कंतस्स निव्विगइयं तु । मुहणंतफिडियपाणग-असंवरे ए[व]माईसु ॥

एगं दिणं च वज्जे घट्टणतावेण गाढगाढे य । णिव्विगईमाईयं जा आयामंतमोद्दवणे ॥

विगलिंदणंतघट्टणपरियावणगाढगाढउद्दवणे । पुरिमड्ढाइ कमेण उ नेयव्वं जाव खमणं तु ॥

पंचिंदि-घट्टतावण-अणगाढगाढ-तहेव उद्दवणे । एगासणमायामं खमणं तह पंचकल्लाणं ॥

एमाईओ एसो नायव्वो होइ जीयववहारो । अणवज्जविसोहीकरो संविग्गगणगारविन्नो त्ति ॥

४—25. आगमव्यवहार(रा) न श्रुतमनुवर्तयन्ति । **जे पुणोत्यादि**—

'आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च । नेत्रवक्त्रविकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥' इत्यन्यत्रापि पठ्यते । नवरम्—इङ्गितं निपुणमतिगम्यं प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकमीषद्भ्रूशिरःकम्पादि । आकारः स्थूलधीसंवेद्यः प्रस्थानादिभावसूचको दिगवलोकनादिः ।

४—26. **वत्ति त्ति**—वक्त्रम् । **[णेत्तं]**—नेत्रं लोचनम् । **वयण त्ति**—वचनम् । एतदीयविकारादिभिः । **तिक्खुत्तो त्ति** त्रिकृत्वो वेलात्रयं संवादार्थम् । पलिउंचियं समायं, अपलिउंचियं अमायं ।

४—28. **सुयाभावे त्ति**—श्रुतवत्सन्निधानाभावे ।

४—29. **सुयववहाराणुसरिसो त्ति**—यतः श्रुतोक्तप्रायश्चित्तमेवात्रापि दीयते ।

४—31. **विसेसिउ त्ति**—आज्ञाव्यवहारः श्रुतोपदेशोचितप्रदानम् ।

४—32. **सव्वत्थय त्ति**—त्रिषु कालेषु, जीतस्य चिरानुवर्तनं यावत्तीर्थं तावत् ।

५—4. **तवेगदेसं ति**—द्वादशभेदस्य तपसः प्रायश्चित्तं तदेकदेश एव ।

५—5. **पारंपरिएण**—परम्परया । **उव्वेल्लणाए-परमसमसुह०**—सम्यक्सुखलक्षणः ।

५—9. अनादानं अग्रहणं नूतनकर्मणः ।

५—10. **अहव त्ति**—यद्वा संवरनिर्जरे एते सप्रभेदे कथ्येते—विशिष्टं लक्षणमेतयोर्भण्यत इति भावः । मिथ्यात्वाविरतिकषायप्रमादयोगानां निरोधः [संवरः] ।

५—11. अवरोधेन अपगमेन ।

५—13. इन्द्रियाणि पञ्च, तेषां विषयाः शब्दरूपरसस्पर्शगन्धाख्यास्तेषु इष्टानिष्टेषु रागद्वेषाकरणम् । विकथाः स्त्रीकथाद्याश्चतस्रः । निद्रा पञ्चविधा । मद्यं विकटम् । प्रमादोऽज्ञानसंशयादिकः । योगा मनःप्रभृतयः ।

५—14. धावनादिकं प्राग् व्याख्यातम् । स्फोटनं बाह्वाद्यास्फोटनं घटादिभेदनं वा ।

५—15. **असब्भूय त्ति**—असद्भूतोद्भावनम्—अंगुष्ठपर्वमात्रादिर्जीवः, नवकम्बलो देवदत्त इत्यादिकः ।

५—16. **ईसामरिस त्ति**—परसम्पदामसहनमीर्ष्या, अमर्षः क्रोधः, एते मनोव्यापाराः ।

५—20. **[उत्तरगुण]**—

पिंडस्स जा विसोही, समिईओ भावणा तवो दुविहो । पडिमा अभिग्गहा वि य, उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥

५—20. **[परीसह]**—

छुहा पिवासा सीउन्हं, दंसाचेलारइत्थिउ । चरिया निसीहिया सिज्जा, अक्कोसवहजायणा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलाभरोगतणफासा, मलसक्कार परीसहा । पन्नान्नाण-समत्तं इइ बावीसं परीसहा ॥

५—21. [**उवसग्ग—**] उपसर्गाः १६—

दिव्वा ४ माणुसगा चेव ४, वियाहिया तिरिच्छा य ४ । आयसंचेयणीया य ४ उवसग्गा चउव्विहा ॥

तत्र [**पुढोवेमाया**] पृथग् विमात्रा हास्येन प्रारब्धाः प्रद्वेषेण निष्ठाङ्गता इति ।

५—22. **कुसीलपडिसेवण त्ति**—चतुर्थव्रतलोपनम् । विषयाभिष्वङ्गिणा स्त्र्यादिना । [**घट्टणया**] घट्टनं रजसश्चक्षुःस्थस्य । [**थंभणया**] स्तम्भनता पादाद्यङ्गस्य । [**लसणया**] श्लेषनताऽङ्गानां वातादिना । [**पवडणया**] प्रपतनं भूमौ देहस्य ।

* **चरणसोहणत्थं चेति**—चकारात् ज्ञानदर्शनशुद्ध्यर्थं च प्रायश्चित्तं ज्ञेयम्, त्रयस्यापि मोक्षकारणत्वात् । चरणशुद्धिश्चारित्रश्रेष्ठता ।

६—13. **विगिंचमाणो विहीयइ त्ति**—यद् द्रव्यमधिकमकल्प्यं वा गृहीतं तद्विगिञ्चयन् त्यजन् विधिना तमतिचारं शोधयति ।

६—20. **जाव० तवो चिण्णो त्ति**—ततो महाव्रतेषु नावस्थाप्यते नाधिक्रियते इत्यनवस्थाप्यः ।

६—21. पारं तीरं तपसा अपराधस्य अञ्चति गच्छति ततो दीक्ष्यते यः स पाराञ्ची, स एव पाराञ्चिकस्तस्य यदनुष्ठानम् । तच्च पाराञ्चिकं लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहिष्करणम् । लिङ्गाईहिं पारंचिओ रहितः क्रियते इत्यर्थः ॥ दस पायच्छित्तपयाणि । तत्थ साहवो पुलाग-बउस-कुसील-नियंठा-सिणाय-भेया पंच । एएसिं जं जस्स भवति तमियाणिं भन्नइ—

आलोयण-पडिक्कमणे मीसविवेगे तहा विउस्सग्गे । ततो तवे य च्छट्ठे पच्छित्तपुलाके छप्पेए ॥

बउस-पडिसेवगाणं पायच्छित्ता भवंति सव्वेवि । थेराण भवे कप्पे जिणकप्पे अट्ठहा होइ ॥

आलोयणा विवेगो वा नियंठस्स उ दुवे भवे । विवेगो य सिणायस्स एमेया पडिवत्तिओ ॥

समायिक-साध्वादीनां च पञ्चानां यद्यस्य तत्कथ्यते—

सामाइसंजयाणं पच्छित्ता छेयमूलरहियट्ठ । थेराण जिणाणं पुण तवमंतं छव्विहं होइ ॥

छेओवट्ठावणिए पायच्छित्ता हवंति सव्वे वि । थेराण जिणाणं पुण मूलं तं अट्ठहा होइ ॥

परिहारविसुद्धीए मूलं ता अट्ठ हुंति पच्छित्ता । थेराण जिणाणं पुण छव्विहमेयं वि य तवंतं ॥

आलोयणा विवेगो य तइयं तु न विज्जइ । सुहुमम्मि संपराये अहक्खाए तहेव य ॥

अन्यच्च—

जा संजमया जीवेसु ताव मूला य उत्तरगुणा य । इत्तिरियच्छेयसंजमनियंठबउसा य पडिसेवी ॥

जा तित्थं ताव एए नेया । कृतं प्रसङ्गेन । प्रकृतमुच्यते—तत्र 'करणिज्जा जे जोगा' गाथायां (गाथाङ्क ५) योगाः प्रत्युपेक्षणादिकाः क्रियारूपाः ।

६—31. **आलीण**—आ ईषल्लीनः । बहुतरं लीनः प्रलीनः । भाष्ये तु—"आलीणा नाणाइसु; पइलीणा, कोहाईया पलयं जेसिं गया ते पलीणा उ" इत्युक्तम् ।

६—32. पादमुद्धृत्य अघर्षयन्—रीयेत-गच्छेत् । **तिरिच्छं ति** तिर्यक्कृत्वा कीटिकाद्याकुले देशे । **साहट्टु**-संहृत्य संकोच्य अग्रेतनफणादिना ।

६—34. **जा य सच्चेत्यादि**—पदार्थतत्त्वमङ्गीकृत्य या भाषा सत्या, परमवक्तव्या सावद्यत्वेन; अमुत्रस्थिता पल्लीति कौशिकभाषावत् ॥ १ ॥ तथा सत्यामृषा न वक्तव्या । यथास्मिन्नगरे दश दारका जाता इत्यादि तन्न्यूनाधिकभावे, व्यवहारतोऽस्याः सत्यमृषात्वात् ॥ २ ॥ या च मृषा, यथा—क्रोधाभिभूतो जनकः पुत्रमाह—न त्वं मम पुत्रः । मानाध्मातोऽल्पधनोऽपि पृष्ट आह—महाधनोऽहमित्यादि ॥ ३ ॥ या च बुधैर्जिनादिभिरनाचीर्णा असत्यामृषा आमन्त्रणि—प्रज्ञापनादिलक्षणा अविधिपूर्वकं खरादिप्रकारेण । न तां भाषेत् प्रज्ञावान्—बुद्धिमान्—साधुरिति गाथार्थः ॥ ४ ॥

७—1. **एवं**—वक्ष्यमाणन्यायेन शिष्यो भणतीति शेषः ।

७—9. **तेय त्ति**—तान् योगान् ।

* इदं पदं चूर्ण्यां नोपलभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७—10. **का अविसोही**—किन्तु विशुद्धिरेव तत्र विद्यते ।

७—11. **सुहुमपमाय**—यथोक्तविधिहासोऽलक्ष्यो यः गुरुसंदिष्टो यथा आलोचयति ।

७—12. **पुव्वं व त्ति**—कार्यकरणकालात् ।

७—14. **गहणे त्ति**—प्राकृतत्वात् ग्रहणानीति दृश्यम् ।

७—16. **सेज्ज त्ति**—वसतिः । **पायपुंछणं**—रजोहरणं उपवेशनरूपं च ।

७—17. **ओहिय इति**—'ओघेण जस्स गहणं भोगो पुण कारणा स ओहोही' । ओघोपधिः सः । 'जस्स य दुगं पि नियमा कारणाओ सो उवग्गहिओ ॥'

७—18. **गहणं तु त्ति**—गहणं कथनमित्यर्थः ।

७—21. **कुलगणे त्ति**—कुलं नागेन्द्रादिः, गणः कोटिकादिः ।

७—23. **बहियाणिग्गमो त्ति**—किमपेक्ष्य बहिरित्याह ।— **गुरुमूलाओ** त्ति । किमर्थं यातीत्याह—**कुलेत्यादि** ।

७—24. **चेइय दुविहभेयतद्दव्वे**त्यादि—चैत्यं पञ्चधा—साधर्मिकचैत्यं, यथा वा रक्तकसाध्वादीनां प्रतिकृतिरूपम् १ । मङ्गलचैत्यं गृहद्वारदेशादिनिकुट्टितप्रतिमारूपम् २ । शाश्वतचैत्यं नन्दीश्वरादिव्यवस्थितम् ३ । भक्तिचैत्यं भक्त्या क्रियमाणं जिनायतनम्; तच्च द्विधा–साधुनिश्रया क्रियमाणं निश्राकृतम् ४ । तदनिश्रया तु विधीयमानमनिश्राकृतम् ५ । तस्य सामान्येन जिनायतनाख्यचैत्यस्य द्रव्यं हिरण्यसुवर्णादिरूपम्, तस्य विनाशे जायमाने; तथा तद्द्रव्यविनाशने तस्य चैत्यस्य द्रव्यं उपकारकं दारूपलेष्टकादिवस्तु तस्य विनाशने सम्पद्यमाने द्विविधभेदे; त्त(?)त नलम्रोत्पाटितभेदतो द्विप्रकारभेदे—मूलोत्तरभेदाद्वा द्विविधभेदे । तत्र मूलं स्तम्भकुम्भकादि, उत्तरं तु छादनादि । स्वपक्षपरपक्षजनितविनाशाद्वैविध्याद्विविधभेदे । इह चैत्यतद्द्रव्यविनाशमुपेक्षमाणः साधुरनन्तसांसारिको भवतीत्युक्तम् । द्रम्मादिद्रव्यं काष्ठादिदलं चेत्यादिना द्विविधभेदं यत्तद्द्रव्यं चैत्यद्रव्यं तस्य विनाशस्य निवारणादीनि कर्तुं निर्गतो भवतीति चूर्ण्यक्षरार्थः ।

७—25. **पाडिहारियं**—याचितकम् । **अप्पणत्थं**—समर्पणाय ।

७—28. **सन्नायग त्ति**—स्वजनाः ।

८—1. **पासवण त्ति**—मूत्रं भूमौ व्युत्सृष्टं वोसिरइ ति मात्रके ।

८—6. असिवं व्यन्तरादिकृतोपद्रवम् । **ओमं ति** दुर्भिक्षम् । राजदुष्टः प्रत्यनीकपतिः । ग्लानो मन्दः । उत्तमार्थः पर्यन्तक्रियाराधनविषयः ।

८—7. **चक्कथूभ त्ति**—ऋषभजिनपदस्थाने बाहुबलिविनिर्मितं तक्षशिलानगर्यां रत्नमयधर्मचक्रं तद्दर्शनाय व्रजति । स्तूपो मथुरायाम् । प्रतिमा जीवन्तस्वामिसम्बन्धिनी पुरिकायाम् । यत्र सौरिकपुरादौ अर्हतो जन्म, निष्क्रमणभुवं उज्जयंतादि द्रष्टुम्, ज्ञानं तत्रैवोत्पन्नम् । निर्वाणभूमि-दर्शनार्थं च प्रयाति । [**वइग**] व्रजिकं–गोकुलम् । सङ्खडिप्रेक्षा विवाहादिप्रेक्षणम्; आदिशब्दात् शोभनाहारः शोभनोपधिर्यत्र लभ्यते । रम्यदेशदर्शनार्थं च व्रजतीति गृह्यते ।

८—13. **अप्पा० गाहा** । अल्पशब्दोऽभाववाची सर्वपदेषु । तेन मूलगुणविषया विराधना अल्पा न काचित् । पार्श्वस्थाऽवसन्नादिषु दाने ग्रहणे च न काचित् । सम्प्रयोगः सम्पर्कः । स पार्श्वस्थादिभिः सह न आसीत् । **ओह ति**—इयमोघतः संक्षेपत आलोचना ।

८—14. **अन्नम्मि वेलाए त्ति**—अर्धमासाभ्यन्तरेऽपि, अन्यस्मिन् सातिचारे, समुद्देशवेलायां अन्यस्यां वेलायां विभागतो विशेषत आलोचनीयम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८—16. **संविग्ग त्ति**—संविग्नाः प्रियदृढधर्माणः ।

८—18. श्रुतग्रहणायान्याचार्यमुपसम्पद्यमानस्य श्रुतोपसम्पत् । सुखं वा दुःखं वा समं सोढव्यमिति सुखदुःखोपसम्पत् । यथा क्षेत्रे वसतः मार्गे व्रजतश्च मम भवदीया निश्रेति सा तथाविधोपसम्पत् । विनयकरणार्थमुपसम्पद्यते यत्र गच्छान्तरे सा तथेति । तदुक्तं भाष्यकृता—

उवसंपय पंचविहं सुयसुहदुक्खे य खेत्तमग्गे य । विणयोवसंपया वि य पंचविहा होइ नायव्वा ॥

८—20. **विभागेण**—विशेषेण ।

८—25. **तट्ठाण त्ति**—तेषां मिथ्यादुष्कृतकरणस्थानानां स्वरूपनिरूपणाय ।

८—32. **अहिक्खेवो त्ति**—किं भवान् जानाति; जात्याद्युद्धट्टनादि वा । तथा च वक्ति—

डहरो अकुलीणो त्ति य दुम्मेहो दमगमंदबुद्धि त्ति । अवि अप्पलाभबु(ल)द्धी सिस्सो परिभवइ आयरियं ॥

९—1. **जाइकम्माईहिं ति**—अहो सन्तापिता वयमनेन रे बालिकेनेति ।

९—2. **जमलिय त्ति**—समश्रेण्या गच्छति । पुरोऽग्रतः स्थितो व्रजति । गुरुं प्रतीत्याभ्युत्थानकरणादिको यो विनयः कायिकस्तस्य भङ्गोऽकरणम् ।

९—4. **इच्छा०** गाहा । **उवसंपया०** गाहा—व्याख्या—इच्छया बलाभियोगमन्तरेण करणं इच्छाकारः—इच्छाक्रिया । तथा चेच्छाकारेण ममेदं कुरु । इच्छाक्रियया न बलाभियोगपूर्विकयेति भावः ॥ १ ॥ तथा मिथ्या—वितथानृतमिति पर्यायः । मिथ्याकरणं मिथ्याकारः मिथ्याक्रियेत्यर्थः । तथा च संयमयोगवितथाचरणे विदितजिनवचनसाराः साधवस्तत्क्रियाया वैतथ्यप्रदर्शनाय मिथ्याकारं कुर्वते मिथ्याक्रियेयमिति हृदयम् ॥ २ ॥ तथाकरणं तथाकारः, स च सूत्रप्रश्नगोचरो यथा भवद्भिरुक्तं तथेदमित्येवंरूपः ॥ ३ ॥ अवश्यकर्तव्यैर्योगैर्निष्पन्ना आवशि(श्य)की वसतेर्निर्गच्छद्भिर्या क्रियते ॥ ४ ॥ निषेधेन निर्वृत्ता नैषिधिकी, वसतौ प्रविशद्भिर्या विधीयते ॥ ५ ॥ आपृच्छनमापृच्छा, सा विहारभूमिगमनादिषु प्रयोजनेषु गुरोः कार्या ॥ ६ ॥ तथा प्रतिपृच्छा, सा च प्राग्नियुक्तेनापि कार्यकरणकाले कार्या, निषिद्धेन वा प्रयोजनतः कर्तुकामेनेति ॥ ७ ॥ तथा छन्दना च, प्राग् गृहीतेनाशनादिना कार्या, भवन्तो गृह्णन्तु ॥ ८ ॥ तथा निमन्त्रणा, अगृहीतेनैवाशनादिना अहं भवदर्थमशनाद्यानयामीत्येवंभूता ॥ ९ ॥ तथा चाभिहितम्—

आपुच्छणा उ कज्जे, पुव्वनिसिद्धेन होइ पडिपुच्छा । पुव्वगहिएण छंदण-निमंतणा होइ अगहिएण ॥

९—5. **[उवसंपयाओ]**—ज्ञानदर्शनचारित्रार्थमुपसम्पच्च विधेया ॥ १० ॥ इत्यादि शब्देन गृह्यते । लहुसगं-सूक्ष्मम्, तत्स्वरूपं गाथाद्वयेन दर्शयति—**पयले**त्यादिना । व्याख्या—**पयल त्ति**—दिवा कोइ साहू पयलंतोऽन्नेण साहुणा भन्नइ—'किं दिवा पयलायसि?' । तेण भणियं—'न पयलामि' । एवमवलवन्तस्स मासलहुयोगो लहु मुसावाओ । एवं जत्थ जत्थ मासलहु तत्थ तत्थ सुहमो य मुसावाओ ॥ १ ॥ **ओल्ले** त्ति—ओल्लं, वासं । कोइ साहू वासे पडमाणे अन्नयरपओयणे पडि(ट्ठि)ओ । अन्नेण साहुणा भन्नइ—'अज्जो किं वच्चसि? वासंते । पडि(ट्ठि)य साहुणा तओ भन्नइ—'वासंते हं न गच्छे ।' एवं भणिऊण वासंते चेव पडि(ट्ठि)ओ । तेण साहुणा भणियं—'नणु अलियं ।' इयरो पच्चाह—न । कथं? । उच्यते—नणु वासबिंदवो एए । वासं पाणियं तस्स एए बिंदवो थिवुगा । वृष्टिरिह आर्द्रत्वेचतुः (?) सा नेयं ॥ २ ॥ **मरुय त्ति**—कोइ साहू कारणविणि[ग्ग]ओ उवस्सयमागंतूण भणइ—'निग्गह, मरुया द्विजा भुञ्जते, अम्हे वि तत्थ गच्छामो ।' ते साहू जाव संपट्ठिया—कहिं ते भुञ्जन्ति? भिक्षाटने न दृष्टाः । तेण भन्नइ—नणु सव्वगेहेसु—आत्मीयगृहेष्विति ॥ ३ ॥ **पच्चक्खाणे त्ति**—कोइ साहू केणइ साहुणा उदग्गभोयणमण्डलिवेलाकाले भणिओ—'एहि भुञ्जसु' । तेण भणियं—'भुञ्जह तुब्भे; पच्चक्खायं ममेति ।' एवं भणिऊण मं[ड]लीए तक्खणा चेव भुंजिओ । तेण साहुणा वुत्तो—'अज्जो तुमं भणसि मम पच्चक्खायं?' । सो भणइ—'कहं न, नणु पाणाइवायाइया अविरइ सा मए पच्चक्खाया ।' अवश्यं प्रत्याख्यातमिति भावः ॥ ४ ॥ **गमणे त्ति**—केणइ साहुणा चेइयवंदणाइपओयणे वच्चमाणेण अन्नो साहू भणिओ—'वच्चसि?' । सो भणइ—'नाहं वच्चे, वच्च तुमं ।' सो साहू पयाओ । इयरो वि तस्स मग्गओ तक्खणादेव पयाओ । तओ साहुणा पुच्छिओ—'कहं न वच्चामि त्ति भणिऊण वच्चसि?' सो भणइ—'सिद्धन्तं न जाणसि' ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

कहं ? । उच्यते—'णणु गम्मइ गम्ममाणं, न अगम्ममाणं । जम्मि समएऽहं तुमे पुट्ठो, तम्मि समए न चेवाहं गच्छो ॥ ५ ॥ **परियाए त्ति**—कोइ साहू केणइ साहुणा वंदिउं कामेण पुच्छिओ—'कइ वरिसाणि ते परियाओ ? ।' सो एवं पुच्छिओ भणइ—'एयस्स साहुस्स मज्झ य दसवरिसाणि परियाओ ।' छलवादमङ्गीकृत्य ब्रवीति । सो पुच्छंतगसाहू भणइ—'मम नववरिसाणि परियाओ ।' एयस्स य वे पंचगा दसओ, इति मा पादपतनं कुरु ॥ ६ ॥ **समुद्देस त्ति**—कोइ साहू कारणनिग्गओ रविं परिवेसपरिवियंतं दट्ठूण ते साहवो सत्थे अत्थमाणे तुरियं भणइ—'भोजनवेला वर्तते, उट्ठेह ।' साहू गहियभायणा उट्ठिया भिक्षाटनाय । पुच्छंति—'कत्थ समुद्देसः?' छलवादी प्राह—नणु एस गमणमग्गम्मि । आदिच्चे गहणं राहुणा क्रियमाणं दर्शयति ॥ ७ ॥ **संखडे त्ति**—कोइ साहू पढमालिय पाणगाइ विणिग्गओ पच्चायाओ भणइ—'इह अज्ज निवेशे पउराओ संखडीओ ।' ते य साहवो भिक्षाटने गन्तुकामा इच्छंति ...... [**अत्र कियान् पाठः खण्डितः प्रतिभाति** ॥ **खुड्डग त्ति**—] 'कोइ साहू उवस्सयसमीवे मयं सुणहीं दट्ठूण खुड्डगं भणइ—'क्षुल्लक ! तव माता मृता ।' ताहे सो खुड्डओ परुण्णो । तं रुयंतं दट्ठूण साहू भणइ—'मा रुय, जियइ त्ति' । एवं भणिए खुड्डो अन्ने य साहुं भणंति—'किं तुमं भणासि जहा मया ?' । सो मुसावायसाहू भणइ—'एसा साणी जा मया, सा तुज्झ माया भवति' । 'कहं माया भवइ ?' अतीयकाले भविंसु । जओ भगवओ भणइ—एगमेगस्स णं जीवस्स सव्वजीवा माइत्ताए भज्जपुत्तधूयत्ताए भूयपुव्वा । तेण साणी [माया] भवति ॥९॥ **परिहारिय त्ति**—कोइ साहू उज्जाणाइसु ओसन्नाइ दट्ठुं आगंतूण भणइ—'मए दिट्ठा परिहारिया' । सो छलेण कहइ; इयरे साहवो जाणंति—जहा परिहारतवावन्ना अणेण दिट्ठा उज्जतविहारिणः ।' तदनु तद्दर्शनाय गमनादौ कृते यावद् दृष्टाः पार्श्वस्थाः । तदसौ छलवादी उत्तरयति—'नन्वेतेऽपि परिहारिका अभक्षादिपरिहरणात् । परिहरन्तीति परिहारिका इति कृत्वा' ॥ १० ॥ **मुहीओ त्ति**—एगो साहू विहा(या b)रभूमिं गओ—'उज्जाणदेसे इत्थी घोडमुही दिट्ठ'त्ति साहूणं कहेइ । अश्वमुखी स्त्री इत्यर्थः । जनगमने घोटिकां कथयति ॥११॥ **अवसगमणं त्ति**—कोइ साहू केणइ साहुणा पुच्छिओ—'अज्जो गच्छसि भिक्खायरियाए ?' सो भणइ—'अवस्सं गच्छामि ।' तेण साहुणा पगिहियभायणोवगरणेण भन्नइ—'एहि वच्चामो' । सो पच्चाह—'अवस्सगंतव्वे न ताव गच्छामि' । 'किं न जासि ?' पुच्छिओ भणइ—'वेला न ताव वट्टइ' परलोगगमणवेला मोक्खगमणवेला वा न ताव जायइ । तो न ताव गच्छामि । परं अवस्स परलोगं मोक्खं वा गमिष्यामीत्यर्थः ॥ १२ ॥ **दिस त्ति**—एगो साहू एगेण साहुणा पुच्छिओ—'अज्जो कयरं दिसं भिक्खायरियाए गमिस्ससि ?' । सो भणइ—'पुव्वं ।' सो पुच्छंतगसाहू अग्गाहेऊण गओ अवरदिसं । इयरो वि पुव्वदिसगमणवाई अवरं गओ । 'अज्जो ! तुमे भणियं "अहं पुव्वं गमिस्सामि ।" कीस अवरदिसमागओ ?' एवं पुट्ठो भणइ—'अन्नस्स अव[र]गामस्स इमा पुव्वा किं न भवइ ?। भवइ चेव ॥ १३ ॥ **एगकुले त्ति**—कुलं गृहं भिक्खनिमित्तुट्ठिएण साहुणा भन्नइ—'अज्जो ! एहि वयामो भिक्खाए' । सो भणइ—'अहमेगकुलं गच्छं, एगकुले एव मया अटितव्यं । वच्चह तुब्भे' । गया साहवो । सो वि य पच्छा बहुकुलायं पविसइ । तेहिं साहूहिं भणिओ—'अज्ज ! तुमे भणियं—एगकुले पविस्सिसं ।' बहुकुलपवेसे पुट्ठो भणइ—'कहं एगसरीरेण दोन्नि कुले पविस्सिसस्सं । एगं चेव कुलं पविसे ॥१४॥ **एगदव्वे त्ति**—साहुणा एगेण एगो साहू भन्नइ—'वयामो भिक्खाए ।' सो भणइ—'वच्चह तुब्भे । एकमेव मया द्रव्यं ग्रहीतव्यं' । तओ ओयणदोव्वगाइ बहुदव्वे गिण्हंतो तेसिं (हिं) साहूहिं दिट्ठो भणिओ य—'अज्जो ! तुमे भणियं—एगं दव्वं घेच्छं, कहं अणेगाणि गिण्हसि ?' । अत्थो—धम्मत्थिकायाईणि दव्वाणि छ तेसिं धम्माइयाणं मज्झे गहणलक्खणो पुग्गलत्थिकाओ एगो चेव । अन्नेसिं गहणलक्खणं नत्थि । तम्हा अहं एगं दव्वं गिण्हामि; बहुग्गहणेऽपि सति समस्तान्यपि द्रव्यमेकमेव ॥ १५ ॥

९—8. **लहुसादिण्णं पुणेत्यादि**—सूक्ष्मादत्तं उपलादिग्रहणविषयम् ।

९—9. **इत्तिरियं**—अल्पकामं वृक्षादिच्छायावग्रहादौ विश्रमणाय ।

९—10. लहुसमुच्छा द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदाच्चतुर्धा तां क्रमेणाह—**लहुसमुच्छा** इत्यादि । **कागाइसाणे त्ति** शय्यातरगृहादौ काकादिपातं निवारयति, बलीवर्दकल्पष्ठकं लघुपुत्रादि रक्षति ॥ १ ॥

९—11. **खेत्ते ओवास त्ति**—अवकाशः प्रतिक्रमणादिस्थानप्रवेशः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९—12. **रागद्दोसाइ** मासमध्येपि ॥ **एत्थ त्ति**—काकादौ । **ठाणा**—आपत्तिस्थानं; **छेप्पन्ति**—प्रतिक्रमणार्हमध्ये ।

९—17. **असंकिलिट्ठकम्मं ति**—कुष्ठादौ शरीरक्रियायाम् । छेदनं दुष्टाङ्गस्य । पीलनं रुधिरादिकर्मणः । भेदनं पक्वादिगडस्य । संघर्षणं दद्र्वादेः । अभिघातसेचनं लगुडादिप्रहारस्योष्णजलादिना । कायखाराइ प्रसूत्यादिषु । असुसिरं पुतादिः, सुसिरं उदरादिः । अणन्तरं अव्यवहितम् । परम्परं वस्त्रादिना व्यवहितमङ्गम्; इत्यादिकं असंक्लिष्टकर्म । कन्दर्पः-वाचिको नर्मादिभाषणम्; कायिकश्च धावनादिकः ।

९—22. **सव्वपदाणि**—दंसणाईणि २४ ।

९—25. **छूढे**—उत्क्षिप्ते । **पमादो** अज्ञा[ना]दिकस्तेन । **असंपउत्तस्स**—असंयुक्तस्य पञ्चविधप्रमादरहितस्य । **णोवउत्तस्स**—विस्मृतिरहितस्तस्य ।

९—30. **सन्नि त्ति**—संज्ञानं संज्ञा—देवगुरुधर्मपरिज्ञानं, तद्यस्यास्ति स संज्ञी श्रावकः । **सन्नायगा**—संज्ञातकाः स्वजनाः मातापित्रादिकाः । **भयं**—सप्तप्रकारं प्रसिद्धं । **सोगो**—अनिष्टानां द्रव्याणां संयोगेन शोकः । इष्टानां वियोगेन ।

९—32. **बाउसत्तं**—बकुशत्वं कश्मलचारित्रत्वम् ।

बउसं सबलं कब्बुरमेगट्ठं तमिह जस्स चारित्तं । अइयारपंकभावा सो बउसो होइ नायव्वो ॥

१०—4. **संभमो**—संभ्रमः संक्षोभः । **भयं**—दस्युविषयं । दस्यवश्चौराः । **मिलक्खु**—म्लेच्छाः । **बोहिय त्ति**—बन्दिकाः । **मालवा**—उज्जयनीतस्कराः । आतुरः—पीडितः । **दिगिंछा**—बुभुक्षा तृष्णादिभिः ।

१०—6. [**वोच्छिन्नमडंबाइ**]—वोच्छिन्ना जस्स सव्वासु वि दिसासु नत्थि कोइ अन्नो गामो नगरं वा तं; पार्श्वग्रामादिरहितं मडम्बं । तथा च—मडम्बं सव्वओ च्छिन्नमिति पठ्यते ।

१०—8. **अणप्पवसओ**—हस्त्यादिपरवशस्य । **कारणेहिं**—संभ्रमादिभिः प्रदर्शितैः । पवणाय विराधयेदिति शेषः ।

१०—10. मृषावादः कूटसाक्षित्वेन । मैथुनं अतिक्रमादिना । रात्रिभोजनं दियागहियाइभेदतः । दीर्घमार्गे व्रजतां घृतमिश्रकेलकादिरूपोऽध्वानकल्पः । **लेवाडइय त्ति**—क्षीरान्नादि उत्सर्गतो न ग्राह्यम् तदप्यापद्येत ।

१०—15. **दुच्चिन्तियं**—कुंकणार्यकवत् वनदवदानचिन्तनादि । दुर्भाषितं अभूद्भूतोद्भावनादि । दुश्चेष्टितं धावनादि ।

१०—25. **उवहि त्ति**—ओहेण जस्स गहणं, भोगो पुण कारणा स ओहोही ।

जस्स दुगं पि नियमा, कारणओ सो उवग्गहिओ ॥

१०—29. अशङ्कितं निर्णीतं दोषवदेवेदमिति, दोषवत्त्वेन । **विहिण त्ति**—अणावायमसंलोए इत्यादिकया ।

१०—31. [**कालाइच्छियं**—] प्रथमप्रहरगृहीतं तृतीयप्रहरान्तं यावद् ध्रियते अशनपानादि तत्कालातिक्रान्तम् । [**अद्धाणाइच्छियं**—] यद्द्व्यूतद्वयात्परेणानीतं नीतं वा परिभुज्यते तदध्वानातिक्रान्तम् ।

१०—32. **इंदियमाइहिं त्ति**—इन्द्रियमाया-इन्द्रजालादिभिः । चक्षुरादि-इन्द्रियाणां विक्रिया आसाढभूतिवत् । **गिलाणेत्यादि**—ग्लानादिव्यापृतत्वेन । सागारिका वा परिष्ठाप्यस्थाने सन्ति । स्थण्डिलस्य वाऽभावः । चोरादि भयं वा तत्रेत्यशनादि परिष्ठाप्यातिक्रमेऽपि विधिना परिष्ठापयन् शुद्धः । दुर्लभद्रव्यप्राप्तौ सहसात् लाभो वा जातः ।

११—7. **गमणं**—अन्नत्थ हत्थसयबाहिं ।

११—9. **पट्ठवण त्ति**—अनुयोगप्रारम्भादिविषया । **पडिक्कमण** न्ति अनुयोगस्य । **परियट्टणा** गुणनम् ।

११—10. **अणवज्जसुमिणं** दुःस्वप्नः । दुर्निमित्तं अपश्रुतिगोचरम् । दुःशकुनादेः प्रतिघातार्थम् । अष्टोच्छ्वासोत्सर्गकृतिरिति युक्तम् । तत्र वक्ष्यमाणगाथोक्तादिशब्दसूचितोऽयमर्थः ।

११—12. **उज्जाणी**—परकुयउं । **णईसंतारो**—नद्युत्तरणम् ।

११—14. **संघट्ट**—१ संघट्ट २ लेव ३ उपरिलेपैस्त्रिरूपो नदीसन्तारस्तत्र जङ्घार्धः संघट्टः । १ । नाभिं यावत् लेपः । २ । परेण लेवुवरि—नाभेरुपरि । ३ । बाहु उडुपसुप्पाकादिश्चतुर्थः । ४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११—16. सयणासणाणं जायणत्थं गओ। ते य दाया घरे अत्थि। वाउलो वा। तओ इरियं पडिक्कमिऊण जं किंचि कालं सज्झायं करेइ।

११—20. हत्थमेत्ते वि त्ति—रेल्लए जाते इति शेषः।

११—28. छिज्जइ त्ति—विभज्यते। पडिक्कमणं च अनुयोगस्य ज्ञेयम्।

१२—1. आदिशब्दात् कालप्रतिक्रमणे चेति च ग्राह्यम्, कालादिविपर्ययात्। ज्ञानाचारातिचारो भवति। व्यञ्जनादिभेदाद्वाकृतात्।

१२—5. हीलयति—वा यो गुरुम्।

१२—12. ओरसो त्ति—आन्तरः।

१२—15. वञ्जयति—व्यज्यते। सन्न त्ति—संज्ञाभिधानम्।

१२—16. अन्नाभिहाणेण वा भणइ त्ति—यथा 'धम्मो मंगल'मित्यादिपरित्यागेन 'पुन्नं कल्लाणमुत्तमं, दयासंवरनिज्जरा' इत्यादि नामान्तरेण। अर्थभेदस्तैरेव व्यञ्जनैर्यत्र विकल्प्यते, यथा आचारसूत्रे आवन्त्यध्ययनमध्ये 'आवंती के आवन्ती लोगंसि विप्परामसन्ती ति—अन्योऽर्थः कल्प्यते—'आवन्ति होइ देसो तत्थ उ अरहट्टकूवजा केया। सा पडिया हेट्ठे ऊ तं लोगो विप्परामसइ।' यत्र सूत्रार्थौ द्वावपि विनश्येते स तदुभयातिचारः। यथा—

धम्मो मंगलमुक्कत्थो अहिंसा पव्वयमत्थए। देवावि तस्स नस्संति जस्स धम्मे सया मसी॥
अहागडेसु रंधंति कट्ठेसु रहकारिओ। रण्णो भत्तंसि णो जत्थ गद्दभो जत्थ दीसइ॥

अत्र सूत्रं अर्थश्च द्वावपि विनश्येते। उभयविनाशे चरणनाशस्तदभावे मोक्षाभावस्तदभावाद्दीक्षानैरर्थक्यम्।

१२—19. अणागाढे सुए—दसवैकालिकादिके उद्देशकस्यातिचारेऽकालातिपाठे निर्विं०। आगाढे उत्तराध्ययनभगवत्यादिके श्रुते उद्देशकादिस्थानेषु पुरिमार्धादि क्षमणान्तम्। अर्थेऽप्येवम्।

१२—22. ओहेण—आगाढाणागाढादिभेदतोऽविशेषे।

१२—23. कमेण अहिज्जंतो त्ति—क्रमश्चायं—

ति वरिसपरियागस्स उ आयारपकप्पनाममज्झयणं। चउवरिसस्स सम्मं सूयगडं नाम अंगं ति॥ १॥
दसकप्पव्ववहारा संवत्सरपणगदिक्खियस्सेव। ठाणं समवाओ विय अंगेए अट्ठवासस्स॥ २॥
दसवासस्स वियाहा एक्कारस वासयस्स इमे उ। खुड्डियविमाणमाई अज्झयणा पंच नायव्वा॥ ३॥
वारसवासस्स तहा अरुणुववायाइ पंच अज्झयणा। तेरसवासस्स तहा उट्ठाणसुयाइया चउरो॥ ४॥
एगूणवीसगस्स ओ दिट्ठीवाओ दुवालसममंगं। संपुन्नवीसवरिसो अणुवाई सव्वसुत्तस्स॥ ५॥
जं केवलिणा भणियं केवलनाणेण तत्तओ नाउं। तस्सन्नहा विहाणे आणाभंगो महापावो॥ ६॥

१२—24. [अपत्तो]—तत्सूत्रमर्थं वा विवक्षितशास्त्रसत्कं क्रमेणाधीयानो न प्राप्नोति; पठनविषये व्रतादि पर्यायो वा यस्य न पूर्यते सोऽप्राप्तः। अन्यश्चायोग्यो यः सो अपत्तो त्ति—अपात्रं। स च तिन्तिणिकादिकः। तिंतिणिओ स्तोकोक्तेऽपि यत्किञ्चनभाषी। चलचित्तः—अस्थिरचित्तः। गणाद्गणान्तरं संक्रमणशीलो वाऽपात्रम्। अन्यश्चाव्यक्तः—अपात्रम्। अव्यक्तता च वयसाऽतिलघुः। वयश्च प्राणिनां कालकृता शारीरावस्था। श्रुतेन चाल्पल्पश्रुतोऽव्यक्तः। एतेषां सर्वेषामप्राप्तादीनां वाचना-श्रुतपाठनम्।

१२—26. जइ पत्तं प्राप्तं। सुएण श्रुतिक्रमेण। पत्तं वा पात्रं-योग्यम्।

१२—30. निसेज्जं ति—आचार्ययोग्याम्। च शब्दात् वन्दनकायोत्सर्गौ अनुयोगप्रारम्भे उत्सर्गत आयंबिलम्।

१२—34. विगई भुंजेऊण त्ति—जोगसमत्तीए तां भुक्त्वा पश्चात्कायोत्सर्गं विधत्ते। एगट्ठं ति एकत्र विकृतिमाचाम्लप्रायोग्यं च गृह्णाति।

१३—5. संकादयोऽष्टा ८।

१३—11. [भइमो]—भजामः सेवयामः कुर्म इत्यर्थः।

१३—13. मंडलि त्ति—तस्यां सर्वे संसृष्टभोज[जि]नः। मोय त्ति—योगः। जल्ल त्ति-सर्वे मलग्रस्ताः। पूजा राजादिभिः क्रियमाणा कुतीर्थिनाम्। अतिशयाद्वा मन्त्रादिकाः, मतानि वा तदागमान् श्रुत्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३—16. **मिच्छत्ताइसु**—मिथ्यादृष्टिचरकादीनाम्। **उववूहा**—उपबृंहा अप्रशस्ता।

१३—19. एवं शङ्कादीन् प्ररूप्य प्रायश्चित्तं चिन्त्यम्—**मिच्छत्ताईणं ति**। स्थिरीकरणादीनामादिशब्दाद्गृहीतानाम्।

१३—23. **च शब्देन** देशे क्षमणमिति योगः।

१३—24. **ओहओ त्ति**—पुरुषानपेक्षया। **अट्ठसु वि त्ति** मिथ्यात्वविषयेषु च सर्वतोऽष्टास्वपि देशरूपासु भिक्षुवृषभउपाध्यायाचार्याणां चतुर्णां यथासंख्यं पुरिमड्ढादि यथोपदिष्टम्। तच्च **देसे भिक्खुस्से**त्यादिना दर्शितम्। मिथ्यात्वविषयेषु च सर्वतोऽष्टास्वपि मूलमिति वक्ष्यति।

१३—26. प्रशस्तेषूपबृंहणादिषु यत्यादिविषयेषु इदमाह—**एवं चिय** इत्यादि। यतिविषयाणां उपबृंहादीनामविधाने। **अणन्तरुद्दिट्ठं ति**—पुरिमाई खमणंतमित्येतत्।

१३—31. **तप्पसाएणं ति**—पार्श्वस्थादिप्रसादतस्तदवशात्। पार्श्वस्थादीनां परिपालनादिकं वाच्छल्यं कुर्वतां भिक्षुप्रभृतीनां यथोपदिष्टं प्रायश्चित्तम्।

१४—6. ननु पृथिव्यादीनां चतुर्णां भवतु संघट्टनं अप्कायं प्रति कथं संघट्टनादि संभवति, द्रवरूपत्वेन स्पर्शेऽपि मरणं संभवादित्याह—**आउक्काएत्यादि**।

१४—7. **ईसिं** मनाक्। घटादिस्थस्य चालने पादादिना संघट्टः। परितापो गाढतरचालना। **उद्दवणं** च वह्निना परितापनं। हननं दण्डादिना। पानेन चरणादिक्षालनादिना च उद्दवणं अप्कायस्य।

१४—9. **अणागाढा** अनिर्भराम्। पञ्चेन्द्रियसंघट्टश्च—तदर्हजातमूषिकागिरोलिकादिसर्वविषयो दृश्यः।

१४—13. **पमाय०**—प्रमादतोऽपद्रापणे। **एक्ककल्लाणगं**। नि०। पु०। ए०। आ०। उ०। इत्येककल्याणकादिविषयः।

१४—15. तत्र मृषावादो धर्मास्तिकायादिसर्वद्रव्यविषयः। अदत्तादानं ग्रहणधारणीयवस्तुविषयम्। परिग्रहस्तु सचित्ताचित्तमिश्रसर्वद्रव्यविषयः। क्षेत्रतो लोकालोकविषयौ मृषावादपरिग्रहौ। अदत्तादानं च ग्रामाद्याश्रयम्। कालतश्च दिवारात्रौ वा। भावतो रागतो देसतो वा। त्रितयमपि जघन्यादिवस्तुविषयं मृषावादाद्यपि जघन्याद्युच्यते।

१४—20. लेवाडयपरिवासे पात्रतुम्बकपात्राबन्धखरण्टितपर्युषितत्वे अभक्तार्थो। सुंठ्यादौ च।

१४—22. **पढमभंगो त्ति**—दिवा गृहीतं दिवा भुक्तं परं रात्र्युषितं द्रष्टव्यमित्याद्यो भङ्गः।१। दिवा गृहीतं रजन्यां भुक्तमिति द्वितीयः।२। रजन्यां गृहीतं दिवा भुक्तमिति तृतीयः।३। रजन्यां गृहीतं तस्यामेव भुक्तमिति चतुर्थः।४। द्वित्रिचतुर्थेष्वष्टमम्।

१४—33. **ओद्देसियं** जमप्पणोट्ठाए रद्धं तम्मज्झाओ भिक्खाओ कइ विकप्पइ, दानार्थं य एष्यति तस्मै दत्ते १। उद्देसकडे कम्मे एक्केके चउव्विहो भेओ—जावंतियमुद्देसं, पासंडीणं भवे समुद्देसं, समणाणं आएसं, निग्गंथाणं समाएसमिति चत्वारो भेदाः। तत्राद्ये जाव इइ उक्कोइएयस्सइ पासंडीणं दायव्वं न गिहत्थाणं २। निर्ग्रन्थशाक्यादिभेदतः पञ्चधा श्रमणास्तेषाम् ३। निग्गन्थाण साहूणमेव नऽन्नेसिं ४। तत्थ संखडिभुत्तुव्वरियं चउन्हमुद्दिसइ जं तमुद्दिट्ठं। वंजणमीसाइकडं करंबादिकं। तमग्गितवियाइ पुण कम्मं गुलं विग्घारेऊण मोयए वंधिज्जा—इति कर्मौद्देसिकं।

१५—7. यावदर्थिकमिश्रपासंडमिश्र[साधुमिश्र]भेदतस्त्रिधा **मिश्रम्**। यत्र स्वगृहयोग्यजलकणादीनां मध्ये अधिकतरजलकणादीन् मिश्रितान् कृत्वा यदशनादि प्रथमतोऽग्निज्वालनाद्ग्रहणदानादिप्रस्ताव एव राद्धुमारभते। यावदर्थिकाद्यर्थं तत्त्रिधा।

१५—9. संघाडगस्स एगो भिक्खग्गाही। बीओ दिसुवओगं देइ। तइए गिहे निप्फेडिया। इत्तरठ्ठवियं। तओ परेण सव्वमेव चिरठ्ठवियं।

१५—10. सुहुमा—कप्पट्ठगस्स भत्तं न देइ, भणइ साहुस्स अट्ठाए उट्ठिया तुज्झ वि दाहं ति। बायरा—कप्पट्ठिए विवाहं काउकामो रहमईसु साहुसमागमं जाणिऊण ओसक्कणं करेज्जा।

१५—11. आहारसेज्जाइयं साहुणो भुंजिस्संति, रंधिउं अन्नो सव्वमेवाहारं बहिं नीणेइ साहुअट्ठाए। एयं **पागडकरणं**। रयणप्पईवजोईवायायणकुड्डछेड्डाइएहिं उज्जोयकरणं साहुअट्ठाए [**एयं पगा-**] **सकरणं**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५—16. **आहडं ति**—सग्गामाहडे निप्पच्चवायाए ।४। आहडं चिय आइन्नमणाइन्नं च, तिघरंतरमाइन्नं ।

१५—18. दर्दरकः जतुग्रंथ्यादिरूपः । पिहितं च छगणादिना ओलित्तं ।

१५—19. मालं सीककप्रासादोपरितलादिकमभिप्रेतम् । तस्मादाहृतं करग्राह्यं यदन्नादि दात्री ददाति तन्मालापहृतम् । नवरं त्रिधा एतज्जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदतः । जघन्योत्कृष्टयोरन्तरे मध्यमो गम्यत एवेति नोक्तम् । पाण्ड(ष्ण्यु)त्पाटनमात्रस्तोकक्रियागृहीतत्वाज्जघन्यं लघु । मञ्चकाद्यधो दत्वा यद्ददाति शिक्ककादेस्तन्मध्यमं मालापहृतम् । यदा च उच्चतरशिक्ककादेर्लड्डुकादिग्रहणाय मूडकनिश्रेण्याद्युदूखलं वा अधो दत्वा तस्मात् ददाति तदोत्कृष्टं भवति । अत्राप्यायामम् ।

१५—20. **अच्छेज्जं ति**—प्रभुर्गृहादिनायकः, अन्येषां दरिद्रकौटुम्बिकानां बलाद्दातुमनीप्सितामपि यद्देयं ददाति तत्प्रभुआच्छेद्यम् । स्वामी ग्रामादिनायकः, स यदा साधून् दृष्ट्वा कलहेनेतरथा वा कौटुम्बिकेभ्योऽशनाद्युद्दाल्य ददाति तदा स्वाम्याच्छेद्यम् । स्तेनाश्चौरास्ते सार्थकेभ्यो बलादाच्छेद्य यत्पाथेयादि साधुभ्यो दद्युस्तत् स्तेनविषयाच्छेद्यम् ।

१५—21. **अणिसट्ठं ति**—बहुभिः साधारणं बहुजनसाहिकं यदशनादि संखड्यादौ स्वाम्यमनुज्ञातं यदेको दद्यात्तत्साधारणानिसृष्टम् । चोल्लको भोजनम् । यथा किल कश्चित्कौटुम्बिको भक्ताहारकहस्तेन गृहात् क्षेत्रे हालिकानां भोजनाय चोल्लकं प्रस्थापयति । तत्र कौटुम्बिकेन साधूनां दानाय मुत्कलितचोल्लकमध्यात् यदि हालिकः किञ्चित्साधवे ददाति तदा चोल्लकानिसृष्टम् । तथा जड्डस्य हस्तिनः सम्बन्धि पिण्डरूपं वस्तु राज्ञा गजेन वाननुज्ञातत्वादनिसृष्टं जड्डानिसृष्टम् ।

१५—22. यावदर्थिकाः समस्तार्थिनः । पाषण्डिकाश्चरकादयः । साधवश्च निर्ग्रन्थाः । अत्र गृहिणः स्वार्थमभिज्वालनाद्यारहणदानान्ते आरंभे कृते सति पश्चात्स्वार्थकल्पितं तन्दुलमध्ये कर्पटिकार्थं तन्दुलादीनां माणकं संकल्पितं प्रक्षिप्य राध्नोति यदा, तदध्यवपूरकः । स च त्रिधा—स्वगृहयावदर्थिकमिश्रः, स्वगृहपाषण्डमिश्रः, स्वगृहसाधुमिश्र इति । इह आहाकम्मं उद्देसियचरिमतियं, भत्तपाणपूइयं, पासंडसाहुमीसं, बायरपाहुडिया दुविहा, अज्झोयरचरिमदुगं एए छउग्गम दोसा अविसोही कोडी; विसोहिकोडीए अवयवेणाविच्छिक्कं सव्वमभोज्जं विष्ठादि(ति ?) छुपेणेव भक्तं । विसोहिकोडीए पुण संथरणे परिट्ठवेइ । अलंभे अन्नस्स असंथरंतो वा तम्मत्तमेव परिट्ठवेइ । जइवि य अवयवा तहा विसुद्धो ।

१५—24. **धाई** पंचहा-खीरधाई मज्जण-मंडण-कीलावण-अंकधाई बालपालिका स्त्री धात्रीत्वकरणमिति तत्त्वम् । एवं यथासंभवमन्यत्रापि । दूती परस्परसन्दिष्टार्थकथिका स्त्री—दूतीत्वकरणमित्यर्थः । तत्कथयति—स्वग्रामे परग्रामे वा । स्वनिवासग्रामस्यैव सत्केऽन्यस्मिन् पाटकादौ, परग्रामे वा संदेशकं नीत्वायं पिण्डं लभते स दूतीपिण्डः ।

१५—25. अतीताद्यर्थसूचकं निमित्तं जातिकुलगणकर्मशिल्पानां कथनादिना आजीवनम् ।

१५—26. वनीपकत्वं पिंडट्ठा समणा-तिहि-माहण-किविण-सुणगाइ-भत्ताणं अप्पाणं तब्भत्तं दंसइ जो सो वणीवमो त्ति । उउ(?)वर्णयति पिण्डार्थमात्मानं दायकाभिमतेषु श्रमणादिषु संभक्तं दर्शयतीति भक्तवशाद्वनीपकः । यद्वा वनीं लब्धार्थरूपां पाति पालयतीति वनीपः, स एव वनीपकः ।

१५—27. चिकित्सा रोगप्रतीकारः । तत्र नाहं वेद्यो, अप्पणो वा अमुगो वाही अमुगदव्वेण फिट्टोत्ति, एसा सुहुमतिगिच्छा । बायरा वाय-सिंभ-सन्निवाय-समुत्थाणं रोगाणं ओसहमाइयं साहइ । सयमे[व]से किरियं करेइ । वाहिवियारं किरियं वा से साहेइ ॥—क्रोधादयः प्रतीताः ।

१५—28. **वयण-संथवो**—पुव्विं गुणथुइं काऊण पच्छा मग्गइ । **पच्छासंथवो**—नाम दिन्ने पच्छा संथवं करेइ 'अमुगत्र २ यूयं दृष्टाः' इत्यादि च ।

१५—29. **सम्बन्धि-संथवो**—नात्रकयोजनम् । मायापियाइओ पुव्वसंबन्धि-संथवो; सासूससुराइओ पच्छासम्बन्धि-संथवो । विज्जाससाहणा । असाहणो मंतो । इत्थी-पुरिस-विसेसो वा । चुण्णो अंजणाइओ । पायपलेवाइओ जोगो । गर्भादानपरिसाडो मूलकम्मं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५—31. शङ्कितं संभाविताधाकर्म्मादिदोषं भक्तादि । चतूरूपो भङ्गश्चतुर्भङ्गः-ग्रहणे भोजने शङ्कितः । भक्तादेर्ग्रहणकाले भोजनकाले च यदि पुनरमुकदोषवदिदमिति शङ्कावान् ।१। ग्रहणे शङ्कितो न भोजने ।२। भोजने शङ्कितो न ग्रहणे ।३। न ग्रहणे न भोजने शङ्कितः ।४। इति । एतेषां संभवो यथा–गृहस्थेन प्रचुरां भिक्षां भिक्षाचरेभ्यः स्वस्मै वा दीयमानं दृष्ट्वा चिन्तयति किं स्वगृहोपस्करतया साधुभिक्षाचरादिनिमित्तराद्धतया वा चेतसि शङ्कितः । ततो लज्जा-संक्षोभादिना एनमर्थं गृहिणं प्रश्नयितुमशक्नुवन् शङ्कितो गृह्णाति; शङ्कितस्तथैव भुङ्क्ते ।१। द्वितीयस्तथैव चेतसि शङ्कितः तथैव गृहस्थं प्रश्नयितुमशक्नुवन् गृहीत्वा स्वोपाश्रये समागतस्ततो भोजनसमये तं दोलायमानचेतसं दृष्ट्वा अपरसाधुस्तद्भिक्षानिःशङ्कीकृतग्राही तदभिप्रायं ज्ञात्वा वदति यथा–साधोस्तद्गृहे प्रकरणं लाहणं वा समायातमिति—तद्वचः श्रुत्वा शुद्धमेतदिति निश्चित्य विगतशङ्कापरिणामस्तद्भुङ्क्ते इति द्वितीयः । गुरोः पुरतः स्वभिक्षातुल्यभिक्षामालोचयतः साधून् श्रुत्वा सञ्जातशङ्कश्चिन्तयति यथा—यत्स्वरूपा बह्वी मया भिक्षा लब्धा अमुकगृहे; अन्यैरपि तत्र तत्स्वरूपैव बह्वी लब्धा । ततो मा कदाचिदियमशुद्धा भविष्यतीति । तथा चासौ शङ्कितचित्तस्तां भुङ्क्ते इति तृतीयः । चतुर्थस्तु संभवं प्रतीत्य सुगम एव । अत्र द्वितीयभङ्गोऽपि ग्रहणापेक्षयैव सदोषः । परमार्थतस्तु शङ्कितग्रहणदोषस्य निवर्तितत्वाच्छुद्ध एव । तृतीयो बहुतरमदोषः । उभयत्रापि भोजनशङ्कितत्वेनाशुद्धत्वात् । अतः प्रथमतृतीयावाश्रित्य यत्प्रायश्चित्तं निरूपयति । यं कञ्चन दोषमाधाकर्मादिकं शङ्कते, संभावयति अमुकदोषमिति तत्सत्कं प्राप्नोति । संम्रक्षितमारूषितम् । निक्षिप्तं न्यस्तम् । पिहितं स्थगितम् । संहृतमन्यत्र क्षिप्तम् । दायग त्ति दायकदोषदुष्टम् । उन्मिश्रं पुष्पादिमिलितम् । अपरिणतं अप्रासुकीभूतादि । लिप्तं दुग्धादिखरंटितम् । छर्दितं परिशाटितम् । एते दश शङ्कितादय एषणादोषाः ।

१५—33. अधुना म्रक्षितादीनाह—**सचित्ते**त्यादि । पृथिव्यब्वनस्पतिभिः सचित्तैर्म्रक्षितयोगात् । करमात्रं देयमपि सचित्तम् । अचित्तयोगादचित्तम् । तेन पृथिव्यादिभिः सचित्तैर्म्रक्षितं पृथिवकायम्रक्षितमित्यादीनि तत्त्वम् ।

१५—34. **हत्थेणं ति** । मत्ते वि एवं चेव । निर्मिश्रकर्दमं अपरिणतं सचेतनम् ।

१६—2. **ससिणिद्धे**—तत्र स्निग्धमीषल्लक्ष्यमाणखरण्टनजलम् । हस्तादिउदकार्द्रं जलतीमितं तदेव ।

१६—6. **गरहियमज्जायमक्खिए त्ति**—मांसवशाशोणितसुरामूत्रोच्चारादिभिः शिष्टजनस्याभक्ष्यापेयैः साक्षान्म्रक्षितं सत् । एतैर्म्रक्षिताभ्यां करमात्राभ्यां दीयमानं सत् यतीनामकल्प्यं उड्डाहादि दोषात् । संसक्तिमद्द्रव्यैर्द्रव्यादिभिर्लेपकृन्मध्वादिभिश्च हस्तमात्राभ्यां म्रक्षिताभ्यां देयं यदेतैर्दीयमानं म्रक्षितं तदकल्प्यमेकेन्द्रियादिवधदोषात् । मात्रादिलग्नमक्षिकाकीटिकापतङ्गादिसत्त्ववधदोषाच्चेति । गर्हितेऽगर्हिते च म्रक्षिते आयामम् ।

१६—7. निक्षिप्तश्चतुर्भङ्गः—सचित्तं पृथिव्यादि सचित्ते पृथिव्यादौ निक्षिप्तं न्यस्तम् १. सचित्तं अचित्ते २. अचित्तं सचित्ते ३. अचित्तं अचित्ते ४. निक्षिप्तम् । अत्र प्रथमद्वितीयभङ्गयोर्ग्रहणप्रायोग्यद्रव्याभावान्न प्रायश्चित्तचिन्ता । चरमस्तु शुद्ध एव । अतस्तृतीयप्रायश्चित्तं निरूपयति—एत्थेत्यादिना—पृथ्वीकायो मृत्तिकालवणोषतूवरिकावर्णिकादिरूपः । अप्कायो जलावश्यायहिमकरकादि । तेजस्कायो मुर्मुराङ्गारादि । वायुर्गुञ्जावातादिरूपो दृतिस्थश्च । प्रत्येकवनस्पतिकायो धान्यव्रीहिकाहरिताम्रादिफलरूपः । अनंतः साधारणः सूरणगर्जरादिकन्दरूपः । त्रसाः कीटिकामत्कोटकन्थ्वादिरूपाः । एते च सर्वेऽपि पृथिव्यादयः सचित्ता मिश्राश्चात्र ग्राह्याः । ततः पृथिव्यादिषु त्रसान्तेषु निक्षिप्तं देयं वस्तु यदचेतनम् । अनन्तरमव्यवधानम् । परम्परं स्थगनिकादिना सव्यवधानम् । सान्तरं पृथिव्युपरि स्थगनिकादौ कृत्वा देयं मुक्तम् ।

१६—12. **अणन्तवणस्सइ त्ति**—उत्पादिरूपो । वीयनिक्खित्त इति प्रत्येकबीजेषु अणंतकायबीजेषु च अनन्तरपरम्परनिक्खित्ते देये नि० ।

१६—13. **पिहिए चउभंगो त्ति**—यथा–सचित्तं सचित्तेण १. सचित्तं अचित्तेण २. अचित्तं [सचित्तेण ३. अचित्तं] अचित्तेण ४. पिहियं । अत्राप्यनन्तरपिहितपरम्परपिहितता वाच्या । तथा चतुर्भङ्गे—अत्रापि गुरुलघुपदाभ्यां चतुर्भङ्गः स्यात्, यथा–गुरुकं गुरुकेण, लघुकं लघुकेन, लघुकं गुरुकेण, लघुकं लघुकेन पिहितम् । गुरुकं भारिकं महद्देयभाजनम् । गुरुणा भारिकेण प्रहेडकादिना पिहितम्; गुरुकं लघुकेनाल्पभारेण छगनकादिना; लघुकं देयभाजनं गुरुकेण प्रहेडकादिना; लघुकं लघुकेन छगनकादिना पिहितं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६—13. **सचित्तेण पुढवीत्या**दिना तृतीयभङ्गस्य अचित्तं सचित्तेण पिहितमित्यस्य व्याख्या कृता। मण्डकादिकं सचित्तमृदावष्टब्धमनन्तरपिहितम्। तउआ मृत्तिका गर्भच्छजिका। अवष्टब्धं मण्डकादिपरम्परपिहितम्। एवमप्कायादिशेषैरपि भावना कार्या। **अस्मद्विरचितपिण्डविशुद्धिवृत्तौ** दर्शितत्वाच्च।

१६—18. संहृतम्—येन मात्रकेण दात्री दास्यति साधोरशनादिकं-तत्र पृथिव्यादिकं तुषादिकं वा यत्स्या-त्तदन्यत्र सचित्ते अचित्ते वा क्षिप्त्वा तेन रिक्तीकृतेन यदि साधोर्ददाति तत्संहृतमशनाद्युच्यते। अत्र भङ्गचतुष्टयं-सचित्ते सचित्तं-सचित्ते पृथिव्यादौ, सचित्तं पृथिव्यादि संहृतम् १. अचित्तं तुषादि संहृतं २. अचित्ते सचित्तं ३. अचित्ते अचित्तं ४. संहृतं। अत्राप्यनन्तरपरम्परता वाच्या। परित्तवनस्पतिः पत्रशाकादिः। पृथिव्यादिषु त्रसान्तेषु सचित्तस्थानेषु संहरणे साध्वर्थं कृते मात्रकान्तेन गृहीतेऽशनादौ आ०। एकस्मादन्यत्र संहृत्य भूयोऽपि ततोऽपि अयोग्यं संहृत्य तेन ददतः परम्परसंहरणम्।

१६—22. **बीयसाहरिए** तिलादिगोचरे।

१६—23. **दायग(यारो)त्ति**—मत्तो मदिरापानोत्थमदविकलः। उन्मत्तो महासङ्ग्रामादिजयाद्दर्पाध्मातो ग्रहगृहीतश्च।

१६—27. **पमद्दमाणी** पृथिव्यादीन्। **सेसेसु त्ति** भङ्गेषु।

१६—29. **ओयत्तन्तीए**—द्रव्येण द्रव्यान्तरं गृह्णन्त्याः।

१६—30. **परं च उद्दिस्स त्ति**—परकीयमिदमित्युक्त्वा ददाति। यद्वा यत्र दात्री परेण निर्भर्त्स्यते।

१६—31. **उम्मीसं ति**—मिश्रणस्योभयाश्रितत्वात्, उत्प्राबल्येन मिश्रितं दाडिमगुलिकादिना, पुष्पादिना वा सह यन्मिलितं तदुन्मिश्रं भण्यते। ते द्वे अपि वस्तुनी यत्रोन्मिश्र्य ददाति साधवे तदशनादिउन्मिश्रम्। तत्र परित्तवनस्पतिपत्रपुष्पशाकादिना सचित्तेन उन्मिश्रे आ०।

१६—31. अपरिणतं अप्रासुकीभूतादि। तच्च द्रव्यभावभेदात् द्विधा। पुनर्भावापरिणतं दातृगृहीतृयोगात् द्वि-धा वा। तत्र परिणतद्रव्ये सचेतने दायकेन साधोर्दीयमाने द्रव्यापरिणतम्; दातृविषयभावापरिणतं तु द्वयोर्भ्रा-त्रोर्द्विस्वामिनोर्मध्यात् यत्राशने साधारणे एकेन दीयमाने द्वितीयस्य यत्र भावो अपरिणतो अभवनशीलस्तद्दा-तृभावापरिणतम्।

१७—1. द्रव्यभावपदाभ्यां चतुर्भङ्गोऽत्र अनिसृष्टभावापरिणतयोश्चासमक्षकृतो विशेषः। गृहितृविषयभावा-परिणतं तु यत्र द्वयोः साध्वोर्भिक्षार्थं गतयोरेकस्य मनसि तदशुद्धं परिणतम्, अन्यस्य तदेव शुद्धं मनसि परिणतम्; तदपि भावापरिणतम्।

१७—2. **[संसत्त]**—संसक्तेन दध्यादिना करमात्रकखरण्टकेनाशनादिग्रहणे लिप्तदोषाः।

१७—3. पृथिव्यादिषु दीयमाने छर्दिते परिशाटितम्।

१७—5. **संयोजणा-वाहिं भायणे त्ति**। रसहेतुकद्रव्यं भिक्षाटने शाल्यादिकूरं क्षीरं वा प्राप्तवान्। तानि बहिरेव पृथक् भाजनेषु गृह्णातीति। वसतेर्बहिर्द्रव्यसंयोजनायां चेतसा क्रियमाणायां बाह्या द्रव्यसंयोजना। वसतावागतेन रसहेतोर्द्रव्यसंयोजना अभ्यन्तरा। संयोजना त्रिधा-पात्रकविषया, कवलविषया, मुखविषया च। यद्येन सह युज्यते तत्तेन सह भक्षयतीति भाव इत्यन्तर्वेदनाश्रया। 'बत्तीसकवलमाणं रागदोसाहिं धूमइंगालं। वेयावच्चाइया कारणमवहिंमि अइयारो ॥' कारणं वेदनावैयावृत्यादिधो(?)ऽनिर्वहति। भोजनाभावे आ०।

१७—9. **सूत्रगाथा ३५-३६.** एतद्व्याख्या-कर्मौद्देशिकचरिमत्रिके। पाषण्डिश्रमणनिर्ग्रन्थाख्ये पाषण्डिकर्मादिके कम्मे। आधाकम्मं। पाषण्डमिश्रे स्वसाधुमिश्रे च। बादरप्राभृतिका विवाहुस्सक्कण-ओसक्कणरूवा। सप्रत्यपायपरग्रामा-भ्याहृतम्। यत्रात्मविराधना। लोभपिण्डः। **अइरं अणंत त्ति**—तिरोऽन्तर्धाने, न तिरमतिरं अन्तर्धानं विना निरन्तरमित्यर्थः। अयं भावार्थः—अणन्तकाये पूयलियाई निक्खित्तं साहरियं मीसियं वा। अणंतकायेण वा पिहियं। आदिग्रहणादनन्तापरिणितेऽनन्तछर्दिते च क्षमणम्। अनन्तकायाव्यवहितनिक्षिप्तपिहितसंहृतोन्मिश्राऽपरिणतछर्दि-तेषु क्षमणम्। रसहेतुसंयोजना-रागान्वितभोजने च, वर्तमानभविष्यन्निमित्ते च क्षमणम् ॥ जावंतिकाख्यकर्मौद्देशिका-द्यभेदः। मिश्रप्रथमभेदः। धात्रीत्वम्। दूतीत्वम्। अतीतनिमित्तम्। आजीवनापिण्डः। वनीपकत्वम्। बादरचिकिच्छा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करणम् । क्रोधमानपिण्डौ । सम्बन्धिसंस्तवकरणम् । विद्यामन्त्रयोगचूर्णपिण्डाः । प्रकाशकरणं द्विविधम् । द्रव्यक्रीतम् ; आत्मभावक्रीतम् । लौकिकप्रामित्यपरावर्तने । निःप्रत्यपायपरग्रामाभ्याहृतम् । पिहितोद्भिन्नकपाटोद्भिन्ने । उत्कृष्टमालापहृतम् । सर्वमाच्छेद्यम् । सर्वमनिसृष्टम् । पुरः कर्म । पश्चात्कर्म । गर्हिते द्रव्यम्रक्षितम् । प्रत्येकाव्यवहितनिक्षिप्तपिहित-संहृतोन्मिश्राऽपरिणतछर्दितानि । प्रमाणोल्लङ्घनम् । सधूममकारणभोजने चेति । अत्रेदं (अथे० b) सूत्रपदम्—**कारणविवज्जिए त्ति**—कारणविवज्जओ नाम अकारणे भुङ्क्ते, कारणे न समुद्दिसइ । एतेषु आचाम्लं दीयते ।

१७—13. अज्झोयर [गाहा ३९] अध्यवपूरकान्त्यभेदद्वयम् । **कडे त्ति** कृतौद्देशिकभेदचतुष्टयम् । भक्तपानपूतिकम् । मायापिण्डः । अनन्तकायव्यवहितनिक्षिप्तपिहितादीनि । मिश्रानन्तकायाव्यवहितनिक्षिप्तानि चैत्येषु एकभक्तम् । तथा ओघौद्देशिकमुद्दिष्टभेदचतुष्टयम् । उपकरणपूतिकम् । चिरस्थापितं प्रकटकरणम् । लोकोत्त[र]-परावर्तिकम् । लोकोत्तरअप्रामित्यं च । मंखमाइ परभावक्रीतम् । निःप्रत्यपायसप्रत्यपायस्वग्रामाभ्याहृतम् । दर्दरोद्भिन्नम् । जघन्यमालापहृतम् । **उझरे पढमे त्ति**—यावदर्थिकाध्वपूरकः सूक्ष्मचिगिच्छागुणसंस्तवकरणम् । **तिगमक्खिय त्ति**—मिश्रकर्दमेन लवणसेटिकादिना च पृथिवीम्रक्षितम् । आउ उदल्लं । उक्कुट्ठरोद्दे परित्तो—एयं तिगमक्खियं । **दायगो वहए त्ति**—किंचिद्दायकदुष्टम् । यत उक्तम्—

बाले मूढे मत्ते उम्मत्ते वेविए य जरिए य । एए विसेसवज्जा एएसिं दायगो वहयं ॥

१७—15. पत्तेय० [गाहा ४२] पत्तेयवणस्सइकाए सचित्तपरंपरट्ठविए । तेण चेव पिहीए साहरिए मीसे परंपरनिक्खित्ते अणंतरनिक्खित्ते—प्रत्येकपरम्परनिक्षिप्तादीनि मिश्रानन्तरनिक्षिप्तसंहृतादीनि च । सर्वेषु पुरिमार्धम् । **संकाए त्ति**—जं दोसं आसंकइ तस्सेव दोसस्स जं पायच्छित्तं तं आवज्जइ ।

१७—16. इत्तरठविए० [गाहा ४३] करमात्रस्थं इत्वरस्थापितम् । सूक्ष्मप्राभृतिका सस्निग्धसरजस्कम्रक्षितम् । पृथ्वीअप्वनस्पतिम्रक्षितम् । पृथिव्यादिषु मिश्रेषु परम्परनिक्षिप्ते नि० । वनस्पतिमिश्रे परम्परनिक्षिप्ते नि० । प्रत्येकबीजेष्वनन्तकायबीजेषु वानन्तरपरम्परनिक्षिप्ते । एवमेतेषु स्थापितेऽपि देये नि० । **अविगई**—निर्विकृतिकम् ।

ठवियगाईसु त्ति—आदिग्रहणान्मिश्रपरम्परपिहिते नि० । एवं संहृतेऽपि । परित्तवणस्सइओमीसे नि० । वीउम्मीसे नि० ।

१७—19. अतिप्पमाणे व त्ति—तेष्वेवातृप्यमानस्तदेवातिमात्रं पुष्टतया कुर्वन् ।

१७—20. संघरिसेण—होड्डया ।

१७—21. जमलिओ—जमलतया स्थितः ।

१७—22. वट्टा गोलया । **समास त्ति** समस्या ।

१७—24. अरहट्टादिसत्क आजीवे रुतेऽपि क्रियमाणे खमणं ।

[गाथा ४६] अन्यच्चोच्यते—जिणकप्पिया थेरकप्पिया य दुविहा साहुणो । ओहीय–ओवग्गहीय–भेया दुहा उवही । तत्थ—

ओहेण जस्स गहणं भोगो पुण कारणा स ओहोही (ओघोपधिः) । जस्स य दुगंपि नियमा कारणओ सो उवग्गहिओ ॥

—जिणकप्पिया उपध्यपेक्षया । **अष्टविधोपधयः—**

बिय त्ति चउक्क पणगं नव दस एक्कारसेव बारसगं । एए अट्ठ विअप्पा उवहिंमि उ हौंति जिणकप्पे ॥
रयहरणं मुहपोत्ती दुविहो कप्पेक्कजुत्त तिविहो उ । रयहरणं मुहपोत्ती दुकप्प एसो चउद्धा ओ ॥
तिन्नेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती । पाणिपडिग्गहियाणं एसो उवहीओ पंचविहो ॥
पत्तगधारीणं पुण नवाइभेया हवंति नायव्वा । पुव्वुत्तोवहिजोगा जिणाण जा वारसुक्कोसो ॥
पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया । पडलाइ रयत्ताणं च गोच्छओ पायनिज्जोगो ॥
तिन्नेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपत्ती । एसो उ दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥
एए चेव दुवालस मत्तय अइरेगचोलपट्टो य । एसो उ चउद्दसविहो उवही पुण थेरकप्पंमि ॥
उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमओ होइ तेरसविहो य । जहन्नो चउव्विहो च्चिय अज्जाणं एस तिविहुवही ॥
कप्पत्तिय पडिग्गहगो अब्भिंतर बाहिरा नियंसणिया । संघाडी खंधकरणी उक्कोसो एस अट्ठविहो ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

मध्यमस्त्रयोदशविधः—

पत्ताबंधो पडला रयहरणं मत्तकमढ रयताणं । उग्गहपट्टोरुचलणिया ओकच्छि कंचु वेकच्छी ॥

गोच्छगपत्तट्टवणं मुहणंतगकेसरि जहन्नो । **जघन्योपग्रहिकः स्थविराणां एसो ।**

तत्थ **पीढगं त्ति** काष्ठच्छगणमयं पीठं **निसेज्जं** पाउंछणं । **दंडगा-पमज्जणी** दंडापुंछणी । **घट्टगा** पात्रघर्षणोपलाः । वर्षात्रष्टिसु त्राणाय रक्षणाय । **बाल त्ति** कम्बलः । सूत्रमयम् । **सूई**—तालपत्रसूच्यादिखुम्पकः । कुडसीसगं पलासपत्रमयं खुम्पकम् । पत्रकं वंशमयम् । सेसतिगं बालसौत्रिकादन्यत् । **वासत्ताणे त्ति—** वर्षाकालोपयोगिसंस्तारो **अझुसिरो** काष्ठफलकादि । **झुसिरस्तृ**णादिमयः । **डंडेत्यादि**—तत्थ

लट्ठी आयपमाणा, **विलट्ठी** चउरंगुलेण परिहीणा । **दण्डो** बाहुपमाणो, **विदण्डओ** कक्खमेत्तो उ ॥

सिरसो उवरि चउरङ्गुलदीहा **नालिया । अवलेहणी** वटादिकाष्ठमयी पादलेहणी—'वडउंबरे पिलक्खू तस्स अलाभंमि चिंचिणीया ।' चर्मत्रिकम् । **अत्थुर त्ति** भूमावास्तीर्यते अग्न्यादिभये प्रलंबादिविकरणाय च । **पाउर त्ति** षट्[पदि]कादिभये यत् प्राव्रियते । तलिगा उपानहः । यद्वा कृत्तिः तलिगा बध्राः (वध्राः b) यद्वा विहारे उपकरणस्य शरीरेण सह बन्धनार्थः पट्टः । **पल्हत्थी** योगपट्टः । मध्यम औपग्रहिकः । **वारगो त्ति—**ससागारिके उदगनिमित्तं, नित्यं जनमध्य एव तासां वासात् । उत्कृष्टौपग्रहिकस्तूच्यते—

अक्खा॰ गाहा [१८-5.]—संथारको द्विविधः—एकाङ्गस्तिनिसकाष्ठपट्टरूपः, तदितरः कम्बिकादिमयः । उत्सर्गपदापेक्षया द्वितीयपदमपवादसूत्रोत्कृष्टौपग्रहिकः कथ्यते । पुस्तकपञ्चकं—'गंडी, कच्छवी, मुट्ठी, संपुडफलए तहा छिवाडीय त्ति'—एतत्स्वयमग्रे कथयिष्यते । **फलगं ति** पट्टिका, समवसरणफलकं वा । कमढगं निजोदरमानं तत् प्रतिसंयतिनीनाम्, अन्यथा एकभाजनभोजने गुरुकवलोत्पाटने एकया अन्यस्या अप्रीतिसंभवः स्यात् ।

१८—9. ओग्गहणंतगं—तौ सदृशम् । पट्टस्तद्बन्धनम् ।

१८—11. साहूणं ओहिओ त्ति—मुहपोत्तीयपायकेसरियाइओ चउरो **ते चेव त्ति** । पडिग्गहो प्रच्छादनत्रयम् । **अन्ने य त्ति**—अब्भितर नियंसणी १, बाहिनि॰ २, संघाडी ३, खंधकरणी ४; पत्ताबंधो, पडला, रयत्ताणं, रयहरणं च ४; जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदतः प्रागुक्तत्रिविधोपधिर्मध्याज्जघन्यविच्युतलब्धत्वे नि॰ । मध्यमस्य विच्युतलब्धत्वे पु॰ । उत्कृष्टस्य विच्युतलब्धत्वे ए॰ । जघन्याप्रत्युपेक्षितत्वे नि॰ । एवं मध्यमाप्रत्यु॰ पु॰ । उत्कृष्टाप्रत्यु॰ ए॰ । **न पडिलेहिओ त्ति**—निवेदयितुं गुरुभ्यो विस्मृतत्वे जघन्यस्य नि॰ । मज्झिमे पु॰ । उत्कृष्टस्य ए॰ । प्रकारत्रयेण सर्वस्योपधेः संपन्नत्वे आ॰ ।

१८—21. हारिय॰ [गाहा ४७]—हारितत्वे जघन्यस्य ए॰ । मध्यमस्य हारितत्वे आ॰ । उत्कृष्टस्य हारितत्वे खमणम् । जघन्यधौतत्वे ए॰ । मध्यधौतत्वे आ॰ । उत्कृष्टस्य धौतत्वे उ॰ । उपधेर्जघन्यादिभेदस्योद्गमं कर्तुं न निवेदयते तत्रापि ए॰ । आ॰ । च॰ । आचार्यैरदत्तं परिभुङ्क्ते । त्रिविधमुपधिं आचार्यानुज्ञां विनाप्यन्यस्मै ददाति । ए॰ । आ॰ । च॰ । **सव्वंसि छट्ठं तु त्ति**—जघन्यादिभेदतस्त्रिविधस्य हारणे......त्र द्वेऽपि काले वस्त्रप्रक्षालनादौ षष्ठं स्यात् ।

१८—30. मुहणंतय॰ [गाहा ४८] एवं तावेत्यादि । तिविहोवहिणो विभु(चु)येत्यादि **[गाहा ४६]** रजोहरणमुखवस्त्रिकां विहाय अन्योपधौ द्रष्टव्यम् । अग्रप्रति अग्रया उक्तं (?) । तत्र मुहपोत्तियाए पडियाए लद्धाए य निव्वियं । एवं रयहरणे वि । यदि पुनर्द्वितयमपि पतितमथ च न लब्धं तत्राह—**अह पुणेत्यादि ।** नवरं **नासियं** परचक्रादिसम्पातेन । **हारियं** आलस्यादिना प्रमादेन ।

१८—31. काल॰ [गाहा ४९]

पारिट्ठावणियं अविहीए त्ति—33. स्थन्दिलाद्यशुद्धया ।

१८—34. विकालवेलायां पानकाहारस्याप्रत्याख्यानत्वे भोजनोर्ध्वमुत्सर्गतश्चतुर्विधाहारस्यापि प्रत्याख्यानत्वं युक्तम् । तदकरणे-अत एव साधवस्त्रिविधाहारं स्वाध्यायकरणसमये तृतीयपौरुष्याः समये प्रत्याख्यान्ति । विकालवेलायां च पानकाहारमिति ।

१९—1. एयं चिय॰ [गाहा ५१] द्वादशविधतपो यथा—

अनशनमूनौदरिता, वृत्तेः संक्षेपणं रसत्यागः । कायक्लेशः संलीनतेति बाह्यं तपः प्रोक्तम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रायश्चित्तध्याने वैयावृत्त्यविनयावथोत्सर्गः। स्वाध्याय इति तपः षट्प्रकारमाभ्यन्तरं भवति॥

मासाई सत्त ता पढमा बिइतइयसत्तराइदिणा। अह राइ एगराई, भिक्खू पडिमाण बारसगं॥

इह प्रतिमादिविषयेऽश्रद्धाने विपरीतप्ररूपणायां वा प्रायश्चित्तं ज्ञेयम्। एतेन तपोतिचारप्रायश्चित्तसूचा द्रव्याद्यभिग्रहेषु च वीर्यातिचारप्रायश्चित्तसूचनं ज्ञेयम्। पाक्षिके पुरुषादिविभागतो ज्ञातव्यम्। पुरुषाः क्षुल्लक स्थविर भिक्षु उपाध्याय आचार्यभेदतः पञ्चधास्तान् प्रति चूर्णिकृता दर्शितमेव।

१९—10. फिडिए० [गाहा ५२] निद्राप्रमादवशतो गुरुभिः सह प्रतिक्रमणे **फिडिओ** त्ति न मिलितः। **सयं वा उस्सारेइ** गुरुणा अपारिते कायोत्सर्गे स्वयमात्मैव पारयति। अपूर्णे वा चिन्तनीयतयान्तराले पारयति।

१९—15. अकए० [गाहा ५३] **एवं वंदणाइएसुं पि त्ति**—एकद्वित्रिसर्वा अदानतो वन्दनेषु यथाक्रमं नि०। पु०। ए०। सर्वाकरणे आयामं। **राओ वोसिरइ** त्ति निशिसंज्ञोत्सर्गं कुरुते।

१९—17. **कोहे० [गाहा ५४] सगि त्ति**—सकृत्, एकदा। **तन्नगाइ त्ति** तर्नको वत्सकः, आदिशब्दात् मयूरादिग्रहः।

१९—22. अज्झुसिर० [गाहा ५५] दुःप्रत्युपेक्षितं चक्षुषा सम्यगनवलोकनम्। अप्रत्युपेक्षितं सर्वथा चक्षुषाऽनिरीक्षितम्। **कोयवि**—रूतपूरितः पटः पुरओट्टीति यदुच्यते। पावारगो बृहत्कम्बलः परियच्छिर्वा। **पूरी**-पल्हवी हस्त्यास्तरणम्। दढगालिर्धौतपोतिः। दुसर सूत्री पटी, दोयडी यावत्। **विराली** नवओ जीणोत्ति भन्नइ। गंडोवहाणी गल्लमसूरिका। पुस्तकपंचके गंडी पुस्तकस्वरूपम्—

वाहल्लपुहत्तेहिं गंडीपोत्थो उ तुल्लगो दीहो। १।
कच्छवि अंते तणुओ, मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो। २।
चउरंगुलदीहो वा, वट्टागी मुट्ठिपुत्थगो अहवा।
चउरंगुलदीहो चिय, चउरंसो होइ विन्नेओ। ३।
तणुपत्तूसियरूवो होइ छिवाडी य पोत्थगा नाम।
दीहो बाहुस्सो (ल्लो) वा जो पिहुलो होइ अप्पबाहुल्लो।
तं मुणियसमयसारा छिवाडि पोत्थी भणंतीह। ४।
संपुडगो दुगमाई फलगा। ५।

अपरमपि—चर्मपञ्चकं यथा—**तलिगा खल्लग वब्भे (वद्धे) कोसग कत्ती य वीयंतु।**

तलिगा-उपानत्, वब्भः-वध्रः, कोसगो-लेहोधारं चर्म, कृत्तिः प्रलम्बकरणाय।

१९—32. **ठवण० [गाहा ५६] सन्नी**—अविरतः श्राद्धः। वीर्याचारातिचारो निजवीर्यगूहनम्।

१९—35. **सुयववहाराइसु अन्नह त्ति**—मायानिष्पन्नं तदेव दीयते इति विशेषः। आसणद्वयं देयमिति भावः। **अन्नमायाओ त्ति**—"लुद्दवित्ती महाभोगो, एस साहू जिइंदिओ। रसचागं करेइ त्ति, अंतपंतेहिं वाढए॥" इत्यात्मनि व्यापयति।

२०—3. दप्पेण० [गाहा ५७] वल्गनं-उल्ललनम्। खडयप्पयाणं धावणम्। खड्डावरंडाईण फडणम्। मल्लवद्धाह्वास्फोटनं च दर्पः। तं कुर्वतो कदाचित्पञ्चेन्द्रियस्य [व्य]परोपणं—विघातः कृतः स्यात्।

२०—4. अङ्गादानं-मेहनं तस्य परिमर्दनेन शुक्रपुद्गलनिर्घातनं-निष्काशनं इत्येतत्संक्लिष्टकर्मोच्यते। आदिग्रहणाल्लिङ्गस्य स्नेहादि[ना] म्रक्षणादि करोति। दीर्घाध्वनि यत्सेवनम्।

आधाकर्म, अध्वानकल्पादिकं वा शुष्ककदलीफलादिधरणतः। दीर्घग्लानेन वा सता यदाधाकर्मरसादिकारणतः। सन्निधिसेवनं वाचरितम्। तत्रैतेषु पञ्चकल्याणकमिति वक्ष्यमाणगाथान्तोक्तं ज्ञेयं योज्यम्।

२०—7. **पुरिमत्ता०**-भिक्षापात्रं तत्काले न प्रतिलेखयति। चरिमभागोनायां पौरुष्यां प्रथमायां पादोनप्रहरे इत्यर्थः। यद्वा चरिमपौरुष्यामुपोषितः कश्चित्। ततोऽसौ तस्यां पात्रं न पडिलेहेइ। तत्र कल्याणकं प्रायश्चित्तं ज्ञेयम्। चातुर्मासे सांवत्सरिके च शुद्धौ पञ्चकल्याणकं ज्ञेयम्। यस्मात्सूक्ष्मातिचारान् कृतान् न जानाति न च स्मरति। कथमित्याह-**जहा पाउसे** इत्यादि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०—12. छेयाइ० [गाहा ५९] किं वा छिज्जइ त्ति—भो भो जना निरीक्षत निरीक्षत । छिद्यते न छिद्यते चेति भवति अश्रद्धानपरः। मिउणो त्ति—मृदोर्निरभिमानस्य । अभिमानाभावं दर्शयति-जो इत्यादिना । छेदाऽश्रद्धानपरस्य मृदोः, पर्यायगर्वितस्य च इत्येतेषाम् ।

२०—18. दुमुण्ठाः-उत्कण्ठाः खिन्नाः । इह शिष्या अनेकविधा भवन्ति—परिणामगा, अपरिणामगा, अइपरिणामगा । तत्थ उस्सग्गे उस्सग्गं, अववाए अववायं, जहा भणियं सद्दहंता आयरंता य परिणामगा भण्णन्ति । अपरिणामगा पुण जे उस्सग्गमेव सद्दहंति आयरंति य; अववायं पुण न सद्दहंति नायरंति य । अइपरिणामगा जे अववायमेवायरंति, तम्मि चेव सज्जंति न उस्सग्गे । अतो अपरिणामकानां उत्सर्गदृष्टीनां मा निन्धो भविष्यति । चशब्दसूचितकुलगणसङ्घाधिपानामपि छेयापन्नानां जीतेन तप एव दीयते न छेदादयः ।

२०—19. जं जं० [गाहा ६०] अत्थपय त्ति—अर्थः सूत्रव्याख्यानं भाष्यचूर्णिनिर्युक्त्यादिकम् । आज्ञाभङ्गादिदोषतः प्रायश्चित्तापत्तिः सविस्तरा तपस उक्ता ।

२१—5. दव्वं खित्तं० [गाहा ६४]

आहाराई दव्वं खेत्तं लुक्खाइ काल गिम्हाई । हट्ठाई भाव त्ती पुरिसं गीयाइ जाणित्ता ॥

आउट्टि-पमाय-दप्प-कप्परूवा चउव्विहा पडिसेवणा नायव्वा । साहारणेसु द्रव्यादिसु साधारणं भणिय समं देज्जा ।

२१—13. लुक्खं० [गाहा ६६] वायं ति—वातलम् । अनूपक्षेत्रं सजलक्षेत्रम् । एवं कालेवि तिविहे त्ति—वर्षाहेमन्तग्रीष्मरूपः कालः सामान्येन स्निग्धरूक्षश्च भवति । तत्र स्निग्धः-शीतः, रूक्षः-उष्णः । अयं स्निग्धोऽप्युत्कृष्टमध्यमजघन्यभेदात्त्रिधा; रूक्षोऽपि च त्रिधा । तत्र उत्कृष्टस्निग्धोऽतिशीतः, मध्यमस्निग्धो नातिशीतः, जघन्यशीतः स्तोकशीतः । जघन्यरूक्षः किंचिदुष्णः, [मध्यमरूक्षो नात्युष्णः,] उत्कृष्टरूक्षोऽत्युष्णः । एवं च—

गिम्हासु चउत्थं देज्जा छट्ठं च हिमागमे । वासासु अट्ठमं देज्जा तवो एस जहन्नओ ॥
गिम्हासु छट्ठं देज्जा अट्ठमं च हिमागमे । वासासु दसमं देज्जा एस मज्झिमओ तवो ॥
गिम्हासु अट्ठमं देज्जा दसमं च हिमागमे । वासासु दुवालसमं एस उक्कोसओ तवो ॥

एस नवविहो ववहारो ।

२१—21. सो य इमो त्ति सुयववहारो । आपत्तिः प्रायश्चित्तयोग्यता विषया । तपसा द्वादशादिना, कालेण वर्षादिना । अहागुरू—गुरुतम इत्यर्थः । अहालहू—लघुतमः ।

२१—28. अहाणुपुव्वीए—इत्यस्य व्याख्येयम्—सुत्ताणुसारेणेति ।

२१—29. चउमासगहणेण लहु चउमासो वि दट्ठव्वो । 30 छम्मासो—छम्मासग्रहणात् लघुषण्मासोऽपि ज्ञेयः । प्रतिपत्तिः आपत्तिः । 31 तीसा य त्ति—स्थूलतया उक्तम्, अन्यथा सार्धसप्तविंशतिर्वक्तुमुचिता । 33 प्रागुद्दिष्टानि गुरुकादीनि व्याचष्टे गुरुगं चेत्यादिना ।

२२—2. एतदशक्तः मिथ्यादुष्कृतेन शुध्यति । अत एवोक्तम्—सुद्धोव त्ति ।

२२—4. सामान्य एव श्रुतव्यवहार उक्तो विस्तरेणाधुना प्राह—तिगनवेत्यादिना ।

२२—9. गुरुपक्खो उक्कोसो त्ति—यथा गुरुपदादिवाच्यः गुरु[:] गुरुतरो गुरुतमः । एव(स)लहुगे वि—उत्कृष्टादिभेदत्रयम्—उक्कोस-उक्कोसे, उक्कोस-मज्झिमो, उक्कोस-जहन्नो[त्ति] उत्कृष्टे भेदत्रयम् । मध्यमेऽपि भेदत्रयम्—उक्कोसो, मज्झिम जहण्णो त्ति । जहन्नुक्कोसे, जहन्न मज्झ, जहन्न जहन्न इति जघन्ये भेदत्रयम् ।

२२—25. एमेवुक्कोसाइ त्ति—लघुतरमध्यमपञ्चविंशतौ नवविधआपत्तिदानपञ्चमगृहनिवेशितायां अट्ठम-छट्ठ-चउत्थ-उक्कोसा देय तिह भिन्नं । मध्यमे उत्कृष्टम्, मध्यममध्यमम्, मध्यमजघन्यमिति योज्यम् । तृतीय नवकलहुस सत्कसप्तमगृहनिवेशितपञ्चदशा गोचरपङ्क्तौ अट्ठम-छट्ठ-चउत्थ-योज्यम् । लहुसतरमध्यमदशके अष्टमगृहनिवेशिते । २ । आ० । यथा लघुसजघन्यपञ्चकसत्के नवगृहे । उ० १; आ० १, ए० । खमणायामेकासणे त्ति 33 गाथोक्तं योज्यम् । सप्तविंशतिभेदेषु वर्षासु दानमुक्तम् ।

२३—1. अधुना शीतकालाश्रितं दानमाह—सिसिर इत्यादिना । दसमं उववासचतुष्टयम् । आदौ धृत्वा ।

२३—2. **अट्ठोकंतीय तह चेव त्ति**—तत्राधस्यासमप्रविभागरूपस्य एकदेशस्य वा एकादिपदात्मकस्य-अपक्रमणमवस्थानम्। शेषस्य बुध्यादिपदसङ्घातरूपस्यैकदेशस्योर्ध्वं गमनं यस्यां रचनायां सा समयपरिभाषयाधोपक्रान्तिरुच्यते। यथा सिसिरे जघन्यतः षष्ठम्, मध्यमतोऽष्टमम्, उत्कृष्टतो दशमम्। २। ३। ४। एषां मध्यादेकदेशः षष्ठलक्षणोऽपक्रामति अवतिष्ठते। अष्टम-दशमे ऊर्ध्वं वर्षासु गच्छतः। तृतीयं तु अग्रेतनं[द्वाद]शं मील्यते। ततश्च जघन्यतोऽष्टमम्, मध्यमस्तु दशमम्, उत्कृष्टस्तु द्वादशं तपो वर्षासु कुर्वन्ति।

२३—3. **अट्ठममाइ गिम्हे** इत्यादि—अष्टमं उपवासत्रयमादौ धृत्वा निर्व्वीर्यं पर्यन्ते यथा-लघुस पञ्चकसत्के नवमगृहे। **सयासय त्ति**—स्वकीयाः सदा ज्ञेया आपत्तयः। असहोरेकैकहासस्तावत्कार्यः यावत् स्थितमेकैकम्। उ०। आ०। ए०। नि०।

२३—8. **परट्ठाणं देज्ज त्ति**—आधाकर्माद्यासेवाप्राप्तम्। इह नवविधश्रुतव्यवहारे वर्षा-शिशिर-ग्रीष्मरूपकालतया सप्तविंशतिभेदेषु आपत्तिदानं दर्शितम्। अर्धापक्रान्तिरपि तथा वाच्या।

२३—14. **कालं वा सहेज्ज त्ति**—प्रतीक्षेत।

२३—16. अणहीयनिसीहो **अग्गीयत्थो**। इतरो गीतार्थः।

२३—21. **धिइ** धृतिश्चेतसोऽवष्टंभः। संहननं वज्रर्षभनाराचादि। धीईए संघयणेण य संपन्नो पढमो; न धिईए न संघयणेण य अन्त्यः; मध्यवर्ति द्वयम्—धृत्या न संहननेन, नद्दसो(न धृत्या)संहननेन सम्पन्न इति द्वयमतो वाच्यम्।

२३—25. विकल्पपञ्चकमपि व्याचष्टे **आयतरगो** इत्यादिना—जो जं तवोकम्मं आढवेइ तन्नित्थरइ स आयतरगः। दृढोऽपि वैयावृत्त्ये तप एव करोति न वैयावृत्यम्-इत्यायतरगः। परतरस्तपस्यपि शक्तः परं न करोति, किन्तु वैयावृत्यमेव विधत्ते। पञ्चमभङ्गव्याख्यामाह—**अन्नतरतरग**(27)इत्यादिना।

२३—30. कल्पस्थितादयः सर्वेऽष्टौ ८। कल्पोऽवस्थितसमाचारः। तत्र स्थितास्तत्परिपालनोद्यताः।

२३—33. **कयरे ते** दशभेदा?—इमे वक्खमाणा—(१)अविद्यमानं चेलं वस्त्रं यस्यासावचेलकस्तद्भाव आचेलक्यम्। सचेलत्वेऽप्यचेलव्यपदेशः। दृश्यते च विवक्षितवस्त्राभावे सचेलत्वेऽप्यचेलव्यवहारः। यदाह—

'जल(ह)जलमवगाहंतो बहुचेलो वि सिरिवेढियकडिल्लो। भन्नइ नरो अचेलो तह मुणओ संतचेलावि॥
तह थोवजुन्नकुच्छियचेलेहिं वि भन्नए अचेलो त्ति। जह तर सालिय लहुं देयो त्ति नग्गि यामो त्ति॥'

(२)उद्देसेन साधुसंकल्पेन निर्वृत्तमौद्देशिकं आधाकर्म। (३-४) सय्यया वसत्या तरति संसारसागरमिति शय्यातरः। स च राजा नृपश्चक्रवर्त्यादिस्तयोः पिण्डः समुदानमिति शय्यातरराजपिण्डः। (५) कृतिकर्म वन्दनकम्। (६) तथा व्रतानि महाव्रतानि। (७) ज्येष्ठो रत्नाधिकः। (८) प्रतिक्रमणं आवश्यककरणम्। (९) मासः मासकल्पः। (१०) परि-सर्वथा वसनमेकत्रनिवासः स निरुक्तविधिना पर्युषणम्। इति दशविधः कल्पो भेदः। तंमि ठिया पकप्पट्ठिया—दशविधकल्पे स्थिता इत्यर्थः। अत्र च प्रथमचरमजिनसाधवो दशस्वपि स्थिता एव। द्वाविंशतिमध्यमजिनसाधवो विदेहजाश्च दशकमध्यात् शय्यातरपिण्डचातुर्यामपुरुषज्येष्ठवन्दनकरणाख्यचतुर्षु स्थिताः, षट्सु चास्थिताः। यथा आचेलक्यौद्देशिकप्रतिक्रमणराजपिण्डमासपर्युषणाकल्पे च वर्षाकालसमाचारा मध्यमजिना २२ विदेहजाश्चास्थिताः, सततसेवनीयतया। दशानां मध्यात् कानिचित् स्थानानि कदाचिदेव पालयन्तीत्यनियतव्यवस्थास्वभा[वा]स्ते; अतो मध्यमजिनसाधवो महाविदेहजाश्चाकल्पस्थिताः। यतोऽनवस्थितसमाचारोऽकल्पोऽभिधीयते।

२४—4. **जोगवियसरीर त्ति**—परिकर्मितदेहाः।

२४—11. **बहुतरया भिक्खुणो त्ति**—बहवः बहुभेदा इति भावः। अत्र आचार्यकृतकरणादि-पुरुषविभागेन श्रुतव्यवहारतो जीतकल्पयन्त्रं विलेख्यम्। **'एयं मज्झं गहियं'त्ति** अनया गाथया यन्त्रकमध्यवर्ति पंचमपंक्तितपोगृहीतपंचमपंक्त्यावेवास्या गाथाया अर्थो निपततीत्यर्थः।

२४—14. **तिरियायए**—तिर्यग्दीर्घाणि त्रयोदशगृहाणि कृत्वा **अहो एगं घरयं च**—वामपार्श्वे एकं पंक्तिमित्यर्थः। **अहो एकेकघरयवुड्ढीए** वामपार्श्वतः सव्वाईए निरवेक्खं जिनकल्पिकं विनस्येत्। द्वितीयपंक्तेरुपरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यः कृतकरणः । तृतीयपंक्तेरुपरि आचार्योऽकृतकरणः । चतुर्थ्या उपाध्यायः कृतकरणः । पञ्चम्या उपाध्यायोऽकृतकरणः [षष्ठ्या गीतार्थस्थिरकृतकरण] भिक्षुः । सप्तम्या गीतार्थस्थिराकृतकरणभिक्षुः । अष्टम्या गीतार्थास्थिरकृतकरणभिक्षुः [नवम्या गीतार्थास्थिराकृतकरणभिक्षुः । दशम्या अगीतार्थस्थिरकृतकरणभिक्षुः । एकादश्या अगीतार्थस्थिराकृतकरणभिक्षुः । द्वादश्या अगीतार्थास्थिरकृतकरणभिक्षुः] त्रयोदश्या अगीतार्थास्थिराकृतकरणभिक्षुः । एवं स्थापितदाहिणट्ठियपणुवीसइ सरूव भिन्नमास निव्वीयसन्नियाओ, वामपार्श्ववर्ति अट्ठमभत्तं तत्थ छग्गुरुसन्नियं जीतदाणं नेयं । पंचमपंतीए ।

२५—11. **तहिं चेव अवराहे त्ति** कोऽर्थः ? तदेवापराधमाश्रित्येत्यर्थः । पुरुषाः—आचार्योपाध्यायवृषभभिक्षुक्षुल्लकभेदतः पञ्चविधास्तानाश्रित्येति भावः ।

२५—25. **खित्तं छिन्नमडंबं ति**—अड्ढाइयजोयणभ्यन्तरे जत्थ वसिमं अन्नं नत्थि तं छिन्नमडम्बं । सर्वतोऽऽसन्नसन्निवेशान्तरं मडंबमित्यन्ये । **ओमं** परिपूर्णं यत्र भक्तादि न लभ्यते । **दुर्भिक्षं** यत्र सर्वथा न लभ्यते ।

२५—27. **तमणंतरं ति** निकटवर्ति ।

२५—36. आलोचनाकाले **जया गूहइ त्ति**—सर्वथैव न प्रकाशयति । **पलिउंचइ व त्ति**—अर्धकथितं करोति ।

२६—1. **बहुगुणेसु त्ति**—समर्थेषु । **गुरुसेवा**—अशुभं प्रति प्रधानसेवा ।

२६—8. छेदार्हं प्रोच्यते—**तवगव्विउ०** गाहा । [८०]

२६—11. **अइपरिणामगो**—अपवादरुचिः ।

२६—12. उत्कृष्टां तपोभूमिं **समईओ त्ति**—अधिकृतपोदानयोग्यो जातः । सवि (साव०) शेषं च यस्य चरणं तस्यातिचारदूषितव्रतपर्यायस्य च्छेदः क्रियते ।

२६—23. आकुट्टिरुपेत्यकरणम्, तया पञ्चेन्द्रियवधः कृतः । दर्पेण मैथुनसेवनं च । सतीवादमस्या नाशयामीति बुद्धया स्त्रीसेवनायाम् । मृषावादे कूटसाक्षित्वादिदानतः । अदत्ते निधानाद्यपहरति । सचित्ताचित्तगोचरं परिग्गहं च गृह्णाति ।

२६—27. मूलगुणान् द्वित्रादिभेदेन बहुविधानं बहुशो अनेकशः शोधयति । सर्वशंकादीन् करोति । इति दर्शनवमकः ।

२६—32. गृहस्थलिंगं—कच्छाबन्धनं तल्लकट्टशिरसि विधानादि कौतुकेन कुरुते । अन्यतीर्थिकाः—शाक्यतापसादयस्तेषां लिङ्गं तद्वेषकरणं नटादिवेषकरणतः । स्त्रीणां गर्भस्याधानं शाटनं च औषधादिकरणतो मूलकरणतोऽमी (?) ।

२६—34. **विहियतवे त्ति**—विहितं दत्तं गुरुणा तपो यस्य सविहिततपास्तदूर्ध्वं छेदमूलानवस्थाप्य पाराञ्चिकानि प्राप्तस्यापि भिक्षोर्मूलमेवेत्यर्थः । तथा आचार्योपाध्याययोः पाराञ्चिकप्राप्तावप्यनवस्थाप्यमेव भवति । यदुक्तं भाष्ये—

'इत्थ य जइ नवदसमे आवन्नस्सावि भिक्खुणो मूलं । दिज्जइ तहाभिसेगे परं पयं होइ नवमं तु ॥'

२७—5. अनवस्थाप्याख्यं । अनवस्थाप्ये **उक्कोसं०** गाहा । [८७]

आसेवितातिचारसन्नविशेषः । सन्न अनाचरिततपोविशेषस्तद्दोषोपरतोऽपि महाव्रतेषु नावस्थाप्यते नाधिक्रियत इत्यनवस्थाप्यः । तदतिचारजातं तच्छुद्धिरपि वा अनवस्थाप्यमुच्यते । नवमं प्रायश्चित्तम् । तत्र स्तैन्यकरणे किं सूत्रेऽनवस्थाप्यमुक्तम् ? उक्तमेवेत्यादि ।

तओत्यादि—गाथापूर्वार्द्धेन साधर्मिकस्तैन्ये प्रायश्चित्तमुक्तम् । तत्र सूत्रपदस्यायमर्थः—साधर्मिकाः साधवस्तेषां सत्कस्योत्कृष्टोपधेः शिष्यादेर्वा । बहुशो वा प्रद्विष्टचित्तो वा । **तेन्नं ति**—स्तेयं-चौर्यं कुर्वन् अनवस्थाप्यः ।

अन्यधार्मिकाः—शाक्यादयो गृहस्था वा । तेषां सत्कस्योपध्यादेः स्तेयं कुर्वन् । अयमर्थोऽन्यधार्मिकयोर्लिङ्गिगृहस्थरूपयोः सत्कं स्तेयमाहारोपधिशिष्यादिगोचरं त्रिधातत्कुर्वन् । अथोत्तरार्धेन—**हत्थायालो गहिओ**—स च त्रिधा—अत्थायाणं दलमाणे, हत्थालंबं दलमाणे, हत्थायालं दलमाणे त्ति । क्रमेण व्याख्या—

अत्थायाणं—अर्थादानं द्रव्योपादानकरणं अष्टाङ्गनिमित्तं तद्ददत्प्रयुञ्जान इत्यर्थः । अत्र कथानकमात्रम्—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जेणी उस्सन्नं दो वणिया पुच्छिऊण आयरियं । ववहारं ववहरंती ताहे सो तेसि साहेइ ॥ १ ॥
तस्स य भगिणीपुत्तो भोगभिलासीओ मुंचए लिंगं । तो अणुकंपा भणई–किं काहिसि तं विणत्थेण ॥ २ ॥
ता वच्च ते वणिए, भणाहि—अत्थं पयच्छह मज्झम । तेण य गंतु भणिया तो तेसिं बेइ अह एक्को ॥ ३ ॥
कत्तो अत्थो अम्हं किं सउणी रूवए इहं हगई । बीओ चंगेरि भरेवि निग्गउ नउलयाणं तु ॥ ४ ॥
गिण्हिसु जावइएहिं कज्जत्ती गहिय तेण जावट्ठो । बिइयंमि हायणंमी किं गिण्हामो त्ति ते बिंति ॥ ५ ॥
भणिओ सउणी इत्तो तणकट्ठं वत्थरूयकप्पासे । नेहगुलधन्नमाई अन्तो नयरस्स ठावेहि ॥ ६ ॥
बिइउ य तेहिं भणिओ सव्वदाणेण गिण्ह तणकट्ठं । नगरबहिं ठावावय गहिएणुवरिं च वासासु ॥ ७ ॥
छइएसुं गेहेसुं पलित्ते दड्ढं तओ उ तं नगरं । तणकट्ठाणं पुंजो अइव महग्घो उ सो जाओ ॥ ८ ॥
दड्ढमियरस्स सव्वं ताहे सो गंतु भणइ आयरियं । उच्छाहिओ अहोहं किं तु न नायं इमं तुब्भे ॥ ९ ॥
किं सउणी य निमित्तं हगं ति अम्हं ति भणइ नेमित्ती । होइ कयावि तहन्नय रूठं नाउं तओ खामे ॥ १० ॥

चूर्णौ भव्वग त्ति भागिनेयः । प्रतिभग्नो व्रतपालनात् । चंगोडगो च्छघडयं रूवई भरिय नउलाणं घेत्तूण उवट्ठिओ । तदनु घृतगुडादिपण्यस्य पत्तनान्तर्मध्ये सङ्ग्रहोपदेशं दत्तवान् । द्वितीयस्य रूपकदातुर्वंशतृणकाष्ठादीनां संग्रहं पत्तनात् बहिष्टादुपदिष्टवान् । पत्तनान्तर्दग्धपण्यस्य सम्मुखं ब्रवीति किं शकुनिका निमित्तं हदंते । एवंविधार्थोपादानकारिणः पुरुषस्याभ्युत्थितस्य व्रतग्रहणाय तत्र क्षेत्रे प्रायश्चित्तं दातुं न कल्पते ।

२७—14. **हत्थालम्बो त्ति**—हत्थालंब इव हत्थालंबस्तं ददत् । अशिवपुररोहा(धा)दौ तत्प्रशमनार्थमभिचारुकमंत्रविद्यादि प्रयुञ्जान इत्यर्थः । **हत्थायालो त्ति**—हस्तेन आताडनं हस्तातालस्तं दलमाणे ददत् । यष्टिमुष्टिलगुडादिभिर्मरणादिनिरपेक्ष आत्मनः परस्य वा प्रहरन्निति भावः । तत्र

आयरियस्स विणासे गच्छे अहवावि कुलगणे संघे । पंचेंदियवोरमणं पि काउं नित्थारणं कुज्जा ॥
एवं खु करेंतेणं अव्वोच्छित्ती कया उ तित्थंमि । जयवि सरीरावाओ तहवि य आराहओ सो उ ॥
अन्यस्तु सामर्थ्ये सति आगाढेऽपि प्रयोजने न प्रयुङ्क्ते यः स विराधकः ।

२७—21. **कीरइ०** गाहा [८९] सो य आचार्यादिः । **एत्थ चउभंगो त्ति**—दव्वलिंग-भावलिंगपदद्वयेन भङ्गचतुष्टयं यथा—दव्वलिंगेन रजोहरणादिना अणवट्ठप्पो महाव्रतादिना भावलिङ्गेन च । १ । दव्वलिंगेणाऽण०, न भावलिंगेनेति शून्यः । २ । भावलिङ्गेन अनवट्ठप्पो न दव्वलिंगेण । ३ । भावलिंगेण अणवट्ठप्पो; असंभवि भंगोऽयं ।४।

२७—24. सपक्खपरपक्खे प्रदुष्टस्तैन्यादिदोषैः स्तैन्यद्वयं सूचितम् । १ । स्वपक्षपरपक्षघातनोद्यतो निरपेक्षतया अनेन हस्तातालो गृहीतः । हत्थालंबो अत्थादाणो य इत्यनेन तृतीयभङ्गमाह । द्वितीयचतुर्थभङ्गौ असंभविनौ ।

२७—28. **जहा अत्थादाणिओ त्ति**—योऽर्थमुत्पादयति निमित्ता स । **उत्तमट्ठेत्यादि । तत्थेव त्ति**—स्वस्थाने । ओसन्नाइ अन्नयरस्स स्वस्थानत्यागे सति भावलिङ्गं दीयते ।

२७—35. संघाधिक्षेपो जात्यादिना ज्ञेयः ।

२८—4. **सुहसाय त्ति** सुखस्वापाः ।

२८—2. **न जईणं ति**—वच्छला इति योज्यम् ।

२८—7. आशातनया तपोऽनवस्थाप्यः कियता कालेन स्यादित्याह—**जहन्नेणेत्यादि** । एतावत्कालादूर्ध्वं असौ व्रतेषु स्थाप्यते ।

२८—12. **तवस्सी य त्ति**—तपोऽन्वितः ।

२८—14. **निज्जूहणारिहो त्ति**—गच्छात्पृथक्करणार्हः सः । सूत्रे सव्वो वि त्ति पदम् ।

२८—17. आशातना–प्रतिसेवानवस्थाप्यो द्विप्रकारोऽपि मूलाहं उक्त उत्सर्गतः । अववाएण कुलादि–कार्यकारी । तदधीनानि कार्याणि । उत्तमं कार्यं बहुजनसाध्यं शृङ्गनादितकार्यमुच्यते । तत्प्रसाधितं येन भवति ।

संवासो से कप्पइ त्ति—[मूलसूत्रस्थं वाक्यमिदं]—एकत्र निवसनं गच्छमध्ये तस्य कल्पते । नालपणसंभाषणादीनि । अयमत्र भावार्थः—गाथोक्तवन्दनादिक्रियाकरणसंभाषणादिक्रियापरिहारेण च एकत्र संवसनमात्रं मुक्त्वा तपस अनवस्थाप्यलक्षणस्य विधिना प्रतिपत्तिः स्वीकारोऽनवस्थाप्यतपःप्रतिपत्तिः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८—20. तत्प्रतिपत्तौ विधिमाह—**पसत्थदव्वेत्यादिना**—परिहारतवं पडिवज्जंतो दव्वाइ अपसत्थे वज्जित्ता पसत्थेसु दव्वाइसु काउस्सग्गो कीरइ। तत्थ दव्वओ वडमाइखीररुक्खे। खेत्तओ इक्षुशालिक्षेत्रकुसुमितवनखंड-प्रदक्षिणावर्तजलपद्मसरश्चैत्यजिनगृहादिषु। कालओ पुव्वसूरे पसत्थाइदिणेसु य। भावओ चंदताराबलेसु। तत्रापि सन्ध्यागतादिदिनवर्जं आलोचनां प्रयुंक्ते। यत उक्तम्—

'संझागयं रविगयं विड्डेरं सग्गहं विलंबिं च। राहुहयं गहभिन्नं च वज्जए सत्तनक्खत्ते ॥'

अत्र **लोकश्रीटीकाकार**व्याख्या—सूर्ययुक्तादनन्तरनक्षत्रं सग्रहणम्। सूर्यास्तगमनकाले यन्नक्षत्रमुदय-मुपयाति तद्विलम्बितम्। राहुणा मुखेनाक्रान्तं पुच्छेन वा तद्राहुहतम्। **अन्ये** त्वाहुः—यस्मिन् नक्षत्रे ग्रहणमा-सीत्तद्यावद् रविणा न युक्तं तावत्तद्राहुहतमिति। ग्रहभिन्नं यन्मध्ये ग्रहो विभिद्य निर्गच्छति। केचिच्छकटभेदमेव ग्रहभेद इत्युदाहरन्ति। **अन्ये** त्वत्रैवं ब्रुवते—यथा—

'जम्मि रविनक्खत्ते ततो संझागयं तु चउदसमं। विड्डेरं तु विइज्जं होइ चउत्थं विलंबिं च ॥'

अन्यस्त्वाह—'सर्वविरुद्धे दिवसे यद्येको भवत्यमृतयोगस्तु। हिमवद्दिनकरकिरणैः सर्वे दोषाः प्रलीयंते ॥'

कालतः प्रतिपत्तिश्चास्य तपसो जहन्नेण मासो उक्कोसेणं छम्मासा। तंमि परिहारतवं पडिवज्जंतो आयरिओ भणइ—अणवट्ठप्पतवस्स निरुवसग्गनिमित्तं ठामि काउस्सग्गं। 'अन्नत्थूससीएण'मित्यादि कायोत्सर्गदण्डको वाच्यो जाव वोसिरामि। 'लोगस्सुज्जोयरं' अणुपेहित्ता, 'नमो अरहंताणं'ति पारित्ता, 'लोगस्सुज्जोयरं' कड्ढित्ता आयरिओ भणाइ—

'एस तवं पडिवज्जइ न किंचि आलवइ, मा य आलवह। अन्नस्स(ट्ठ)चिंतगस्स उ वाघाओ भे न कायव्वो ॥'

अस्यार्थः—एस अप्पविसुद्धिकारओ परिहारतवं पडिवज्जइ। एस तुब्भे न किं चि आलवइ। तुब्भे वि एयं मा आलवह। एस तुब्भे सुत्तत्थेसु सरीरवद्धमाणीं वा न पुच्छइ। तुब्भे वि एयं मा पुच्छह। एवं च आत्मार्थचिन्त-कस्य ध्यानपरिहारक्रियाव्याघातो न कर्तव्यः। वन्दनं कुरुते भवताम्, न चासौ भवद्भिर्वन्द्यः। खेलकाइयसन्नामत्तगं वा न सो देइ। तस्संतिओ वा न घेप्पइ। उवगरणं परोप्परं न पडिलेहेंति। संघाडगा परोप्परं न भवंति। भत्तपाणं परोप्परं न करेंति। एगमंडलीए न भुंजंति। यच्चान्यत् किंचित्करणीयं तत्तेन सार्धं न कुर्वन्ति। गीयत्था परिहारिया तस्स गच्छंतस्स सव्वत्थ अणुगच्छंति। पारणकदिने अलेवकडं पारेइ। सयमाणीयं निद्दिट्ठअन्नेण वा। **इत्यन-वस्थाप(प्य)विधिरुक्ता ॥**

२८—27. अधुना **पाराञ्चिकमभिधीयते**—तत्र पारं तीरं तपसोऽपराधस्याञ्चति गच्छति। ततो दीक्ष्यते यः स एव पाराञ्चिकस्तस्य यदनुष्ठानं तच्च पाराञ्चिकमिति। दशमं प्रायश्चित्तम्। लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहिःकरणमिति भावः। तत्र पाराञ्चिकेत्यादि—इह सूत्रे प्रतिषेधकपाराञ्चिक एव त्रिविध उक्तः। तदुक्तम्—

'पडिसेवणा पारंची तिविहो सो होइ आणुपुव्वीए। दुट्ठे य १, पमत्ते य २, नायव्वे अन्नमन्ने य ३ ॥'

तत्र दुष्टो दोषवान्—कषायतो विषयतश्च। पुनरेकैको द्विधा—स्वपक्षपरपक्षभेदात्। उक्तं च—

'दुविहो य होइ दुट्ठो—कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य। दुविहो कसायदुट्ठो सपक्खपरपक्ख-चउभंगो ॥'

स्वपक्षकषायदुष्टः परपक्षकषायदुष्टः। १। स्वपक्ष०, न परपक्ष०। २। न स्वपक्षदुष्टः, परपक्षदुष्टः। ३। न स्वप०, न परपक्षदुष्टः। ४। चतुर्थः शून्यः।

कोहं करेंतो कसायदुट्ठो। तत्थ सपक्खे कषायदुट्ठस्स इमे सासवनालाई चत्तारि उदाहरणा।

२८—34. **तत्थ सासवनालेत्ति**—सा[स]वा भजिया। एगेण साहुणा भिक्खागएण सासवनालसेल्लयं सुसंभूतं लद्धं। तत्थ से अईव गिद्धी। तेण तं गुरुणो उवणीयं। तच्च गुरुणा सव्वं भुत्तं। इयरस्स कोवो जाओ, भंडियं च। गुरुणा सो खामिओ तहा नोवसंतो। भणाइ य-भंजामि ते दंता। गुरुणा चिंतियं—मा एस मं असमाहीए मारि-स्सइ त्ति गणे अन्नं आयरियं ठवित्ता अन्नं गणं गंतुं अणसणं पडिवन्नं। पुच्छइ ते साहू कत्थ मे गुरवो। पुच्छति कहिं गओ गुरू। न कहिंति साहवो। सो अन्नओ सोच्चा गओ जत्थ गुरवो। तेहिं कहियं-अज्ज चेव कालगओ परिट्ठ-विओ य। ताहे पुच्छइ-कत्थ से सरीरयं गुरुणो। पुव्वकहिओ भंजंतो भणाइ-सासवनालं खाइसि त्ति। एयं करेंतो दिट्ठो ॥ १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहणंतए य त्ति—एगेण साहुणा लद्धं मुहणंतगं । आणियं तं गुरुणा गहियं । इत्थ वि सव्वं पुव्वखाणगसरिसं । नवरं तं मुहणंतगं पच्चप्पिणंतस्स न गहियं जीवंते गओ राओ । साहुविरहं लभित्ता, गेण्हसि भणंतो, गाढं गले गिण्हइ । संमूढेण गुरुणा वि सो गहिओ । दोवि मया ॥ २ ॥

सिहरिणि त्ति—एगेण साहुणा उक्कोसा मज्झिया सिहरिणी लद्धा । गुरुणो आलोइया निमंतिया । गुरुणा सव्वं आवीया । से साहू पत्थरं उग्गिरित्ता आगओ । अन्नेहिं वारिओ । तहावि अणुवसंतो । गुरुणा सगणे चेव भत्तं पच्चक्खाणं, नो अन्नं गच्छं गओ ॥ ३ ॥

उलुयच्छिओ त्ति—एगो साहू अत्थं गए सूरिए सीवंतो गुरुणा भणिओ-पेच्छसि उलुगच्छी । सो रुट्ठो भणइ-एवं भणंतस्स दोवि अच्छीणि ते उद्धरामि । एत्थ वि गुरुणा खामिओ । नोवसंतो भणइ-ते अच्छीणि उद्धरामि । तओ सो रओहरणाओ अयोमयं किलयं कड्ढिऊण दोवि अच्छीणि उद्धरित्तु ठोवेइ ॥ ४ ॥

एए चउरो वि लिंगपारंची । विसयदुट्ठे वि चउभंगो त्ति—यथा सलिंगी सलिंगसाध्वीं सेवते । १ । सलिंगी गिहिलिंगीस्त्रीं । २ । सलिंगी अन्नलिंगे परिव्राजिकां । ३ । अन्नलिंगी अन्नलिंगे । ४ । शून्योऽयं । परपक्षकषाय-दुष्टस्तु राजवधक-उदायिनृपमारकवत् । सपक्षविषयदुष्टस्तु साध्वीकामुकः । स च—

पावाणं पावयरो दिट्ठिब्भासो वि सो न कप्पइ हु । जो जिणमुद्दं समणिं नमिऊण तमेव धरिसेइ ॥

परपक्षविषयदुष्टस्तु—राजाग्रमहिष्यधिगन्ता, अमात्ययुवराजसेनापत्याद्यग्रमहिषीसेवकश्च । **दुट्ठे पारंचिए त्ति** व्याख्यातम् ।

सम्प्रति **मूढे पारंचिए त्ति** व्याख्यायते [**गाथा** ९६]—स्त्यानर्द्धिनिद्राप्रमादवान् प्रमत्तः मूढोऽपि च एवात्र व्याख्येयः—पञ्चमनिद्रापरो यः अतिसंक्लिष्टपरिणामात् स्त्यानर्द्धिनिद्रोपगतो दिनदृष्टमर्थमुत्थाय प्रसाधयति । **वावारए त्ति**—व्यापारयति । तदुदये च केसवार्धबलसदृशी शक्तिर्भवति प्रथमसंहननिनः । **चूर्णिकृद्**प्यग्रे पारांचिकविधौ **पमत्तपारंचिए** इति पाठं दर्शयिष्यति ।

२९—9. **पोग्गलेत्यादि**—पोग्गलं-मंसं १. मोदगा-लड्डुया २. दन्ता-हत्थिदंता ३. फरुसगो-कुम्भकारो ४. वडसाला-डाली ५. एते थीणद्धीए उदाहरणा ।

तत्थ **पोग्गले** जहा-एगंमि गामे एगो कुटुंबी । पक्काणि य तेलियाणि य तिमण्णेसु य अणेगसो मंसप्पगारा भक्खेइ । सो य तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोऊण पव्वइओ । विहरइ गामाइसु । तेण य एगत्थगामे मंसत्थिएहिं महिसो विगिंचमाणो दिट्ठो । तस्स मंसे अभिलासो जाओ । सो तेण अभिलासेण अव्वोच्छिन्नेण भुत्तो । एवं अव-वच्छिन्नेण वियारभूमिं गओ । चरिमा सुत्तपोरुसी कया । पाउसीयावस्सया कया । तदभिलासी चेव सुत्तो । सुत्तस्सेव थीणद्धी जाया । सो उट्ठिओ गओ महिसमंडलं । अन्नं हंतुं भक्खियं सेसं आगंतुं उवस्सयस्सोवरि ठवियं । पच्चसे गुरूण आलोएइ—एरिसो सुविणो दिट्ठो । साहूहिं दिसावलोयं करिंतेहिं दिट्ठं कुणिमं । जहा एस थीणद्धी । थीणद्धिस्स लिंगपारंचियं पायच्छित्तं । तं से दिन्नं ॥ १ ॥

मोयगे त्ति—एको साहू भिक्खं हिंडंतो मोयगभत्तं पासइ । सुचिरं उविक्खियं न लद्धं । गओ जाव तदज्झवसिओ सुत्तो । उप्पन्ना थीणद्धी । राओ तं गिहं गंतुं भंतूण तं कवाडं मोयगे भक्खयति । सेसे पडिग्गहे गेन्तुमागओ । वियडणं । चरिमाए भायणाणि पडिलेहंतेण दिट्ठा । एयस्स लिंगपारंचियं ॥ २ ॥

दंते त्ति—एगो साहू गोपुरनिग्गओ हत्थिणा पक्खित्तो कहवि पलाओ । रुसिओ चेव पसुत्तो । उदिन्ना थीणद्धी । उट्ठिउं गओ, पुरकवाडे भंतूण गजो वावाइओ । दंतमुसले गहेऊणमुवागओ । उवस्सयबाहिं ठवित्ता पुणरवि पासुत्तो । पभाए उट्ठिओ सुविणं आलोएइ । साहूणं गयदंतदरिसणं नायं । तहेव विसज्जिओ ॥ ३ ॥

फरुसग त्ति—एगंमि महंते गच्छे कुम्भकारो पव्वइओ । तस्स राओ सुत्तस्स थीणद्धी उइन्ना । सो य मट्टीयच्छेयब्भासा समीवत्थाण साहूण शिराणि छिंदिउमारद्धो । ताणि सिराणि कलेवराणि य एगंते पडइ । सेसा ओसरीया । पुणरवि पासुत्तो । सुविणमालोयणं । पभाए साहुसंभारणं नायं । दिन्नं च से लिंगपारंचियं ॥ ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वडसालभंजणं ति—एगो साहू भिक्खायरिउं गओ। तत्थ पहे वडसाला रुक्खो। तस्स साला पहं निम्मेण लंघेउं गओ। सो य साहू उण्हाभिहयभालो भरियभायणो तिसयभुखंतो इरियोवउत्तो वेगेण आगच्छमाणो ताए सालखंधाए सिरेण फिडिओ। रुसिओ जाव पासुत्तो। थीणद्धी उदिन्ना। उट्ठिओ गओ। गंतूण तं सालं गहेऊणमागओ। उवस्सयदुवारे ठविया। वियडणा। नायं थीणद्धी। लिंगपारंची कओ॥ ५॥

केइ आयरिया भणंति—सो पुव्वं वणहत्थी आसी। तओ मणुयभवमागयस्स थीणद्धी जाया। पुव्वब्भासा गंतूण वडसाला भंजणाणयं। सेसं तहेव। इह स्त्यानर्ध्या प्रथमसंहननिनः केसवार्द्धबलसदृशी शक्तिर्भवति। तदन्यत्र सामन्नबला दुगुणं तिगुणं चउगुणं वा भणति।

अन्नमन्नं करेमाणे त्ति—सूत्रपदस्य व्याख्या—अन्योऽन्यं परस्परं मुखपायुप्रयोगतो मैथुनं कुर्वन् पुरुषयुगमिति विशेषः। अभ्य (भण्य ?) ते च—'आसयपोसयसेवी केवि मणूसा दुवेयगा हुंति।'

तेसिं लिंगविवेगो त्ति—तीर्थंकराद्यासातनापरा आसातनापारंची भवति।

चरिमट्ठाणावत्तिसु त्ति [गाथा ९६]—चरिमट्ठाणं पारंचियमेव। तस्यापत्तयस्तदतिचारसेवनानि तेषु प्रसज्यते, स च पाराञ्चिकार्हः।

२९—13. **दव्वभावलिंगे चउभंगो त्ति**—द्रव्यलिङ्गं रजोहरणादि, भावलिंगं महाव्रतादि। दव्वलिंगेण पारंचिओ, भावलिंगेण य १. दव्वलिंगेण पारं०, न भावलिंगेण य २. भावलिंगेण पारं०, न दव्वलिंगेण ३. न दव्वलिंगेण पारं० न भावलिंगेण य ४. इति। चतुर्थः शून्यः। अग्रमहिष्यादिसेवनादौ संप्रकटसेवी।

२९—14. **उभयलिंगेणावि त्ति**—द्रव्यलिंगेन भावलिंगेन च पाराञ्चिको भवति।

२९—15. **जत्थु० गाहा [९९]** दोसो व्रतलोपादिकः॥ क्षेत्राण्येवाह—**वसहीए**त्यादि—वसही-वसतिः निवेसनं एकनिष्क्रमणप्रवेशानि द्व्यादीनि गृहाणि। पाटको ग्रामादेर्व्यवच्छिन्नः सन्निवेशः। साही ग्रामगृहाणामेकपाटी। नियोगो राजकृतपुरदेशः, राज्यादिकः प्रवेशः, इत्येवंप्रकारक्षेत्रे यस्य यो दोषः सम्पन्नस्तस्मात् क्षेत्रात् स पाराञ्चिकः क्रियेत्।

२९—23. **अन्नमन्नं ति**—अन्योन्याधिष्ठानसेवनम्।

२९—28. सूत्रार्थपौरुषी द्वे अपि शिष्येभ्यो दत्त्वा गुरुस्तस्य समीपे गच्छति।

२९—31. आचार्यप्रेषितस्य चागीतार्थस्य जत्थ गओ त्ति गव्यूतद्वयस्थितपाराञ्चिकान्तिके। **अंतरालेव त्ति** तत्सकाशादागच्छतः। **से** त्ति सूरिशिष्यस्य वा भक्तं पानं च उपनयन्ति साधवः।

२९—35. **अणवट्ठप्पो० गाहा [१०२]** परिहारतवो गिम्हसिसिरवासासु जहन्नमज्झिमुक्कोसो-गिम्हे चउत्थछट्ठट्ठमाइं, सिसिरे छट्ठट्ठमदसमाइं, वासासु अट्ठमदसमवारसंताइं; पारणए अलेवकडं। एवं तपःपाराञ्चिकोऽपि। अतो अभिहितं-**अणवट्ठप्पो तवसा तवपारंचिया दोवि वोच्छिन्न त्ति**। लिंगक्षेत्रकालैरनवस्थाप्य-पाराञ्चिकास्तीर्थं यावदनुज्ञाताः।

'उद्देसऽज्झयणसुयखंधंगेसु' इत्यादि [२३] गाथात आरभ्य **'झोसिज्जइ सुबहुं पि हु' इति** इति [७९] पर्यन्तगाथां यावत् सप्तपञ्चाशत्गाथाभिर्ज्ञानातिचार [दर्शनातिचार] चारित्रातिचारवस्तुत्रयगोचरं तवारिहं पायच्छित्तं भणियं। तदूर्ध्वं गाथात्रयेण च्छेदार्हं। तदनु गाथाचतुष्टयेन मूलार्हं। तदनु गाथासप्तकेनाऽनवस्थाप्यार्हं। तदनु गाथानवकेन पारांचिकमुक्तमिति शास्त्रसमुदायार्थः।

३०—1. अथ शास्त्रसमाप्त्यर्थमुपसंहारगाथामाह-**इय एस० गाहा [१०३]** क्रियते अभिधीयतेऽर्थोऽनेनेति करणः शब्दः।

जीयकप्पो त्ति—जीतमाचरितव्यं सर्वकालधरणा वा जीतं, तस्य कल्पः। **कल्पशब्दो वर्णनायामत्र**। यतः पठ्यते—

'सामर्थ्ये वर्णनायां च च्छेदने करणे तथा। औपम्ये चाधिवासे च कल्पशब्दं विदुर्बुधाः॥'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामर्थ्येऽतो वर्धते कल्पशब्दस्तदर्थधातुनिष्पन्नत्वात् । वर्णनायां यथात्र । यद्वा कल्पितो वर्णितः श्लाघितः । छेदने कल्पितं छेदितं वस्त्रम् । करणे ब्राह्मणार्थं कल्पिताः कृताः पूपाः । औपम्ये यथा–समुद्रकल्पमिदं तडागम् । अधिवासे यथा–कल्पिता अधिवासिता स्नानाय सज्जिता प्रतिमा । एतेष्वर्थेषु कल्पशब्दः ।

३०—4. **परिणामगा**—उत्सर्गापवादवेदिनः । **कडजोगिणो**—चउत्थाइ तवे कयजोगा । **संगहसीला**—वस्त्रपात्रशिष्यादिसङ्ग्रहपराः । अपरिश्रान्ताः अखेदवन्त अङ्गोपाङ्गादिश्रुतार्थवेदिनः । बुद्धिवन्तो–मेधाविनः । एवमादीनि–आदिशब्दात्परिणताः श्रुतेन वयसा च । तत्र सोलवरिसारेण वयसाऽव्वत्तो, परेण वत्तो । श्रुतेन च अधीतनिषीथो व्यक्तः, शेषस्तदन्यः । तथा **तरमाणगा**–जे जं तवोकम्मं आढवेंति तं नित्थरंति तदन्ये तरमाणा इत्यादि ग्राह्यम् ।

३०—20. **पावणं ति**—पवित्रम् । निश्चितसूत्रार्थदायकश्चासौ अमलचरणश्च, तम् ।

॥ इति जीतकल्पचूर्णिविषया [विषमपद–] व्याख्या समाप्ता ॥

जीतकल्पबृहच्चूर्णौ व्याख्या शास्त्रानुसारतः ।
श्रीचन्द्रसूरिभिर्दृब्धा स्वपरोपकृतिहेतवे ॥ १ ॥
मुनि-नयन-तरणि (१२२७) वर्षे श्रीवीरजिनस्य जन्मकल्याणे ।
प्रकृतग्रन्थकृतिरियं निष्पत्तिमवाप रविवारे ॥ २ ॥
संघचैत्यगुरूणां च सर्वार्थप्रविधायिनः ।
वशा (विशो ?) ऽभयकुमारस्य वसतौ दृब्धा सुबोधकृत् ॥ ३ ॥
एकादशशतविंशत्यधिकश्लोकप्रमाण (११२०) ग्रंथाग्रं ।
ग्रंथकृतिः प्रविवाच्या मुनिपुंगवसूरिभिः सततम् ॥ ४ ॥
यदिहोत्सूत्रं किञ्चिद् दृब्धं छद्मस्थबुद्धिभावनया ।
तन्मयि कृपानुकलितैः शोध्यं गीतार्थविद्वद्भिः ॥ ५ ॥

॥ समाप्ता चेयं श्रीशीलभद्रप्रभुश्रीधनेश्वरसूरिपादपद्मचंचरीक श्री श्री चंद्रसूरिसंरचिता जीतबृहच्चूर्णि-दुर्गपदविषया निशीथादिशास्त्रानुसारतः संप्रदायाच्च सुगमा व्याख्येति ॥

यावल्लवणोदन्वान् यावन्नक्षत्रमंडितो मेरुः ।
खे यावच्चन्द्रार्कौ तावदियं वाच्यतां भव्यैः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्टम् ।

ष्ठ ५२ उपरि सूचितं (२४–14) जीतकल्पयन्त्रम् ।

निरपेक्ष	आचा० कृत	आचा० अकृत	उपा० कृत	उपा० अकृत	गी० स्थि० कृत	गी० स्थि० अकृत	गी० अस्थि० कृत	गी० अस्थि० अकृत	अगी० स्थि० कृत	अगी० स्थि० अकृत	अगी० अस्थि० कृत	अगी० अस्थि० अकृत
०	पारांचिकं	अनवस्था०	अनवस्था०	मूलं	मूलं	छेदः	छेदः	६।	६।	६	६	४।
०	अनवस्था०	मूलं	मूलं	छेदः	छेदः	६।	६।	६	६	४।	४।	४
मूलं	मूलं	छेदः	छेदः	६।	६।	६	६	४।	४।	४	४	०
छेदः	छेदः	६।	६।	६	६	४।	४।	४	४	०	०	०
६।	६।	६	६	४।	४।	४	४	०	०	०	०	२५
६	६	४।	४।	४	४	०	०	०	०	२५	२५	२०
४।	४।	४	४	०	०	०	०	२५	२५	२०	२०	१५
४	४	०	०	०	०	२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०
०	०	०	०	२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०	१०	५
०	०	२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०	१०	५		
२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०	१०	५				
२०	२०	१५	१५	१०	१०	५						
१५	१५	१०	१०	५								
१०	१०	५										
५												

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org